पीली छतरी वाली लड़की

उदयप्रकाश

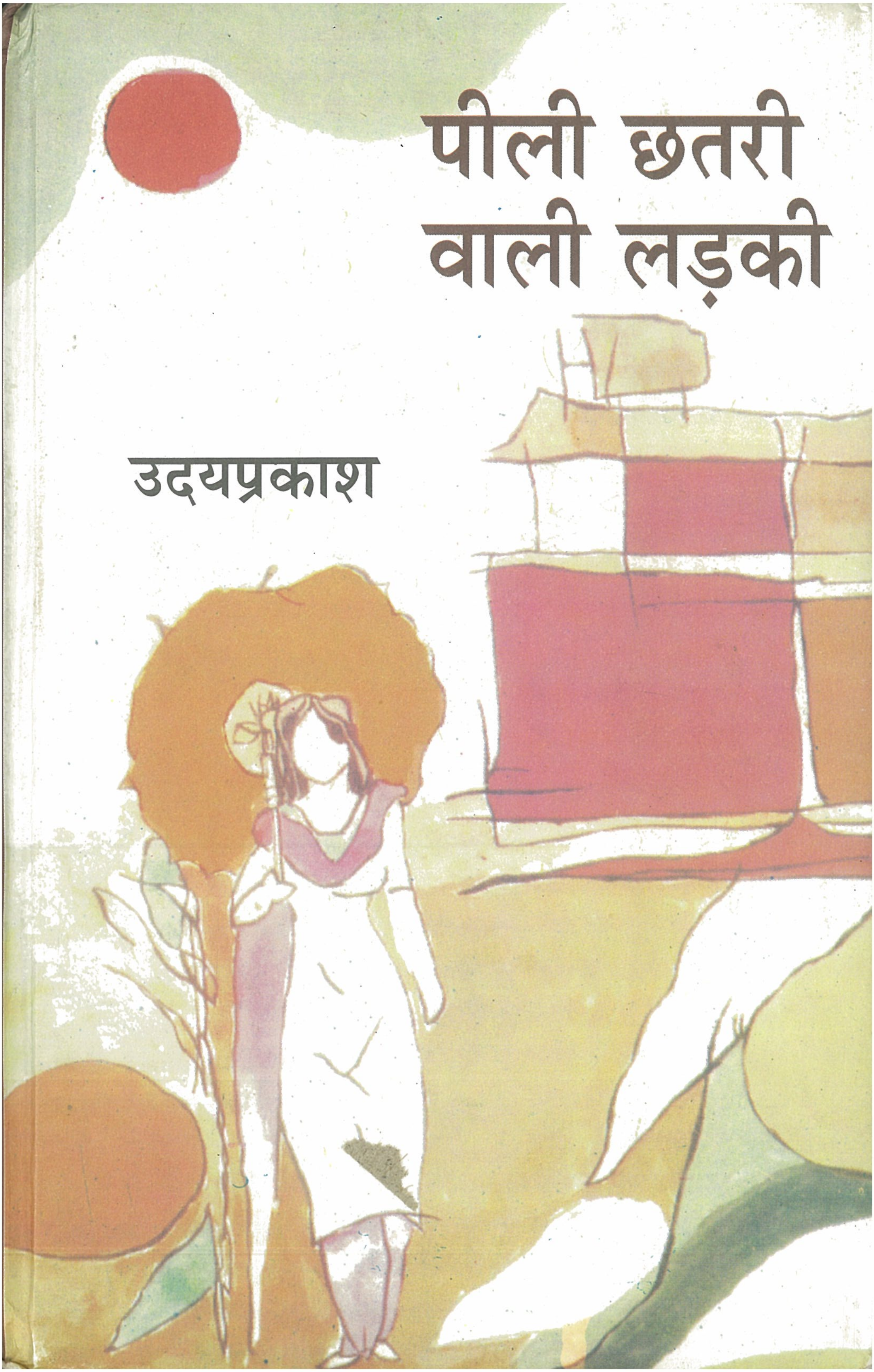

पीली छतरी वाली लड़की

उदय प्रकाश

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन का 'लोगो'
विख्यात चित्रकार मक़बूल फ़िदा हुसेन की
कूची से

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक को पूरी तरह अथवा आंशिक तौर पर या पुस्तक के किसी भी अंश को फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा ज्ञान के किसी भी माध्यम से संग्रह व पुनर्प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित ना किया जाये।

ISBN : 81-7055-754-2

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

फोन : 0091#11#23273167, 23275710
फैक्स : 0091#11#23275710
ई-मेल : vaniprakashan@gmail.com
vani_prakashan@yahoo.com
वेबसाइट : www.vaniprakashan.com
द्वितीय संस्करण : 2005
आवृत्ति संस्करण : 2009

मूल्य : 250.00

© लेखकाधीन

जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-110032
द्वारा मुद्रित

PEELI CHATARI WALI LADKI
by : Uday Prakash

निर्मल वर्मा की
एकांत, नैतिक और अपूर्व-
सृजनात्मक उपस्थिति को

और

अपने मित्र तथा प्रकाशक अरुण माहेश्वरी को जिनके कारण
इस कथा को पूरा करने का साधन और अवकाश मिला।

यह माधुरी दीक्षित की वही नंगी पीठ थी, जिस पर सलमान खान ने गुलेल से निशाना ताक कर बंटी मारी थी. लचकती हुई कमर और पीठ उस चोट से अचानक रुक गयी थी और माधुरी दीक्षित ने गर्दन मोड़कर पीछे देखा था. उसकी नज़र में कोई पीड़ा नहीं थी. एक नशीली, अपनी पीठ की ओर आमंत्रित करती, उत्सुकता थी. वह आंख माधुरी दीक्षित की नहीं, किसी चौंकी हुई हिरणी की आंख थी. एक ऐसी मूर्ख, मस्त और सनकी हिरणी जो अपने शिकारी के सामने प्यार से खुद अपने आपको परोसा करती है.

राहुल ने 'स्टारडस्ट' के सेंटर स्प्रेड में छपे उस चित्र को फेविकोल से अपने कमरे की खिड़की की कांच पर चिपका दिया था. दरअसल उधर से धूप आती थी और दोपहर, दूसरी मंजिल के उस कमरा नंबर 252 में गर्मी के मारे रहना मुश्किल हो जाता था. अब माधुरी दीक्षित ने दोपहर की उस तेज जलती हुई धूप को हॉस्टल के उस कमरे में आने से रोक दिया था और अपनी खुली, गुलेल की बंटी से चोट खाई पीठ उधर कर दी थी. वह लगातार अपनी मूर्ख, मस्त, सनकी आंखों से राहुल की ओर गर्दन मोड़कर देख रही थी, जैसे गुलेल से उसकी खूबसूरत लचकती हुई खुली कटावदार पीठ को निशाना राहुल ने बनाया हो.

यह राहुल के अलावा और कोई नहीं जानता था कि उसने एक दिन कमरा नंबर 252 के भीतर किसी एक गोपनीय, बेहद निजी क्षण में, किस तरह सलमान खान को चुपचाप बाहर निकाल फेंका था और उसकी जगह खुद आ गया था. यह सोचते ही उसका शरीर एक अजीब-सी उत्तेजना और सिहरन से भर उठता कि माधुरी दीक्षित की उस खूबसूरत मांसल पीठ को चोट पहुंचाने वाला वह खुद है. उसी की गुलेल ने सटाक से बंटी मारी और तड़ से बंटी लगते ही माधुरी दीक्षित ने एक 'उई..ऽऽ' की आवाज़ निकाली और 'स्टारडस्ट' के उस चित्र में 'फ्रीज़' हो गयी.

लड़की चोट खाना बहुत पसंद करती है. वह बिल्ली या गिलहरी नहीं है, जिसकी पीठ पर प्यार से, धीरे-धीरे अपनी उंगलियां या हथेलियां फिराओ, उसे संभाल-संभाल कर सहलाओ तो वह गुर्र-गुर्र करती लोटम लोट होगी. लड़की तो वो चीज है, जिसको जितना मारो, जितना कूटो, उसे उतना मज़ा मिलता है.

लड़की तो असल में ताकत और हिंसा को प्यार करती है.

राहुल ने इसीलिए युनिवर्सिटी के जिम में जाना शुरू किया था, जिससे वह सलमान खान की तरह अपनी भुजाओं में मछलियां बना सके. चीते जैसी कमर और तेंदुए जैसा धड़. वह एक चिकने, हिंसक, खूबसूरत, फुर्तीले बनैले जानवर में खुद को ढाल लेना चाहता था. इसके बाद और क्या चाहिए ? एक रेनबेन का काला चश्मा, रेंगलर या लेविस की एक जींस पैंट और एक टी शर्ट, नाईके के सॉक्स और वुडलैंड का बढ़िया जूता.

वह कई बार सोचता, लारा दत्ता, मनप्रीत ब्रार या गुलपनाग को देखकर वह उस तरह क्यों महसूस नहीं करता, जैसा माधुरी दीक्षित को देखकर करता है. जब कि माधुरी दीक्षित उससे उम्र में बहुत बड़ी थी. हाल की एक फिल्म में विश्व सुंदरी ऐश्वर्या राय अपनी पीठ को हू-ब-हू माधुरी दीक्षित की तरह खोलकर बार-बार लचका रही थी और गर्दन मोड़-मोड़ कर अपनी कंजी-भूरी आंखों से राहुल की ओर देख रही थी. लेकिन शिट्. बेकार. वो बात कहां जो माधुरी में है. माधुरी की पीठ और दूसरी पीठों में ज़मीन आसमान का फर्क़ है. एक ऐसी कोई चीज़ माधुरी दीक्षित की पीठ में है, उसकी त्वचा में या उसकी बनावट में, या उसके रंग में...जो ऐश्वर्या या दूसरों की पीठ में नहीं है.

राहुल तुलनात्मक अध्ययन करता. उसे लगता कि गुलपनाग, सुस्मिता या लारा आदि का शरीर काफ़ी कुछ कृत्रिमता से बनाया गया है. मॉडलिंग की खास नाप-जोख

के लिए इंची टेप से नाप-नापकर, डायटिंग और एक्सरसाइज से तैयार किया गया कृत्रिम शरीर. फिर ऊपर से वैक्सिंग, फेशियल, साओना और क्या-क्या. राहुल को वे गैर-मानवीय सिंथेटिक गुड़ियां लगतीं. उनके सिर के बाल और शरीर के रोयें भी सिंथेटिक लगते. यहां तक कि उनकी बगलों में शेविंग के बाद का जो हल्का नीला-हरा रंग होता, वह भी उसे कलरिंग लगता. ज़्यादा नहीं, बस पंद्रह दिन इनको ठीक-ठाक आदमी के तरीके से खाने-पीने दो, आम लड़कियों की तरह रहने दो तो ये फसक कर बोरा हो जाएंगी. पहचानना मुश्किल होगा. जबकि माधुरी दीक्षित की बात ही दूसरी है. चाल में या इस हॉस्टल के कमरे में भी रहने लगेगी, मेस की दाल रोटी सब्जी भी खाएगी, तब भी जस-की-तस ही रहेगी. ऐसी ही कमाल. ऐसी ही मस्त.

माधुरी की पीठ नेचुरल है. प्राकृतिक. यह अजब तरह से एक स्वदेशी पीठ है. बाकी पीठें सिंथेटिक हैं और विदेशी. इसीलिए उनमें कोई जादू नहीं. राहुल ने निष्कर्ष निकाला. लेकिन उसका दूसरा वह निष्कर्ष ज़्यादा गंभीर था जिसके अनुसार लड़कियां दरअसल चोट, पीड़ा-हिंसा और ताकत को प्यार करती हैं. वे मूर्ख बनाया जाना, उत्पीड़ित होना और निर्ममता के साथ अपने भोग लिये जाने को ज़्यादा पसंद करती हैं. ज़माना बदल गया है. वे छठे-सातवें दशक के शम्मी कपूर, ऋषि कपूर, विश्वजित या जितेंद्र टाइप के मर्द को नहीं, सलमान खान, सन्नी देओल या अजय देवगन जैसे माचो या सैडिस्ट मर्द के पीछे पागल होती हैं. कितना ख़तरनाक और हिंसक था 'डर' में शाहरुख खान ? फोन कर कर के, पीछा कर के और रेप की कोशिश कर के उसने जुही चावला को लस्त-पस्त, लहू-लुहान कर डाला था. डर के मारे उसकी घिग्घी बंध गयी थी. लेकिन उसी अर्द्ध विक्षिप्त-शीज़ोफ्रेनिक शाहरुख खान के पीछे सारी युनिवर्सिटी की लड़कियां दीवानी थीं.

कुड़ियों को शाहरुख चाहिए, कोई छक्का, कृष्णा-कन्हैया टाइप का हज़बैंड छाप गऊ नहीं. राहुल इस रहस्य को समझ चुका था. इसी के बाद से उसके कमरा नंबर 252 की दीवार की खिड़की में माधुरी दीक्षित रहने लगी थी. पिछले चार महीनों से.

राहुल के कैरियर का नक्शा थोड़ा-सा असामान्य था. उसने आर्गेनिक केमिस्ट्री में एम. एस-सी. किया था. इसके बाद अचानक उसमें एंथ्रोपोलॉजी में एम.ए. करने का भूत जागा. इसका ठीक-ठीक कारण पता लगाना ज़रा मुश्किल है लेकिन संभव है, इसके पीछे राहुल के एक फुफेरे भाई की प्रेरणा रही हो, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर के नृतत्वशास्त्री और फिलहाल एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के डायरेक्टर जनरल थे. वे कई बार राहुल के घर, उसके गांव आते. कभी-कभी तो कई हफ़्ते वे वहीं रुक जाते. पिता जी उनके सबसे प्रिय मामा थे. दोनों की खूब पटरी बैठती थी. राहुल की ड्यूटी उनकी देखभाल की होती.

राहुल ने सुना था कि उनकी आदिवासियों पर एक ऐसी किताब पेंगुइन से आई है, जिसने दुनिया में तहलका मचा रखा है. इस किताब के आने के पहले तक सब लोग यही जानते थे कि अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई सिर्फ़ ब्राह्मणों, ठाकुरों, बनियों या हिंदू-मुसलमानों ने ही लड़ी है. अब तक के इतिहासकारों ने जिन नायकों का निर्माण किया था, वे सब इन्हीं पृष्ठभूमियों के थे. उनमें आदिवासी और दलित लगभग नहीं थे. लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब, कुंवर सिंह, फड़नवीस, अजीमुल्ला, मंगल पांडे, राजा, ज़मींदार, नवाब वगैरह. बाद में बीसवीं सदी में भी ऐसे ही नायक बने, नेहरू, गांधी, तिलक, जिन्ना, सुहरावर्दी, पटेल आदि. इनमें से अधिकांश ऊंची जाति और अमीर वर्ग के लोग थे. ले देकर कभी-कभार डॉक्टर अंबेडकर का नाम आता था, जो दलित थे और प्रकांड प्रतिभा के कारण उन्हें आज़ाद भारत का संविधान बनाने का काम सौंपा गया था, लेकिन उनके बारे में भी यह प्रचार कर दिया गया था कि वे अंग्रेजों के एजेंट थे और हिंदू धर्म को खत्म कर के बौद्ध धर्म को भारत में स्थापित करना चाहते थे. यानी नायक से ज़्यादा खलनायक थे.

किन्नू दा की किताब ने इसीलिए तहलका मचाया कि उसमें पहली बार, बहुत प्रामाणिक दस्तावेज़ों और तथ्यों के साथ, सिंहभूमि और झारखंड समेत छोटा नागपुर बेल्ट के उन आदिवासी नायकों के संघर्ष की कथा कही गयी थी, जिनका महान त्रासदी भरा नायकत्व अब तक सिर्फ़ बिहार, उड़ीसा और बंगाल के पिछड़े आदिवासी इलाकों में प्रचलित 'फोकलोर' में ही मौजूद था.

किन्नू दा जब बोलने लगते तो राहुल को ऑर्गेनिक केमिस्ट्री बकवास लगने लगती.

क्या करूंगा इसको पढ़कर ? किसी ब्रुएरीज़ या किसी फूड प्रोसेसिंग मल्टी नेशनल इंडस्ट्री में केमिस्ट बन जाऊंगा. या किसी युनिवर्सिटी-कालेज में लेक्चरर. वह अपने भविष्य के बारे में सोचता और उसे कोई मोटा, पिदपिदा-सा आदमी, सुअर की तरह फचफच करके पिज़ा खाते, दही या विनेगर में गार्निश्ड मछली को कचर-पचर चबाते दिखाई देने लगता जो साथ-साथ में शराब भी पीता और धुत्त हो कर किसी किराये में लाई गयी टीन एज लड़की के साथ अपनी मटके जैसी तोंद और विशाल कद्दुओं जैसे ढीले-ढाले नितंबों को मटका-मटका कर नाचने लगता.

यही वह आदमी है—खाऊ, तुंदियल, कामुक, लुच्चा, जालसाज़ और रईस, जिसकी सेवा की खातिर इस व्यवस्था और सरकार का निर्माण किया गया है. इसी आदमी के सुख और भोग के लिए इतना बड़ा बाज़ार है और इतनी सारी पुलिस और फौज है. अगर मैंने आर्गेनिक केमिस्ट्री के बलबूते कोई नौकरी की तो इसी आदमी के खाने-पीने की चीज़ों को लगातार स्वादिष्ट, पौष्टिक और लजीज़ बनाने का काम मुझे अपने जीवन भर करना पड़ेगा. वह जीवन, जो मुझ अकिंचन को इस ब्रह्मांड के करुणा सागर सृष्टिकर्त्ता ने महान कृपा करके सिर्फ़ एक बार के लिए दिया है.

शिट्! साला हांफ रहा है, एक पैर कब्र में लटका है, मोटापे के कारण ठीक से चल नहीं पाता, लेकिन खाये जा रहा है. उसे खाने के लिए अनंत भोज्य पदार्थ चाहिए. उसकी जीभ को अनंत स्वाद चाहिए. सारी दुनिया के वैज्ञानिक उसकी जीभ को संतुष्ट करने की खातिर तमाम प्रयोगशालाओं में शोध कर रहे हैं. उसके लोंदे जैसे घृणित थुलथुल शरीर की समस्त इंद्रियों को अनंत-अपार आनंद और बेइंतहा मज़ा और 'किक' चाहिए. उसकी हिप्पोपोटेमस जैसे थूथन को तरह-तरह की खुशबू चाहिए. सारी परफ्यूम इंडस्ट्री इसी की नाक की बदबू मिटाने के लिए है. एक कार्बनिक रसायन वैज्ञानिक के नाते मेरा काम होगा, इस भोगी लोंदे की एषणाओं और इसकी इंद्रियों की निरंतर बढ़ती हवस को अपनी प्रतिभा, ज्ञान और सृजन के द्वारा संतुष्ट करना.

यही वह आदमी है, जिसके लिए संसार भर की औरतों के कपड़े उतारे जा रहे हैं. तमाम शहरों के पार्लर्स में स्त्रियों को लिटाकर उनकी त्वचा से मोम के द्वारा या एलेक्ट्रोलिसिस के ज़रिये रोयें उखाड़े जा रहे हैं, जैसे पिछले समय में गड़रिये भेड़ों की खाल से ऊन उतारा करते थे. राहुल को साफ दिखाई देता कि तमाम शहरों और कस्बों के मध्य-निम्न मध्यवर्गीय घरों से निकल-निकल कर लड़कियां उन शहरों में कुकुरमुत्तों की तरह जगह-जगह उगी ब्यूटी-पार्लर्स में मेमनों की तरह झुंड बनाकर घुसतीं और फिर चिकनी-चुपड़ी होकर उस आदमी की तोंद पर अपनी टांगें छितरा कर बैठ जातीं. इन लड़कियों को टीवी 'बोल्ड एंड ब्यूटीफुल' कहता और वह लुजलुजा-सा तुंदियल बूढ़ा खुद 'रिच एंड फेमस' था.

वह आदमी बहुत ताकतवर था. उसको सारे संसार की महान शैतानी प्रतिभाओं ने बहुत परिश्रम, हिकमत पूंजी और तकनीक के साथ गढ़ा था. उसको बनाने में नयी टेक्नालॉजी

की भूमिका अहम थी. वह आदमी कितना शक्तिशाली था, इसका अंदाज़ा एक इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि उसने पिछली कई शताब्दियों के इतिहास में रचे-बनाये गये कई दर्शनों, सिद्धांतों और विचारों को एक झटके में कचड़ा बनाकर अपने आलीशान बंगले के पिछवाड़े के कूड़ेदान में डाल दिया था. ये वे सिद्धांत थे, जो आदमी की हवस को एक हद के बाद नियंत्रित करने, उस पर अंकुश लगाने या उसे मर्यादित करने का काम करते थे.

इससे ज़्यादा मत खाओ, इससे ज़्यादा मत कमाओ, इससे ज़्यादा हिंसा मत करो, इससे ज़्यादा संभोग मत करो, इससे ज़्यादा मत सोओ, इससे ज़्यादा मत नाचो... वे सारे सिद्धांत, जो धर्म ग्रंथों में भी थे, समाजशास्त्र या विज्ञान अथवा राजनीतिक पुस्तकों में भी, उन्हें कूड़ेदान में डाल दिया गया था. इस आदमी ने बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में पूंजी, सत्ता और तकनीक की समूची ताकत को अपनी मुट्ठियों में भर कर कहा थाः स्वतंत्रता ! चीखते हुए आज़ादी ! अपनी सारी एषणाओं को जाग जाने दो. अपनी सारी इंद्रियों को इस पृथ्वी पर खुल्ला चरने और विचरने दो. इस धरती पर जो कुछ भी है, तुम्हारे द्वारा भोगे जाने के लिए है. न कोई राष्ट्र है, न कोई देश. समूचा भूमंडल तुम्हारा है. न कुछ नैतिक है. न कुछ अनैतिक. न कुछ पाप है, न पुण्य. खाओ, पियो और मौज़ करो. नाचो...ऽऽ. वूगी...वूगी. गाओ..ऽऽ वूगी... वूगी. खाओ...! खूब खाओ. कमाओ, खूब कमाओ. वूगी...वूगी. इस जगत के समस्त पदार्थ तुम्हारे उपभोग के लिए है. वूगी...वूगी...! और याद रखो स्त्री भी एक पदार्थ है. वूगी...वूगी !

उस ताकतवर भोगी लोंदे ने एक नया सिद्धांत दिया था जिसे भारत के वित्तमंत्री ने मान लिया था और खुद उसकी पर्स में जाकर घुस गया था. वह सिद्धांत यह था कि उस आदमी को खाने से मत रोको. खाते-खाते जैसे-जैसे उसका पेट भरने लगेगा, वह जूठन अपनी प्लेट के बाहर गिराने लगेगा. उसे करोड़ों भूखे लोग खा सकते है. कांटीनेंटल, पौष्टिक जूठन. उस आदमी को संभोग करने से मत रोको. वियाग्रा खा-खा कर वह संभोग करते-करते लड़कियों को अपने बेड से नीचे गिराने लगेगा, तब करोड़ों वंचित देशी छड़े उन लड़कियों को प्यार कर सकते है, उनसे अपना घर-परिवार बसा सकते है.

यही वह सिद्धांत था, जिसे उस आदमी ने दुनिया भर के सूचना संजाल के द्वारा चारों ओर फैला दिया था और देखते-देखते मानव सभ्यता बदल गयी थी. सारे टीवी चैनलों, सारे कंप्यूटरों में यह सिद्धांत बज रहा था, प्रसारित हो रहा था.

बीसवीं सदी के अंत और इक्कीसवीं सदी की दहलीज़ की ये वे तारीखें थीं जब प्रेमचंद, तॉल्सतॉय, गांधी या टैगोर का नाम तक लोग भूलने लगे थे. किताबों की दूकानों में सबसे ज़्यादा बिक रही थी बिल गेट्स की किताब 'दि रोड अहेड'.

वह तुंदियल अमीर खाऊ आदमी, गरीब तीसरी दुनिया की नंगी विश्व सुंदरियों के साथ एक आइसलैंड के किसी महंगे रिसॉर्ट में लेटा हुआ मसाज़ करा रहा था. अचानक उसे कुछ याद आया और उसने सेल फोन उठाकर एक नंबर मिलाया.

विश्व सुंदरी ने उसे वियाग्रा की गोली दी, जिसे निगल कर उसने उसके स्तन दबाये. 'हेलो! आयम निखलाणी, स्पीकिंग ऑन बिहाफ ऑफ द आइ. एम. एफ. गेट मी टु दि प्राइम मिनिस्टर!'

'येस...येस! निखलाणी जी! कहिये, कैसे हैं? मैं प्रधानमंत्री बोल रहा हूं.'

'ठीक से सहलाओ! पकड़कर! ओ.के.!' उस आदमी ने मिस वर्ल्ड को प्यार से डांटा फिर सेल फोन पर कहा—'इत्ती देर क्यों कर दी...साईं! जल्दी करो! पॉवर, आई टी, फूड, हेल्थ, एजुकेशन...सब! सबको प्रायवेटाइज करो साईं!... ज़रा क्विक! और पब्लिक सेक्टर का शेयर बेचो...डिसएन्वेस्ट करो...! हमको सब खरीदना है साईं...!'

'बस-बस! ज़रा-सा सब्र करें भाई... बंदा लगा है ड्यूटी पर. मेरा प्रॉब्लम तो आपको पता है. खिचड़ी सरकार है. सारी दालें एक साथ नहीं गलतीं निखलाणी जी.'

'मुंह में ले लो. लोल...माई लोलिट्.' रिच एंड फेमस तुंदियल ने विश्व सुंदरी के सिर को सहलाया फिर 'पुच्च...पुच्च' की आवाज़ निकाली. 'आयम, डिसअपांयंटेड पंडिज्जी! पार्टी फंड में कितना पंप किया था मैंने. हवाला भी, डायरेक्ट भी... केंचुए की तरह चलते हो तुम लोग. एकॉनॅमी कैसे सुधरेगी? अभी तक सब्सिडी भी खत्म नहीं की!'

'हो जायेगी...निखलाणी जी! वो आयल इंपोर्ट करने वाला काम पहले कर दिया था, इसलिए सोयाबीन, सूरजमुखी और तिलहन की खेती करने वाले किसान पहले ही बरबाद थे. उसके फौरन बाद सब्सिडी भी हटा देते तो बवाल हो जाता...आपके हुकुम पर अमल हो रहा है भाई...सोच-समझ कर कदम उठा रहे हैं.'

'जल्दी करो पंडित! मेरे को बी.पी है. ज़्यादा एंक्ज़ायटी मेरे हेल्थ के लिए ठीक नहीं. मरने दो साले किसानों बैंचो...को...ओ.के...'

उस आदमी ने सेल्युलर ऑफ किया, एक लंबी घूंट स्कॉच की भरी और बेचैन हो कर बोला, 'वो वेनेजुएला वाली रनर अप कहां है. उसे बुलाओ.'

कि नू दा ने राहुल से कहा, 'आदिवासियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी ज़रूरतें सबसे कम हैं. वे प्रकृति और पर्यावरण का कम से कम नुकसान करते हैं. सिंहभूम, झारखंड, मयूरभंज, बस्तर और उत्तरपूर्व में ऐसे आदिवासी समुदाय हैं जो अभी तक छिटवा या झूम खेती करते हैं और सिर्फ़ कच्ची, भुनी या उबली चीजें खाते हैं. तेल में फ्राइ करना तक वे पसंद नहीं करते. वे प्राकृतिक मनुष्य हैं. अपनी स्वायत्तता और संप्रभुता के लिए उन्होंने भी ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ़ महान् संघर्ष किया था. लेकिन इतिहासकारों ने उस हिस्से को भारतीय इतिहास में शामिल नहीं किया. इतिहास असल में सत्ता का एक राजनीतिक दस्तावेज़ होता है... जो वर्ग, जाति या नस्ल सत्ता में होती है, वह अपने हितों के अनुरूप इतिहास को निर्मित करती है. इस देश और समाज का इतिहास अभी लिखा जाना बाकी है.'

राहुल डर गया. उसने कुछ दिन पहले ही 'स्टिगमाटा' नाम की फिल्म देखी थी. 'दि मेसेंजर विल बी सायलेंस्ड'. ईश्वर के दूत को खामोश कर दिया जाएगा. सच कोई सूचना नहीं है. सूचना उद्योग के लिए सच एक डायनामाइट है. इसलिए सच को कुचल दिया जाएगा. द ट्रुथ हैज टु बी डिफ्यूज्ड.

टप्. एक पत्ता और गिरेगा.

टप्. एक पवित्र फल असमय अपने अमृत के साथ चुपचाप किसी निर्जन में टपक जाएगा.

टप्. एक हत्या या आत्महत्या और होगी, जो अगले दिन किसी अखबार के तीसरे पृष्ठ पर एक-डेढ़ इंच की ख़बर बनेगी.

टप्! टप्! टप्! समय बीत रहा है. पृथ्वी अपनी धुरी पर घूम रही है.

किन्नू दा को बार-बार आदिवासी इलाके में ट्रांसफर कर दिया जाता. वे सनकी हैं, पगलैट हैं—नौकरशाही में यह चर्चा आम थी. इतने साल आई.ए.एस अधिकारी रहने के बाद भी उनके पास अपने पी.एफ. के अलावा कोई पैसा नहीं. वे दिल्ली में एक फ्लैट खरीदने के लिए परेशान हैं.

राहुल को आर्गेनिक केमिस्ट्री से अरुचि हो गयी. उस विषय में उसे विनेगर की, फर्मेंटेशन की, तेज गंध आती. मोटे भोगी आदमी की डकार और अपान वायु से भरे हुए

चेंबर का नाम है आर्गेनिक केमिस्ट्री.

मैं एंथ्रोपोलॉजी में एम.ए. करूंगा, फिर पी-एच.डी. और इस मानव समस्या के उत्स तक पहुंचने की कोशिश करूंगा. इतिहास को शैतान ने किस तरह अपने हित में सबोटाज़ किया है, इसके उद्‌गम तक पहुंचने की मुझमें शक्ति और निष्ठा दे, हे परमपिता!

लेकिन माधुरी दीक्षित?

और उसकी पीठ?

और उसकी चौंकी हुई हिरणी जैसी आंखें?

राहुल ने गुलेल में कागज़ की एक गोली बनाकर रबर कान तक खींचा और सट्‌क! कागज़ की गोली माधुरी दीक्षित की पीठ पर जाकर लगी.

'उई...ऽ' एक मीठी-सी, संगीत में डूबी, उत्तेजक पीड़ा भरी आवाज़ पैदा हुई और गर्दन मोड़ कर उस हिरणी ने अपने शिकारी को प्यार से देखा.

'थैंक यू राहुल! फॉर द इंजरी!...आय लव यू.'

ए डमीशन के बाद का यह दूसरा महीना था. दूर-दूर तक बिखरी पहाड़ियों में कई सौ एकड़ के क्षेत्र तक फैला यह विश्व विद्यालय भारत का कैंब्रिज कहा जाता था. जापान, इंडोनेशिया, फिजी, मॉरिशस से लेकर कई अफ्रीकी देशों के छात्र यहां आकर पढ़ते थे. यहां के भूगर्भ विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. वाट्सन अंतरराष्ट्रीय स्तर के स्कॉलर थे. उन्होंने अमेरिका, फ्रांस और जर्मनी से मिलने वाले तमाम एकेडेमिक ऑफर्स को ठुकराकर इसलिए भारत में रहने का निर्णय लिया था क्योंकि जियोलॉजी के अध्ययन और शोध के लिहाज से जितनी विविधता इस देश में थी, वह विलक्षण थी.

'यह देश एक अद्‌भुत जीता-जागता संग्रहालय है. अनेक सभ्यताएं, अनेक इतिहास, असंख्य नस्लें, प्रजातियां... मानव सभ्यता के कई लाख साल का अतीत यहां ज़िंदा, सक्रिय, धड़कता हुआ देखा जा सकता है. और ठीक यही बात यहां की धरती पर भी लागू होती है.'

डॉ. वाट्सन कहते. फिर झुककर एक पत्थर उठाकर उसे देखते हुए गंभीर हो जाते—'इसे देख रहे हो. ये युनिवर्सिटी जिस पहाड़ी पर बसी हुई है, ये पत्थर इसके लावा स्टेज को प्रगट करता है. देखो, गौर से देखो. ये फॉसिल है. कई हज़ार, शायद एक लाख साल पुराना. और यह किसी सबमेराइन जीव का फॉसिल है. यहां, ठीक इसी जगह, जहां हम खड़े हैं...पहले समुद्र था.'

ईर्द गिर्द खड़े लोगों की आंखें आश्चर्य से फैल जातीं. समुद्र? यहां? मध्यप्रदेश में?

राहुल का मन लग गया. उसे टैगोर हॉस्टल की दूसरी मंजिल में कमरा नंबर 252 एलॉट हुआ. उसका रूम मेट था. ओ.पी. ओंकार प्रसाद. छह फुट तीन इंच लंबा, बांस की लाठ जैसा सीधा तना हुआ, दुबला-पतला. बगुले जैसी लंबी गर्दन, जो उसके चलने पर हर कदम लचकती. बहुत हँसोड़, बहुत बातूनी. ओ.पी. कहता, 'मैं किसी ठिगनी, साढ़े चार फुट की हाइट वाली कन्या से शादी करूंगा. स्टैंडिंग पोजीशन में प्यार करते हुए इन पहाड़ियों का नज़ारा ही अलग होगा.'

राहुल ने कल्पना की: वह पहाड़ी की तलहटी पर, जहां शहर है, खड़ा है और नीचे से ऊपर की ओर देख रहा है. रात है पूर्णिमा की. चांद पूरा का पूरा किसी जलती

हुई सोने की थाली की तरह आकाश में टंगा है और उधर...सबसे ऊंची पहाड़ी की चोटी पर एक खूब लंबा दीर्घकाय पुरुष दिगंबर खड़ा है...!

और उसकी कमर के साथ लिपटी हुई है एक छोटी सी बावन नारी आकृति... हवाओं में जैसे डमरू बज रहा है.

थप्प...थप्प... थप्प...

आकृतियां हिल रही हैं. कौन हैं वे आकृतियां? ओ.पी. और उसकी मन चाही कन्या या... या नग कन्या...पर्वत की बेटी ...पार्वती और नटराज शिव!

और यह सृष्टि का आदि मैथुन है...थप्प...थप्प...थप्प.

नमामि शमीशां निर्वाण रूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं

अजुं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाश वासं भजेहं.

निरंकार मोंकार मूलं तुरीयं...

पिताजी हर रोज सुबह साढ़े चार बजे उठकर नहाते थे और फिर शिव की पूजा करते थे. कभी-कभार राहुल की नींद टूट जाती तो प्रार्थना की ये पंक्तियां सुबह के सन्नाटे में सारे घर में गूंज रही होतीं.

ओ. पी. बहुत अच्छा दोस्त साबित हुआ. राहुल को अपना खर्च चलाने के लिए दो ट्यूशन करने पड़ते थे, जिनका जुगाड़ ओ.पी. ने ही किया था. वह युनिवर्सिटी में दो साल पहले से था. यहीं से उसने क्रिमिनॉलॉजी में एम.एस-सी. किया था और अब रिसर्च कर रहा था. पैसे की उसे कमी नहीं थी, क्योंकि उसे यू.जी.सी. की स्कॉलरशिप मिल रही थी.

लेकिन जल्द ही पता चल गया कि इस विश्वविद्यालय का सारा स्वरूप तेजी से बदल रहा है. पिछले चार-पांच सालों से विदेशी छात्रों ने यहां एडमीशन लेना बंद कर दिया था. डॉ. वाट्सन जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के विद्वान् प्रोफेसर जल्द से ज़ल्द यहां से कहीं और चल देना चाहते थे. स्थितियां बिगड़ रही थीं.

पता चला, पिछले साल मारीशस से आई एक छात्रा को कुछ लोकल गुंडे उठाकर ले गये थे और बलात्कार करने के बाद उसको मार कर उसकी लाश तलहटी की एक पुलिया के नीचे फेंक दी थी. ओ.पी. ने राहुल से कहा था, 'यहां बहुत सावधानी और हाशियारी से रहना है. शहर की ओर जाओ तो वहां किसी से पंगा लेने की कोशिश मत करो. अगर किसी सिनेमा हाल में टिकट भी खरीदो तो सौ या पांच सौ के नोट जेब से मत निकालो. वहां बुकिंग विंडो में बैठने वाला आदमी ही नहीं, पनवाड़ी और चाट वाले तक अपराधियों के एजेंट हैं. अगर शक हुआ कि तुम किसी पैसे वाले आसामी के लड़के हो, तो किसी भी दिन हॉस्टल आकर तुम्हें उठाकर ले जाएंगे. हर साल दर्जनों एब्डक्शन के केस यहां होते रहते है. पुराना डकैत इलाका है. देवी सिंह, मलखान सिंह, मोहर सिंह, तहसीलदार सिंह... सारे के सारे डाकू इसी पट्टी में वारदात किया करते थे.'

ओ.पी. की बात में कितनी सच्चाई थी, इसका पता ज़ल्द ही चल गया. पोस्टमैन तक लोकल गुंडों से मिला हुआ था. हॉस्टल में दक्षिण भारत या दूर दराज़ से आने वाले छात्रों के घरों से मनीआर्डर अक्सर महीने के पहले सप्ताह की तारीखों में आते थे. किस लड़के के पास कितने का मनीआर्डर आया, गुंडों के पास इसकी पूरी सूची होती थी. इन तारीखों को, रात में नौ-साढ़े नौ बजते ही, हॉस्टल के परिसर में एक-दो जीपें आकर रुकतीं. छुरे, हॉकी की स्टिक, साइकिल की चेन, बघनखे, राड और कभी-कभार देशी कट्टे, जो मामूली कीमत में इस इलाके के लोहारों के पास आसानी से मिल जाते थे,

इन गुंडों के हथियार होते थे. अज्जू, लच्छू, अच्छन, बब्बन, लोटा, पेंदा, गुड्डू, डब्बा, बकसा जैसे उनके नाम होते थे और भाई, दाऊ या गुरू का सम्बोधन उनके साथ सीनियारिटी और रुतबे के हिसाब से जुड़ा होता था. मसलन, अच्छन गुरू, लच्छू भाई. कभी-कभी उस्ताद भी— परसू उस्ताद. इन लोगों के संबंध स्थानीय राजनीतिक नेताओं, पुलिस आदि के साथ तो होते ही थे, विश्वविद्यालय के प्रशासन, छात्र-अध्यापक राजनीति में भी उनकी खासी दखल होती थी. मणिपुर,. अरुणाचल, असम जैसे उत्तर पूर्व के प्रांतों से आने वाले छात्रों को ये गुंडे 'मल्लू' या 'मंकी' बोलते थे और दक्षिणी भारत के किसी भी राज्य से आने वाला लड़का इनके लिए 'रुंडू' होता था.

रूम नं. 212 में एक मणिपुरी छात्र रहता था. सापाम तोंबा. सुंदर, गोल-मटोल, पढ़ने में तेज और बैडमिंटन का अच्छा खिलाड़ी. राहुल के साथ उसकी अच्छी पहचान हो गयी थी. सापाम बॉटनी में एम.एस-सी. प्रीवियस कर रहा था. अभी दो हफ्ते पहले इंफाल के पास एक गोलीबारी में उसके सगे बड़े भाई की मृत्यु हो गई थी, जो वहां किसी प्रायमरी स्कूल का शिक्षक था. सापाम फूट-फूटकर रोता रहा. वह मणिपुर अपने भाई के अंतिम संस्कार में शामिल होने नहीं जा पाया था, क्योंकि उसके पास किराये के पैसे नहीं थे. दूसरे, उसके पिताजी ने उसे वहां आने से रोका भी था. मणिपुर में इंसर्जेंसी की घटनाएं बढ़ गयी थी. पूरा मणिपुर सेना और बी.एस.एफ. के हवाले था. रोज़-रोज़ कांबिंग ऑपरेशंस और एनकाउंटर्स.

'मैं अगर उदर जाएंगा तो मिजे पी.एल.ए. का मेंबर बताकर वो लोग गोली मार देंगा. हम उदर से ज़्यादा इदर सेफ है.' सापाम ने कहा था.

गुंडे सापाम के कमरे में भी घुसे थे. उन्होंने उसकी घड़ी, मनीआर्डर से आये छह सौ रुपये, चाय की एक केटली और एक थर्मस उससे छीन ली थी. इतना ही नहीं, उन्होंने सापाम को मजबूर किया था कि वह नंगा होकर बिजली के जलते हीटर पर पेशाब करे. टॉर्चर से हारकर जब सापाम ने ऐसा किया तो उसे जोरों का करेंट लगा और उस शॉक से वह बेहोश हो गया. वह अभी तक नार्मल नहीं हो पाया था. सापाम टूट गया था. 'हम किदर जाए...? हम पड़ाई कैसे करेंगा? मिजको बताओ.' वह रो रहा था.

ओ.पी., राहुल और दो-तीन अन्य लड़कों ने मिलकर उसका मेस बिल पटाया. फीस जमा करवाई. 'मणिपुरी लोग इंडिया से अलग होना चाहते हैं. अगर आज मत संग्रह हो जाये, तो कश्मीर से ज़्यादा प्रतिशत लोग अलगाव के पक्ष में मणिपुर और नागालैंड में वोट डालेंगे.' ऐसा क्यों हुआ?

सापाम कहता था, कि उसकी बुआ और मणिपुर की बहुत सी औरतें जो विधवा हो जाती थीं, वे वृंदावन आ जाती थीं. गांव-गांव वहां रास लीलाएं होती थीं. कृष्ण के कीर्तन होते थे. सत्रहवीं सदी में बंगाल से आकर गौरांग महाप्रभु चैतन्य ने अपनों पदों और कीर्तनों से पूरे मणिपुर को गुंजा दिया था. वहां के आदिवासियों समेत सारे लोग वैष्णव हो गये थे. उनके नाम के अंत में शर्मा, सिंह जैसे सरनेम जुड़ गये थे. सीधे-सरल,

भोले-भावुक, पहाड़ों का कठिन जीवन जीते मंगोल या तिब्बती-बर्मी समूह के मेतेई और आदिवासी. जैसे चैतन्य ने उनके रिक्त सांस्कृतिक जीवन को एक नयी रस मयी नदी के जल से आप्लावित कर दिया था. आज़ादी के समय, 1947 के बाद स्वेच्छा से, जनता की मांग पर मणिपुर ने भारतीय गणराज्य का एक अंग बनने का चुनाव किया था.

अब ऐसा आखिर क्यों हो गया? पचास साल के भीतर-भीतर वहां का हर व्यक्ति, सौ में से निन्यान्नवे, इस इंडिया से छुटकारा क्यों पाना चाहता है?

'मायांग (परदेसियों) ने हमें बहोत लूटा. हमारी लड़की ले गये. हमें बेवकूफ बनाया. हमारा बाज़ार, ट्रेड, नौकरी सब पर मायांग का कब्ज़ा है. कुछ बोलो तो सेसेनिस्ट कहता है. तुम आज उदर से आर्मी हटा लो, कल हम आज़ाद हो जाएगा.' सापाम कहता है—'अंग्रेजों के टाइम पर हमने सुभाष बोस के आई.एन.ए. को अपना ब्लड दिया था. बर्मा तक जाकर इंडिया की आज़ादी के लिए हमारा लोग लड़ा. अब हम अपनी आज़ादी के लिए लड़ेगा. लिख के ले लो, कश्मीर से पहले हम इंडिया से आज़ाद होगा.'

राहुल को लगा युनिवर्सिटी की ज़िंदगी उतनी आसान नहीं है, जितनी वह समझ रहा था. यहां सुरक्षित होकर सिर्फ़ स्टडी करना, एंथ्रोपोलॉजी पढ़ना, मानव सभ्यता और नस्लों के उत्स को जानना और माधुरी दीक्षित की पीठ को देखते रहना उतना सरल नहीं है. कभी-भी वे लोकल गुंडे कमरे में घुसेंगे और कनपटी पर कट्टा लगा देंगे. यह एक क्रूर, टुच्चा, अपराधी समय है, जिसमें इस वक़्त हम लोग फंसे हैं. यह ठगों, मवालियों, जालसाजों, तस्करों और ठेकेदारों का समय है. और इस वक़्त हर ईमानदार, शरीफ और सीधा-सादा हिंदुस्तानी इस राज में कश्मीरी है या मणिपुरी है या फिर नक्सलवादी.

'पिछले महीने मुझे न्यूयार्क में एक सेमिनार में हिस्सा लेने के लिए आमंत्रित किया गया. 500 डॉलर की स्वीकृत न्यूनतम मुद्रा मेरे पास थी. उससे ज़्यादा रकम मैं कभी भी नहीं ले गया. इतने पैसे भी खर्च नहीं होते. लेकिन इस बार पहली बार मुझसे पूछताछ की गयी. बड़े अभद्र और खोजी तरीके से, कि इतनी कम रकम में आपका काम कैसे चलेगा? आप और डॉलर्स क्यों नहीं ले जाते?' किन्नू दा ने बताया. 'दरअसल अब ये दुनिया ट्रेडर्स की, व्यापारियों की हो गयी है. वे लाखों डालर-पाउंड लेकर सफर करते हैं. अरबों-खरबों का ट्रांजेक्शन होता है. ये लोग मान ही नहीं सकते कि अभी भी हिंदुस्तान में ऐसे लोग बचे हुए हैं, जिन्हें बहुत दौलत नहीं चाहिए. और वे अमेरिका या फ्रांस व्यापार करने नहीं, अकादेमिक या दूसरे कारणों से जाते हैं.'

तो क्या ये जो भू-मंडलीकरण हो रहा है यह उन्हीं के लिए है, जो विश्व बाज़ार के हिस्से हैं. सटोरिये, व्यापारी, तस्कर, अपराधी या सरकारी मंत्री-अफसर. अगर आज डॉ. कोटणीस जैसे लोग चीन जाना चाहें या राहुल सांकृत्यायन जैसे लोग रूस और मध्य एशिया, तो क्या यह संभव होगा?

'नॉट एट आल!' कार्तिकेय ने ज़वाब दिया. 'दिस इज़ द एंड ऑफ द सिविल सोसायटी. अब कहीं कोई नागरिक समाज नहीं बचा. सिर्फ़ सरकारें हैं, कंपनियां है, संस्थाएं हैं

माफिया और गिरोह हैं. और अगर अब भी तुम किसी लेखक, कवि या विद्वान को हवाई जहाज में सवार होकर विदेश जाते देखते हो, तो जान लो, वह किसी कंपनी, किसी व्यापारी, किसी संस्था या गिरोह का सदस्य या दलाल है. आल्वेज़ डाउट हिज़ इंटिग्रिटी.'

कार्तिकेय काजले पुणे से आया था. जिओलॉजी में रिसर्च के साथ-साथ सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रहा था. उसने राहुल से भी सिविल की तैयारी के लिए कहा.

सापाम के अलावा उन गुंडों ने केरल के एक लड़के मधुसूदन को लूटने के बाद इतना मारा था कि वह डर के मारे दूसरी मंजिल से नीचे कूद गया था और उसकी टांगें टूट गयीं थी. वह अस्पताल में एडमिट था. राहुल ओ.पी. और कार्तिकेयन के साथ उसे देखने हॉस्पिटल गया था. मधुसूदन के फादर का कोचीन से टेलिग्राम आया था कि वह माइग्रेशन लेकर केरल लौट आये. वह परेशान था. उसका पूरा कैरियर बिगड़ गया था.

एक दिन राहुल अपने विभाग से अणिमा, आभा, दीप्ति, मनमोहन और राजू के साथ निकल कर लाइब्रेरी के पास बने कैंटीन की ओर जा रहा था कि सड़क के किनारे पांच-सात लड़कों के झुंड में से किसी ने उसे पत्थर मारा. ढेला उसके सिर के पीछे लगा. अणिमा चीखी. खून नहीं निकला था. तभी उस झुंड में से एक लड़के ने आवाज़ मारी...'अरे ओए हीरो! जुल्फ का स्टाइल तो एकदम राहुल राय वाला है...'

'ये क्या बत्तमीजी है.' अणिमा ने डांटा.

'काए दीदी! हमाए लाने इस हिंजड़े खों जीजा बनाय रईं? अरे कउनो ठीक-ठाक मोड़ा खोजो.'

इसके बाद एक ज़ोरों का ठहाका लगा.

'इनके मुंह लगना ठीक नहीं. चुपचाप बढ़ लो.' मनमोहन ने सलाह दी.

वे लोग चुपचाप चलने लगे. लगा कि सब कुछ शांत हो गया. लेकिन जैसे ही वे लाइब्रेरी के पास पहुंच कर कैंटीन की ओर मुड़ने लगे, एक दूसरा दनदनाता पत्थर आकर आभा को लगा. वह चीख कर गिर गयी. उसका चश्मा फूट गया. माथे से खून बह रहा था.

'इतै युनिवर्सिटी में पढ़ने के लाने आये या लौंडियाबाजी करने के लाने. जे हम पैली वार्निंग दे रए हैं. संभल जाओ हीरो. नई तो बैंड बजा देंगे.' पीछे से उनमें से एक ने कहा. 'तुम्हाई तो बऊ की!'

'बऊ' का मतलब होता था, मां.

वे लोग प्रॉक्टर के आफिस शिकायत करने पहुंचे. इस हद तक दादागीरी और गुंडागर्दी अकल्पनीय थी. डिस्पेंसरी जाकर आभा की मरहम-पट्टी करवाई गयी थी. बिना चश्मे के उसे ठीक से दिखता भी नहीं था. ऊपर से एंड सेमेस्टर टेस्ट सिर पर थे.

प्रॉक्टर डॉक्टर चतुर्वेदी थे. उन्होंने सारी बातें सुनीं. एक टूथ प्रिक से अपने दांतो में अटके सुपारी के टुकड़ों को कुरेदा, फिर गंभीर लेकिन काइयां आवाज़ में कहा, 'देखो,

ये दिल्ली नहीं है, न लंदन. यहां ऐसा फैशन कर के लड़कियों के साथ मौज-मस्ती करोगे तो कुछ न कुछ तो होगा ही. लड़कियों पर तो सभी की निगाह रहती है. स्टूडेंट को तो छोड़ो, टीचर भी पीछे नहीं. आज पत्थर खाया है, कल फेल कर दिये जाओगे.'

'लेकिन सर, हम लोग कोई मौज मस्ती नहीं कर रहे थे. हम अपने नेक्स्ट पीरियड के पहले सिर्फ रिफ्रेशमेंट के लिए कैंटीन जा रहे थे.' राहुल ने तर्क दिया.

'कहां से आए हैं आप जनाब? ये मांग क्यों बीच से निकाली है? आजकल लड़कियां ऐसी स्टाइल पसंद करती है क्या?' प्रॉक्टर चतुर्वेदी ने व्यंग्य से कहा. 'देखो मिस्टर, अगर लड़कियों से दोस्ती का इतना ही शौक है तो ज़रा अपनी पाकेट भारी करो. कार में चलो, पैदल क्यों खुले में घूमते हो इनके साथ. इतनी सारी कारें आती हैं सिटी से इस कैंपस में. उन टिंटेड ग्लास के भीतर क्या-क्या होता है, क्या हमें पता नहीं. अरे, इतने सारे होटल हैं, वहां जाओ. इस तरह घूमोगे तो खतरा तुम्हें नहीं, इन लड़कियों को है. यहां का एटमॉसफियर ठीक नहीं. दीवारों पर ऊटपटांग बातें लिख दी जाएंगी. तुम्हारा क्या, बदनाम हो कर तो कुंवारी बेचारी ये बैठेंगी ना!'

'सर, आप गलत सोच रहे है, सर!' मनमोहन मिनमिनाया.

'गलत हम नहीं सोच रहे हैं, आप सोच रहे है.' चतुर्वेदी ने दांत कुरेदना खत्म करते हुए कहा. 'टीवी देख देख कर आपका दिमाग़ खराब हो गया है. अपनी स्टडीज़ पर ध्यान दीजिए. रही बात आज के इंसीडेंट की, तो कहिए तो फोन करके एस.एच.ओ. को बुला दूं? एफ.आई.आर. दर्ज़ करा दीजिये. लेकिन इतना समझ लीजिए कि वे लड़के लोकल हैं. पंगा लेंगे तो आज उन्होंने सिर्फ़ पत्थर भर मार के वार्निंग दी है, कल आपके हॉस्टल के कमरे में घुसकर आपको ठोंक जायेंगे. मेरी सलाह यही है कि चुपचाप आप लोग अपने डिपार्टमेंट में लौट जाइए और आइंदा इस तरह साथ-साथ मत घूमिये.'

वे लोग लौट आये. आभा के माथे का दर्द बढ़ रहा था. राहुल के सिर के पीछे भी छोटा-सा गूमड़ निकल आया था.

तो यह वह उत्तर आधुनिक समय है जब छोटे-छोटे शहरों में वेलेंटाइन डे मनाया जा रहा है और न्यू इयर ईव के लिए भुच्च पिछड़े कस्बों में भी टीवी विज्ञापनों की बदौलत केक और आर्चीज़ के कार्ड की बिक्री बढ़ गयी है.

देखो, एक चुटियाधारी वनमानुष पेप्सी पीता हुआ राम लला के मंदिर के सामने ब्रेक डांस कर रहा है और उसके लिंग में देसी कट्टा बंधा हुआ है. और उसकी अंटी में दुबई के इब्राहीम भाई का हवाला रुपया है. उसे वोट दो, वह हिंदुत्ववाद लाएगा.

राहुल के सिर का गूमड़ दर्द कर रहा था. कहीं कोई ब्लड क्लॉटिंग न हो गई हो? वह डर गया.

वह घटना राहुल के जीवन में उस दोपहर ढाई बजे के आसपास घटी, जो किसी के जीवन में पहली बार और शायद एक ही बार, जरूर घटा करती है.

आकाश में हल्की बदलियां थीं. दो दिन पहले पानी बरसा था. कैंपस के सारे पेड़ और सारी इमारतें धुलकर दोपहर की खिली हुई धूप में चमक रही थी.

अगस्त का रंग खूब गाढ़ा हरा होता है और उसकी तारीखों में घास की भीगी हुई हरी गंध भरी होती है. जब कोई अगस्त की सड़क पर चलता है, तो उसके जूते वनस्पतियों के कोंपलों और घास के फूलों और तिनकों में लिथड़ जाते हैं. भुने हुए भुट्टे खाने का मौसम.

उस पत्थर वाली घटना के बाद से राहुल और उसके दोस्त काफ़ी सतर्क हो गये थे. उस दिन, जिस दिन राहुल के जीवन में यह घटना घटी, वे लोग अपने विभाग के कॉमनरूम में बैठे हुए थे. आभा, सीमा फिलिप, मनमोहन, राणा, अणिमा, राजू, रेणु, नीरा दीदी और भगवत. भुट्टे खाये जा रहे थे और फिल्मी अंताक्षरी, क्रिकेट, टीवी सीरियल और फिल्म पर बहस से शुरू हुआ दौर मेज़ को तबले की तरह बजाने और बारी-बारी से गाना गाने तक पहुंच गया था. खिड़कियां और दरवाज़े अंदर से बंद कर लिए गये थे, जिससे कोई लोकल लफूट आकर पंगा न खड़ा कर दे. दो दिन बाद रक्षाबंधन का त्यौहार था. कौन लड़की किस टीचर या लड़के को राखी बांध कर धड़ल्ले से चलते एकतरफा रोमेंटिक सोप ऑपेरा के बीच में अचानक एक कभी न खत्म होने वाला 'ब्रेक' डाल देगी, इसकी सूची बनाई जा रही थी. राजू और नीरा दीदी के पास ऐसी प्रामाणिक सूचनाओं का रोचक खज़ाना था.

'अग्रवाल सर आजकल लगातार कैप लगाकर युनिवर्सिटी आते हैं. एक बार तो बारिश में उनकी टोपी भीग कर लत्ता बन गयी थी, उसमें से बेतहाशा पानी चू रहा था. तब भी उन्होंने टोपी नहीं उतारी. उन्हें लगता है उनकी गंजी खोपड़ी देखकर रीता सक्सेना उन्हें छोड़कर किसी और के साथ लग जाएगी.' नीरा दीदी ने बताया.

'अग्रवाल सर की गंजी खोपड़ी, उस पर बैठी तो फिसल जाएगी छोकरी.' राजू ने मेज़ को तबले की तरह बजा-बजाकर गाया.

'और वो हिंदी वाले कवि जी, तिवारी सर. कहते हैं परसों उनको लाइब्रेरियन ने

सबके सामने डांटा कि आप यहां किताबें देखने आते हैं या लड़कियों की जासूसी करने और उन्हें घूरने.'

'ही इज़ अ पीपर, वार्येरिस्ट! कहते हैं, वे लड़कियों के पैरेंट्स को फोन से सूचना भी दिया करते हैं. एक बार उनकी पिटाई भी हुई थी.'

'पद्मश्री ले आया है साला. ही इज़ अ ग्रेट जुगाड़ू लीच. अभी लंदन गया था. विश्व हिंदी सम्मेलन में.'

अणिमा ने उस दिन गहरे जामनी रंग की स्लीव लेस ब्लाउज और समुद्री नीले रंग की साड़ी पहन रखी थी. सिल्क की साड़ी. उसका सांवला रंग जैसे उद्भासित होकर चमकने लगा था. फुंसियों वाले चपटे से चेहरे में बच्चों जैसी शरारती लेकिन निर्दोष आंखें थीं.

'...बचपन की मोहब्बत को, दिल से न जुदा करना.

जब याद मेरी आये, मिलने की दुआ करना.

और

'...ये रिश्ता चार आंखों का, मेरे साजन न टूटेगा.

जो मुझको आजमाना हो, तो डोली ले के आ जाना.

सुन मेरे साजना... हो ऽ.'

अणिमा के गले में कोई उदास-सी बांसुरी थी, जिसके स्वर बाहर नहीं, भीतर की ओर दूर तक उतरते जाते थे. राजू की उंगलियां मेज़ को बजाते-बजाते कहीं खो जाती थीं. कौन-सा दुख होगा इस सांवली लड़की के भीतर, जो उसकी आवाज़ को इतना नम कर देता है?

आभा ने एक रैप सांग गया, जो उसने खुद ही लिखा था. मज़ेदार था. राहुल ने हंसराज का पंजाबी पॉप गायाः 'सोणिये नी सोणिये नी सोणिये, मुखड़ा ना जा नी मोड़के, चल मेरे संग नाल सारा जग छोड़ के.' गाना ऐसा जमा कि साथ में राणा, नीरा दीदी, आभा, अणिमा सबने स्वर मिलाया.

'दलेर मेंहदी का हो जाये...' राजू ने मांग की. सबने साथ दिया.

ठीक इसी समय दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी.

खट्...खट्...खट्...!

तबला फिर से वापस काठ की गूंगी मेज़ में तब्दील हो गया और कमरे में चुप्पी छा गयी. कौन होगा इस समय? सारे टीचर्स तो वाइस चांसलर के रेज़िडेंस की ओर गये थे और वहां से उन्हें पांच बजे शाम लौटना था.

कहीं कोई लफूटों का गैंग तो नहीं आ गया? गाने की मस्ती में वे लोग भूल ही गये थे कि आवाज़ बाहर गलियारे तक भी जा रही होगी.

राहुल ने जाकर दरवाज़े की कुंडी खोली.

और, दरवाज़े पर वह थी. वह, जिसे राहुल ने अपने जीवन में पहली बार देखा. दो बड़ी-बड़ी आश्चर्य से भरी आंखे. हँसी के तट तक पहुंचते-पहुंचते ठिठक कर

रुक गये होंठ, पतली-सी छोटी नाक... जयपुरी बंधेज की गहरी हरी, पीले-लाल छीटों वाली चुन्नी. बासंती रंग का कुर्त्ता और सफेद सलवार.

गोरेपन की ओर थोड़ा-सा झुका हुआ गेहुआं रंग.

'हाय अंजली'—सीमा फिलिप और अणिमा ने उसे विश किया.

'क्या चल रहा था यहां? मैंने डिस्टर्ब तो नहीं किया न?' अंजली ने पूछा. वह अणिमा के पास वाली कुर्सी पर बैठ गयी थी.

'नहीं यार, यहां तो हमारा डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू टाइमपास म्यूजिकल डॉट काम चल रहा था.' सीमा ने कहा.

'भुट्टा खाएगी? मेरे पास आधा बचा है.' रेणू ने पेशकश की.

'पंडितानी है. तेरा जूठा भुट्ठा खाएगी तो उसका धरम भ्रष्ट हो जाएगा.' सीमा ने व्यंग्य किया.

अंजली भुट्टे के दाने छील-छील कर खाने लगी. राहुल ने उसे देखा. कोई लड़की इतनी सुंदर, इतनी निर्दोष और इतनी लाचार क्यों दिखती है?

उसे लगा अंजली के आने के साथ ही कमरे में जैसे एक तरह की शांति और शीतलता आ गयी हो.

'चप्पा...चप्पा चरखा चले... औनी बौनी बेरियों तले...' राजू फिर मेज़ बजाने लगा था. लेकिन बहुत धीरे-धीरे और उतनी ही धीमी आवाज़ में राणा गा रहा था. राहुल भी बीच-बीच में शामिल हो जाता था.

पता चला अंजली स्टेट मिनिस्टर जोशी की लड़की है. पी.डब्ल्यू.डी. मिनिस्टर एल.के. जोशी. पूर्वज कभी पहाड़ के रहे होंगे लेकिन कई पीढ़ियों से उनका परिवार यहीं बस गया है. पहले जंगल के ठेकेदार थे फिर बिल्डर बने. लाखों-करोड़ों कमाए. इस बार पहली ही बार विधायक का टिकट मिला और जीत कर मंत्री बन गये. उनके पीछे व्यापारियों, ठेकेदारों और प्रापर्टी डीलर्स की पूरी ताकत थी. अच्छन, बबलू, लखन पांडे जैसे अपराधियों के गिरोह की मदद भी उन्हें हासिल थी.

जोशी चाणक्य का बाप है. इलाके में यह आम मान्यता थी. कुछ लोगों का कहना था कि राज्य की राजनीति में वे बहुत ऊपर तक जाएंगे. ज्योतिषियों ने उनकी हथेली पर साफ-साफ राजयोग देखा था.

लेकिन अंजली?

भुट्टे के दानों को छील-छील कर लापरवाही से खाती हुई लड़की?

अंजली अणिमा और सीमा फिलिप की सहेली थी. तीनों पहले एक ही गर्ल्स इंटर कॉलेज में पढ़ती थीं. स्कूल के दिनों से साथ था. अणिमा ने बताया कि अंजली हिंदी में एम.ए. कर रही है.

हिंदी में एम.ए.?

राहुल चौंक गया. उसकी आंखों के सामने युनिवर्सिटी का हिंदी विभाग घूम गया.

मटैली, धुंधली बीमार लगती दीवारें. पान की पीक, गंदगी और धूल से भरे कोने. ऐसा लगता, जैसे विश्वविद्यालय का वह सबसे अलग-थलग हिस्सा किसी शापग्रस्त अंधेरे में डूबा हुआ है. आजीवन किसी एकल कैद की सज़ा भोगती एक रहस्यमय इमारत.

और वहां से निकलते, आते-जाते लोग. लगता ही नहीं था कि वे आज के समय के लोग हैं. कपड़े-जूते पहनने से लेकर, चलने-फिरने और बोल-चाल तक में वे सबसे भिन्न थे. कैंपस में वे अक्सर झुंड में दिखाई देते. लड़कियां उन्हें देखकर घबरातीं. वे बहुत ऊंची आवाज में बातें करते और अक्सर जोरों से चीखते हुए, खांसते हुए या ताली पीट-पीट कर हँसते. लगता जैसे यह कोई आदिम, सभ्यताओं के पार से आने वाली, किसी होमोसेपियेन की हँसी है. हा-हा, खी-खी, ही-ही. हूप...हूप...हूप.

वे एक साथ हास्यास्पद और डरावने लगते. उन्हें देखकर एक ही पल दया और भय का संचार होता. वे किसी विचित्र भाषा में आपस में बात करते थे. यह किसी मृत सभ्यता की कोई प्रेत भाषा थी.

हिंदी, उर्दू और संस्कृत—ये तीन विभाग विश्वविद्यालय में ऐसे थे, जिनके होने के कारणों के बारे में किसी को ठीक-ठीक पता नहीं था. यहां पढ़ने वाले छात्र यहां से निकलकर किस भविष्य की ओर जाएंगे, कोई ठीक-ठीक नहीं जानता था. वे उजड्ड, पिछड़े, मिसफिट, समय की सूचनाओं से कटे, दयनीय लड़के थे और वैसे ही कैरिकेचर लगते उनके अध्यापक! कोई पान खाता हुआ लगातार थूकता रहता, कोई बेशर्मी से सार्वजनिक रूप से अपनी जांघ की जोड़ें खुजलाता, कोई चुटिया धारी धोती छाप रघुपतिया किसी लड़की को चिंपैंजी की तरह घूरता.

कैंपस में लड़के मज़ाक में उस विभाग को 'कटपीस सेंटर' कहते थे. जो लड़कियां सूरत-शक्ल और प्रतिभा से ठीक-ठाक होतीं वे दूसरे विषयों में एडमीशन पाकर विश्वविद्यालय की मुख्यधारा में शामिल हो जाती थीं. बची-खुची लड़कियां और लड़के ही वहां प्रवेश लेते. उनको देख कर ही लगता था कि वे 'ड्रॉप आउट्स' हैं.

और अंजली जोशी उसी हिंदी विभाग में? कुछ दिनों में यह भी तो कहीं किसी मादा गोरिल्ला में नहीं बदल जाएगी? अपभ्रंश और पालि में बोलती हुई, हल्दी और बेसन के उबटन में सिझी हुई कोई यक्षिणी या गऊ का दूध पीती कोई जंगली ऋषि कन्या.

अणिमा से पता चला कि अंजली ग्रेजुएशन के दिनों में बहुत बीमार पड़ गयी थी. उसे पीलिया हो गया था. उसी हालत में परीक्षा दी. पेपर्स खराब हुए और बड़ी मुश्किल से पास हो पाई. उसके पिताजी ने हिंदी डिपार्टमेंट के हेड आचार्य एस.एन. मिश्रा को कह कर अंजली का एडमीशन वहां करा दिया.

'कोई भी भाषा, जब तक कोई समुदाय उसे बोलता है, विलुप्त नहीं होती. योरॅप की भाषाओं के इतने प्रसार और प्रचार के बावजूद, शताब्दियों तक चलने वाले औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी पराधीनताओं के बावजूद, अफ्रीका और एशिया की छोटी-छोटी आदिवासी

भाषाएं तक मिटाई नहीं जा सकीं. वे आज भी जिंदा हैं 'हो' जैसी आस्ट्रिक परिवार की भाषा, जिसे बहुत थोड़े-से आदिवासी बोलते हैं, आज तक मौजूद है...' किन्नू दा ने कहा था.

सो, दे आर द ट्राइबल्स! वे आज के समय के आदिवासी हैं.

'नहीं, वे आदिवासी नहीं, मुल्ला और पुरोहित हैं. याद रखो, आदिवासी कभी रेट्रोग्रेसिव नहीं होता. वह जड़ नहीं होता.' कार्तिकेय ने बहस में कहा था.

मैं भी गोरिल्ला बनूंगा. एक होमोसेपिएन. एक पुरोहित. मैं भी पान-गुटखा खाकर, झुंड में घूमता हुआ हँसूंगा, खी-खी, हूप...हूप.

राहुल ने गलियारे से देखा. अणिमा और सीमा फिलिप के बीच में थी अंजली जोशी. वह जा रही थी. उसके दाहिने हाथ में एक छतरी थी. पीली छतरी.

यह निश्चित ही वही पीठ है, जो उसके हॉस्टल के रूम में 252 की खिड़की पर धूप को अंदर आने से रोक रही है. अगर अभी एक गुलेल होता तो वह रबर को कान तक खींच कर एक बंटी मारता.

संगीत, कृतज्ञता और मीठी पीड़ा में डूबी एक 'उई' की आवाज़ अंजली जोशी के गले से निकलती, वह गर्दन मोड़कर उसकी ओर उत्सुक और आमंत्रित करती, चौंकी हुई, आंखों से देखती.

और 'फ्रीज़' हो जाती.

सचमुच, राहुल के जीवन में पहली बार कोई चलती-फिरती, जीती-जागती वास्तविक लड़की, एक स्थिर चित्र में उस दिन 'फ्रीज़' हो गयी थी.

और उस लड़की का नाम था, अंजली जोशी.

टैगोर हॉस्टल के नीचे के मैदान में रात नौ बजे, डिनर के बाद, आपात् सभा हुई. महर्षि अरबिंद, सी.वी. रमन और भूला भाई देसाई—हॉस्टल के लगभग सभी लड़के मैदान में जमा हुए. दो लड़कियों के हॉस्टल्स भी थे. एम.एल.बी. (महारानी लक्ष्मी बाई) और सरोजनी नायडू गर्ल्स हॉस्टल. परवेज़ और कण्णन वहां संदेश लेकर गये थे. पैंतालीस लड़कियां वहां से भी आ गयीं थीं.

'वीसी अग्निहोत्री मुर्दाबाद...मुर्दाबाद...!'

'प्रॉक्टर चतुर्वेदी हाय... हाय...!'

'वार्डेन उपाध्याय... बाहर आओ...बाहर आओ..!'

'साथियो, आज हम यहां एक बहुत ज़रूरी मसले के लिए इकट्ठा हुए हैं. हम अगर आज भी नहीं जागे तो हम बरबाद हो जाएंगे. ये युनिवर्सिटी गुंडों और समाजविरोधी अपराधियों का अड्डा बन गयी है. वे खुलेआम अपनी मनमानी कर रहे हैं. आपके सामने हमारे साथी हॉस्टलर्स खुद बताएंगे कि उनके साथ इन गुंडों ने क्या-क्या हरकतें कीं. मैं सबसे पहले बुलाऊंगा, टैगोर हॉस्टल के रूम नंबर 212 के, एम.एस-सी. प्रीवियस के स्टूडेंट सापाम तोंबा को...ये मणिपुर से यहां पढ़ने आये हैं....'

सापाम ने मंच पर आकर अपनी टूटी-फूटी हिंदी और अंग्रेज़ी में अपने साथ घटी घटना के बारे में बताना शुरू किया. बताते-बताते उसकी आवाज़ भर्राने लगी फिर वह वह मंच पर ही रोने लगा. आज इतने सारे लड़कों की भीड़ देखकर, या तो भावावेग में या फिर घबराहट में, उसने पहली बार वह बात भी बताई, जो उसने पहले विश्वविद्यालय के अधिकारियों को भी नहीं बताई थी.

उस समय सापाम हिचकियों के बीच अपने साथ गुंडों द्वारा की गयी ज़्यादतियों के बारे में बता रहा था तभी एक पल के लिए वह रुका, उसकी आंखें शून्य में जाकर कहीं भटकती-सी लगीं, दोनों हथेलियों से उसने अपना चेहरा ढंका, फिर एक ही सांस में कहा—'उनोंने मेरे साथ सोडोमी का अटेंप्ट किया. हीटर में मेरे को पिस कराने के पहले.' और वह फूट पड़ा.

उसका चेहरा, हथेलियों के पार, आंसुओं के एक नये सैलाब में डूब गया.

आकाश से जैसे एक विशाल पक्षी अपने घायल डैने फड़फड़ाता सबके बीच

आकर गिरा. अचानक चारों तरफ़ एक सहमा हुआ सन्नाटा फैल गया. सारी आहटें थम गयीं. टैगोर हॉस्टल के मैदान में इकट्ठा छात्र-छात्राओं के चेहरे दुख, ग्लानि, पराजय और शर्म से धूमिल हो गये थे. एक भारी-भरकम, असह्य सन्नाटा वहां अचानक हर किसी के कान में बज रहा था, आत्मा को छीलता हुआ. और नेपथ्य में से आ रही थी सापाम तोंबा की सिसकियों की आवाज़.

'आयम नॉट अ गे. टेल मी, मिजको बताओ... हम कैसे जिये? मैं क्यों जिये?' सापाम का रोना ऐसा था, जैसे कोई अब तक का रुका हुआ अंधड़ अचानक फूट पड़ा हो. उसका छोटा-सा सुंदर शरीर किसी कमज़ोर पौधे की तरह उस वेगवान बवंडर में कांप रहा था. अभी कुछ ही दिनों पहले मणिपुर में उसके सगे बड़े भाई को, जो प्रायमरी स्कूल में टीचर था, गोली मार दी गयी थी और यहां उसके साथ यह हादसा हुआ था.

'हम रोज़ सोचता है, आज हम स्युइसाइड कर लेगा. लेकिन... लेकिन हम ज़रूर कर लेगा. मिजसे लिख के ले लो. आज नहीं तो कल हम स्युइसाइड कर लेगा. हम क्यों जियेगा? मिजको पढ़ाई के वास्ते पैसा मेरा भाई भेजता था. अब कौन भेजेगा? मिजको बताओ... टेल मी.'

सभी की आंखें नम थीं. लड़कियों की सिसकियां सुनी जा सकती थीं.

राहुल ने जाकर सापाम के कंधे पर हाथ रखा. वह खुद भी अपने आप को नहीं संभाल पा रहा था. बहुत मुश्किल से उसने अपनी आवाज़ साफ की—'कम-कम. नीचे चलो सापाम. चुप हो जाओ. कंट्रोल योरसेल्फ.' सापाम ने अपनी सूजी हुई लाल आंखों से राहुल को देखा और धीरे-धीरे उसका सहारा लेकर चबूतरे की सीढ़ियां उतरने लगा.

रात बारह बजे तक मीटिंग चली. यह पाया गया कि विश्वविद्यालय की सुरक्षा व्यवस्था या तो पर्याप्त नहीं है या उसमें स्थानीय लोगों के होने के कारण वे अपराधियों और गुंडों के खिलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं करते. ऐसा वे डर की वजह से करते हैं या इसमें उनकी कोई मंशा है, यह पता नहीं चल रहा था. मीटिंग में सापाम तोंबा के अलावा मधुसूदन, प्रवीण, निकेतन, मसूद आदि उन सभी लड़कों को पेश किया गया, जिनके साथ इसी सत्र में गुंडों ने मार-पीट की थी और उनके रुपये, सामान वगैरह लूट ले गये थे. प्रताप परिहार, जिसके मामा पुलिस के अधिकारी थे, ने बताया कि इन गुंडों को राजनीतिक नेताओं, युनिवर्सिटी के अधिकारियों और पुलिस का संरक्षण प्राप्त है. पिछले साल जय प्रकाश भुइयां नाम के एक सीनियर छात्र ने कुछ गुंडों के खिलाफ़ पुलिस स्टेशन में नामज़द रपट लिखाई थी, तो कुछ महीनों बाद, जब वह अपने गांव जाने के लिए स्टेशन में ट्रेन का इंतज़ार कर रहा था, गुंडों ने उसे वहीं प्लेटफॉर्म पर, रेलवे पुलिस के सामने, मारा था और उसके दोनों हाथ तोड़ दिये थे. उसे पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी.

यह फैसला किया गया कि हॉस्टल के सभी छात्र एकजुट होकर गुंडों का मुकाबला करें.

'हम यह बिल्कुल न सोचें कि इन गुंडों को शहर के सभी लोकल स्टूडेंट्स का समर्थन हासिल है. हमने दिन में डे स्कॉलर्स से बात की है. वे हमारे साथ हैं. हो सकता है कि एक ही शहर होने और जान-पहचान होने की वजह से वे खुलकर हमारे साथ न आएं, लेकिन कई दूसरे तरीकों से वे हमारी मदद करेंगे.'

'यकीन मानो आप लोग, ये गुंडे तादाद में बहुत थोड़े हैं. बस हथियारों और पैट्रोनेज की वजह से उनकी ताकत और हिम्मत बढ़ गयी है. अगर हमने एक बार उनको सही ज़वाब दे दिया, तो हॉस्टल में दुबारा घुसने के पहले वे दस बार सोचेंगे.'

प्रताप परिहार और कार्तिकेय का भाषण जोरदार रहा.

यह भी तय हुआ कि अगर भविष्य में एक भी ऐसी घटना दुबारा घटी तो युनिवर्सिटी को बंद करवा दिया जाएगा.

स्ट्राइक. छात्र एकता ज़िंदाबाद!

मीटिंग जोरदार और पूरी तरह कामयाब रही. राहुल को लग रहा था जैसे उसकी शिराओं में दौड़ते खून ने अचानक रफ़्तार पकड़ ली है और वह आंच में तप रहा है. उसने अपनी भुजाओं की मछलियां देखीं. जिम ने अपना असर दिखाया था. आइ बिलांग टु अ मार्शल रेस. आय विल फाइट फॉर अ जस्ट कॉज़ टिल आइ ब्रीद माइ लास्ट.

'...हम जिएंगे और मरेंगे ऐ वतन तेरे लिए...दिल दिया है, जां भी देंगे ऐ वतन तेरे लिए...' वह धीरे-धीरे गुनगुना रहा था. उसने साथ खड़े सापाम के कंधे दबाये और उसकी ओर देख कर मुस्कराया.

सापाम लेकिन नहीं मुस्कुरा सका. उसकी आंखें बार-बार किसी शून्य की ओर भटकने लगतीं थीं. वहां क्या था? क्या उसका मरा हुआ बड़ा भाई, जो अपनी उदास, असहाय और मृत आंखों से अब सिर्फ़ सापाम को देख भर सकता था और कुछ कर नहीं सकता था? क्योंकि उसे गोली मार दी गयी थी. उसकी कनपटी से अब भी खून बह रहा था. सापाम ने देखा वह वहीं, टैगोर हॉस्टल के मैदान के एक कोने में चुपचाप बैठा हुआ अपनी मृत आंखों से सापाम को देख रहा था.

अपने छोटे भाई सापाम के साथ वह हर सुबह, साइकिल पर बैठकर जाल लेकर मछलियां पकड़ने जाता था. घर में खूब सारी बत्तखें थीं. घर के पीछे जंगल था और पहाड़ियां, जिनका रंग दिन में सूरज और बादलों की धूप-छांह में बार-बार बदलता रहता था. जो पहाड़ी सुबह नीली होती वह दोपहर आते-आते सलेटी या भूरी हो जाती, फिर किसी बादल की परछाईं पड़ते ही वह एकदम हरी हो जाती. आश्चर्य तब होता जब वे पहाड़ियां देखते-देखते एकदम अदृश्य हो जातीं. उनका नामोनिशान न दिखता. सिर्फ़ बदलियों का कोहरा वहां टंगा हुआ दिखाई देता. भाई बताता था कि -'सापाम, ऐसे में ही हवाई जहाज़ क्रैश कर जाते हैं. पायलट तो सोचता है कि यहां सिर्फ़ कोहरा है, जब कि वहां होता है एक ऊंचा-पूरा पहाड़.'

गर्मियों में बांस के जंगल सूख जाते थे और रात में जब तेज़ हवाएं उस जंगल से

गुज़रती थीं तो हज़ारों बांसुरियों की तरह वे बांस बजने लगते थे. पिताजी कहते थे कि कृष्ण जब रुक्मिणी से प्यार करते थे, तो इसी जंगल में उनकी बांसुरी बजती थी. रुक्मिणी यहीं उत्तर-पूर्व की थी. बांस के पेड़ों ने बांसुरी बजाना कृष्ण से सीखा है. रुक्मिणी अब भी हवा बनकर जंगल में छिपे कृष्ण से मिलने वहां आया करती है.

पिताजी कीर्तन में ढोलक बहुत अच्छा बजाते थे. बजाते-बजाते और गाते-गाते वे इतना डूब जाते थे कि लोग कहते थे कि उन पर चैतन्य आ गये हैं. चैतन्य महाप्रभु!

सापाम पत्थर की किसी मूर्ति में तब्दील हो गया था.

राहुल सिहर गया. उसने अपने रूममेट और दोस्त ओ.पी. को देखा. छह फुट तीन इंच लंबा वह बांस का लाठ, जिसकी गर्दन हंस या बगुलों जैसी लंबी और नाजुक थी और उसके चलने पर हर कदम लचकती थी, वह भीड़ के बीच तन कर खड़ा था. उसका दुबला-पतला लंबोतरा चेहरा अंगारे की तरह दहक रहा था.

राहुल चुपचाप ओ.पी. के पीछे पहुंचा और उसको बाहों में लपेटते हुए बोला, 'अबे ओ गिनीज़ बुक के कंटेंडर, अपने लिए कोई ठिगनी-सी लड़की देख. इन्हीं में कहीं होगी. गुंडों से लड़ने-भिड़ने की बात भूल जा. धोखे से कहीं एक पड़ गयी तो तेरा ये महान ढांचा दस ज़गह से टूटेगा.'

'शट अप! ये मज़ाक का टाइम नहीं है.' ओ.पी. बौखलाया लेकिन जब राहुल ने उसे और कस कर दबाया तो वह खांसते हुए हँसने लगा.

'छोड़ बे छोड़!'

पच्चीस लड़कों की एस.एम.टी.एफ. बनी थी. स्पेशल मिलिटेंट टास्क फोर्स. सरिया, खुखरी, रामपुरी, हॉकी की स्टिक, बघनखे, साइकिल की चेन और लाठी-डंडों के अलावा प्रताप परिहार ने तीन देसी कट्टों का इंतज़ाम किया था.

राहुल और मधुसूदन ने चे ग्वेवारा की किताब *वेंसेरेमॉस* से कॉकटेल मोलोतोव बनाने का फार्मूला उड़ाकर दस सोडे की बोतलों में पेट्रोल, कास्टिक सोडा और किरचें वगैरह भरकर मोलोतोव तैयार किये थे. सापाम और कार्तिकेय ने बारूद, पोटैश, सीसे के छर्रे, कांच और कीलों से देशी 'हैंड ग्रेनेड' बनाये थे, जो पटकते ही फूटकर तबाही मचा सकते थे. ये आयुध हॉस्टल की छत से, अगर रात में गुंडे आएं, तो ऊपर से उनकी जीप पर फेंकने के लिए थे.

'वेंसेरेमॉस वेंसेरेमॉस! हम होंगे कामयाब...होंगे कामयाब एक दिन! हो हो हो! मन में है विश्वास!'

हॉस्टल के वार्डेन चंद्रमणि उपाध्याय की हालत उस रात के बाद किसी सशंकित और घबराये हुए चूहे जैसी हो गयी थी. उन्हें पिछले कुछ ही दिनों में लड़कों के व्यवहार में आने वाला बदलाव साफ-साफ दिखाई देता था. नमस्ते का सूचकांक अत्यंत नीचे लुढ़क चुका था और कभी-कभार चिल्लर की तरह एकाध नमस्ते पिछले भव्य और रुतबेदार दिनों की याद दिलाता हुआ आता भी था, तो या तो वे उनके अपने विभाग के लड़के होते थे या फिर अपना मतलब सांटने की जुगत भिड़ाते पक्के धूर्त. उपाध्यायजी की दृष्टि लड़कों को पहचानने के मामले में अचूक, शब्दबेधी दृष्टि थी, फिर भला अपना ही गोत्र पहचानने में वे धोखा कैसे खाते? पहले जब वे हॉस्टल के गलियारे में निकलते थे, तो उन्हें देखते ही लड़के किनारे हटते हुए, अदब और नमस्ते के साथ उन्हें रास्ता देते थे. अब लड़कों का झुंड गलियारे में किसी अजनबी मकोड़े की तरह उनको देखकर भी अनदेखी करता हुआ, आपस में बातें करता बढ़ता चला आता. डर के मारे वे खुद दीवार के साथ लग जाते. क्या पता साले कहीं धकिया न दें.

और, जैसा कि कहा जाता था, देश और दिल्ली में आया हुआ प्रविधि और सूचना का युग किसी तरह घिसटते-पिसटते इस युनिवर्सिटी तक भी पहुंच गया था. हर किसी के बारे में ढेरों सूचनाएं लड़कों के पास होती थीं. हॉस्टल कॉम्प्लेक्स से थोड़ी ही

दूर एक 'मैक्स कम्प्यूटर सेंटर' खुल गया था, जहां लड़कों ने विश्वविद्यालय के कई अधिकारियों और अध्यापकों के बारे में 'डि-फैक्टो' फाइल खोल रखी थी. इस काम में सबसे सक्रिय था, असम से मैथमेटिक्स डिपार्टमेंट में आया हुआ छात्र हेमंत बरुआ. वह 'निट' से ई-कॉमर्स भी साथ-साथ कर रहा था. शतरंज का कमाल का खिलाड़ी और डाटा तथा आंकड़े इकट्ठा कर उनकी प्रोसेसिंग में हैरतअंगेज प्रतिभा रखने वाला, घुंघराले बालों और नन्हीं-मिचमिची, मुस्कराती आंखों वाला सांवला-ठिगना लड़का. हेमंत हर रोज़ राहुल के साथ लगभग एक घंटा शतरंज खेलता था. राहुल ने जब उससे अंजली की बात बताई तो उसने कहा—'बस, ज़रा-सा वेट करो, हम तुमको उस लड़की का पूरा प्रोफाइल बनाकर दे देगा.'

बहरहाल, 'मैक्स कम्प्यूटर सेंटर' में हॉस्टल के वार्डेन डॉ. चंद्रमणि उपाध्याय की जो 'डि-फैक्टो' फाइल खुली थी, वह इस प्रकार थी :

नेम : डॉ. चंद्रमणि उपाध्याय. **एज :** फिफ्टी फाइव, इयर्स सेवेन मंथ्स फोर डेज़. **मेराइटलः** मैरीड बट लेफ्ट हिज़ वाइफ पंडिताइन इन हिज़ विलेज इन यू.पी. विद सिक्स चिल्ड्रेन. नाउ लिव्स विद हिज़ मिस्ट्रेस हू राइट्स अबाउट वीमेन इश्यूज़. **प्रॉपर्टीः** बॉट टू फ्लैट्स एंड थ्री प्लॉट्स इन सिटी, बट स्टेज़ इन हॉस्टल्स वार्डेन्स अपार्टमेंट. बिसाइड पी.एफ. एंड सैलरी ओन्स वेरियस पॉलिसीज़. हैज़ क्रेडिट कार्ड. प्लेज़ सट्टा एंड पुट्स मनी इन शेयर मार्केट. **कमेंटः** पक्का तिकड़मबाज. सॉलिड स्टेनलेस स्टील चम्मच ऑफ वी. सी. मिस्टर अशोक अग्निहोत्री. (इसके बाद किसी छात्र ने इस फाइल में एक क्षेपक और जोड़ा था.) **स्पेशल एडीशन :** उपाध्याय जी का सारा खाना खर्चा हॉस्टल के बजट से चलता है. सब्जी-राशन से लेकर स्टेशनरी और टैक्सी भाड़ा हॉस्टल के खाते से. अपने एक भांजे और दो भतीजों को युनिवर्सिटी में फिट करा चुके हैं. अपनी रखैल की थीसिस एक गरीब दलित लड़के से लिखवा कर पी-एच.डी. प्रदान करवा चुके हैं. राज्य के पी.डब्ल्यू.डी मिनिस्टर एल. के. जोशी के रेगुलर दरबारी हैं. ही क्लेम्स दैट ही इज़ अ मार्क्सिस्ट बट इन एक्चुअलिटी ही इज़ कट्टर ब्राम्हनवादी.

सुबह आकाश में बादल नहीं थे. बहुत दिनों बाद नया-धुला चमकीला सूरज निकला था. राहुल के कमरा नंबर 252 की खिड़की के एक कोने से तिरछी नारंगी किरणें कूदकर उसके बिस्तर पर गिरकर गौरैयों की तरह फुदक रहीं थीं. ओ.पी. नहाने के लिए बाथरूम गया हुआ था और राहुल माधुरी दीक्षित के बगल से, खिड़की के बाहर देखता हुआ, ब्रश कर रहा था. कमरे के एक कोने में हीटर के ऊपर चाय की पतीली चढ़ी हुई थी. मेस में नाश्ते के साथ एक बार ही चाय मिलती थी, जबकि ओ.पी. और राहुल दोनों दिन भर में दसियों कप चाय सूंट जाते थे. इसीलिए कमरे में उनका यह अपना जुगाड़ था.

हॉस्टल पहाड़ी पर था. आगे घाटी की ढलान थी. इसके बाद एक बहुत बड़ा समतल मैदान था, जिसके उस पार सिटी हॉस्पिटल, बैंक और पोस्ट ऑफिस थे. रिहायशी कालोनी उसी के साथ लगी हुई थी. उस मैदान में क्रिकेट और फुटबॉल के मैच होते थे. कमरा नबर 252 से, अगर टेलिस्कोप हो, तो बिना वहां गये, पूरा मैच देखा जा सकता था. यह युनिवर्सिटी का ही प्लेग्राउंड था. सड़क ने उस मैदान के चारों ओर एक अर्द्धवृत्त-सा बना कर उसे घेर रखा था.

तभी राहुल ने दूर, रिहायशी कालोनी की ओर सड़क पर एक पीले रंग के धब्बे को धीरे-धीरे सरकते हुए देखा. सुबह की धूप में जलता हुआ पीला चमकीला रंग.

लेकिन यह पीला रंग कुछ अलग-सा लग रहा था. दूसरे पीलों से बिल्कुल अलग. क्योंकि यह राहुल की आंखों से होकर रक्त में घुलता हुआ सीधे उसके हृदय तक पहुंच रहा था और अचानक ही उसे महसूस होने लगा था जैसे उसकी धड़कनें बढ़ गयी हैं. उसके कानों तक उन स्पंदनों की आवाज़ पहुंचने लगी थी.

धक्...धक्...धक्...!

एक अजब तरह की उत्कंठा ने राहुल को घेर लिया. उसे अपना कमरा अचानक बहुत छोटा और संकरा लगने लगा. कहां से वह उस रेंगते हुए पीले रंग को और ज़्यादा, और पूरा देखे. अभी कुछ ही पल में वह उस सड़क पर चलता हुआ, इस कमरे की खिड़की पर फेबिकोल द्वारा चिपकी माधुरी दीक्षित की गुलेल से चोट खाई हुई पीठ के पीछे छिप जाएगा. उसके बाद उसको और देख पाना असंभव होगा. काश मेरे पास एक बायनाक्युलर होता.

निश्चित ही वह पीली छतरी थी, जो प्लेग्राउंड को घेरने वाली सड़क पर तितली की तरह अपने नन्हें पंखों से धीमी रफ्तार में उड़ती हुई विश्वविद्यालय की ओर आ रही थी.

इसके नीचे वह होगी. वह, जिसे मैंने उस दिन देखा था. अगर कहीं इस पीली छतरी के नीचे वही हुई तो? राहुल का पूरा शरीर जैसे किसी मद्धिम बुखार में तपने लगा. धड़कनें और बढ़ गयीं... एक ऐसी बेचैनी, जो उसकी देह में अंट नहीं पा रही थी. उसकी सांसें रुक गयीं थीं... पलकों ने झपकना बंद कर दिया था. कुछ पल यों ही गुज़रे और देखते-देखते माधुरी दीक्षित ने उस पीली छतरी को ढंक लिया. शिट्...! शिट्...! यह असह्य था. पहली बार राहुल को माधुरी दीक्षित और उसकी पीठ पर बेतहाशा गुस्सा आया. ये फ़िल्म नहीं है, ये ज़िंदगी है... ज़िंदगी. मैडम, इट्स नॉट एन इमेज... इट्स अ रियलिटी. अंडरस्टैंड?

राहुल ने ज़ल्दी-ज़ल्दी पैंट चढ़ाया, टी-शर्ट पहना. उसके मुंह में अभी तक टूथपेस्ट का झाग भरा हुआ था. और वह सीढ़ियां फलांगता हुआ भागा. एक साथ तीन या चार सीढ़ियां कूदता हुआ.

उसे जल्द से जल्द घाटी के उस मोड़ तक पहुंचना था, जहां से वह अपना संदेह मिटा सके. हे ईश्वर! इस पीली छतरी के नीचे वही हो. वही... वही.... अगर कोई और हो तो? तो? हे ईश्वर! छतरी के नीचे जो भी हो, तू उसे वही कर दे...वही...! आय विल बी ग्रेटफुल फॉरएवर.

शॉर्टकट काफ़ी पथरीला और झाड़-झुरमुटों से भरा हुआ था. वह कई जगह लुढ़कने

वाले गोल कंकड़ों में रपटकर फिसलते-फिसलते बचा. इसके बाद किसी तेंदुए की तरह, बिना अपने पैरों से कोई आहट पैदा किये, वह आख़िरकार उस चट्टान तक पहुंचा, जिसके पीछे छिपकर वह सड़क को साफ-साफ देख सकता था.

आह...! ...यह वही थी. अंजली जोशी. उसने गहरे कत्थई रंग का, हलके लाल फुलकारियों वाला हैंडलूम का स्लीवलेस कुर्ता पहन रखा था. गहरे बैंगनी रंग की चुन्नी उसके कंधों पर थी. पक्का, ये नेचुरल वेजेटेबल डाइ है. कुदरती फूलों और पत्तियों का रंग. ओहो, तो आप पर्यावरणवादी और एथनिक टेस्ट की हैं. वंडरफुल. कहां से खरीदा इसे आपने? जयपुर से? यू आर सिंपली सिंपली ग्रेट. क्योंकि आपको ईश्वर ने ऐसा ही बनाकर भेजा है. लेकिन इस दुनिया में आप चैन से जीने नहीं दी जाएंगी. मुझसे लिख के ले लीजिये. ...चल मेरे संग नाल सारा जग छोड़ के...!

एक पत्थर राहुल के जूते ने धोखे से खिसका डाला और वह लुढ़कता हुआ सड़क की ओर वहीं गया, जहां से अंजली गुज़र रही थी. वह ठिठक गयी. हे भगवान! बड़ी-बड़ी चौंकी और अबोध आंखों ने चारों ओर पहले दौड़ लगाई फिर धीरे-धीरे चहलकदमी की. वे आंखें उस चट्टान की तरफ़ भी आईं, जिसके पीछे राहुल छुपा हुआ था, फिर निश्चिंत वे लौट गयीं. जैसे एक चौंकी हुई हिरणी ने अचानक चार-पांच चौकड़ियां भरी हों और फिर निश्चिंत हो गयी हो.

राहुल के मुंह में अभी भी टूथपेस्ट का झाग भरा हुआ था और मिंट की मीठी खुशबू उसकी सांसों में घुली हुई थी. वह उस पीठ को जाते हुए तब तक देखता रहा जब तक वह अगली मोड़ पर नीम के दो पेड़ों, जंगली बेर की एक झाड़ी और एक खूब बड़ी-सी वाहियात चट्टान के पीछे गायब नहीं हो गयी. शिट्!

जब वह लौटकर अपने कमरे में पहुंचा तो बौखलाए हुए ओ.पी. से उसका सामना हुआ. वजह यह कि कोने में, हीटर के ऊपर चाय की पतीली जलकर कोयला हो गयी थी और जली हुई चाय के धुएं से कमरा भरा हुआ था. 'सॉरी यार... वेरी सॉरी. रियली आयम सॉरी.'

'लेकिन तू गया कहां था? तेरी पैंट में इतनी मिट्टी और कीचड़ क्यों है? और ब्रश के बाद तूने मुंह नहीं धोया क्या...?' ओ.पी. ने उसे घूरते हुए कहा.

'धो लूंगा धो लूंगा यार ओ.पी... एक अर्जेंट काम याद आ गया था.' राहुल ने कहा.

फिर धीरे से फुसफुसाया...'पीले रंग का काम.'

इसे ओ.पी. नहीं सुन सका.

प्रोफेसर्स क्वार्टर 18-ए के ड्राइंगरूम में राहुल गोपाल द्विवेदी के साथ बैठा हुआ था. यह ड्राइंगरूम हिंदी विभाग के हेड आचार्य एस.एन. मिश्र जी का था. श्री श्याम नारायण मिश्र, एम.ए. पी-एच.डी., डी. लिट्, साहित्य शिरोमणि एटसेटेरा. यहां आने के पहले राहुल ने 'मैक्स कम्प्यूटर सेंटर' में मिश्रा जी की 'डि-फैक्टो' फाइल देख ली थी. ही हैज़ टू ड्राइंगरूम्स. वन फॉर हिज़ चेलाज़ एंड अनवांटेड विज़िटर्स एंड अदर फॉर हिज़ डिग्निटरीज़ एंड गर्ल्स.

अच्छा, तो यह पौराणिक भालू भी शौकीन है!

लंबी प्रतीक्षा के बाद पर्दा हिला और खादी ग्रामोद्योग की एक सफेद बनियान और खादी की ही लुंगी में एक नाइजर या द्रविड़ नस्ल के तिलकधारी गोलमटोल तुंदियल ने वहां प्रवेश किया. गोपाल द्विवेदी, जो कि हिंदी साहित्य में रिसर्च कर रहा था और 'डि-फैक्टो मिश्रा फाइल' के मुताबिक आचार्य जी का परम पट-शिष्य था, अचानक कारपेट पर मुंह के बल धराशायी हो गया. वह किसी लकड़ी के लाठ की तरह कालीन पर लंबा हो गया था, पट्ट. ओह तो यह है पट्ट शिष्य ! राहुल की हालत खराब थी. मैं क्या करूं? कौन-सा आसन मारूं? अचानक ही उसे महाभारत या ओम नमः शिवाय जैसा कोई सीरियल याद आया और उसने 'वत्स' या 'आर्य' जैसा कोई संबोधन अपने मुंह से निकल जाने से किसी तरह बचाया.

'सादर प्रणाम् आचार्य जी !' उसके मुंह से यही निकला.

गोपाल द्विवेदी को ओ.पी., कार्तिकेय, प्रताप परिहार सभी ने काफ़ी समझा-बुझाकर राहुल के साथ भेजा था. उसने अपना काम मुस्तैदी से किया. 'यह राहुल है, सर. यहां एंथ्रोपोलाजी में प्रीवियस कर रहा है. लेकिन साहित्य में इसकी गहरी रुचि है. इसी वजह से यह अपना विषय बदल कर हिंदी विभाग में आना चाहता है.'

'लेकिन अब तो बहुत देर हो चुकी है. पहला सेमेस्टर खत्म होने को है.' आचार्य जी ने राहुल को बहुत अरुचि के साथ देखा.

'यह अत्यंत विनम्र, अनुशासित और आज्ञाकारी छात्र है सर. इसके पहले ऑर्गेनिक केमिस्ट्री में एम.एस-सी. कर चुका है.' गोपाल द्विवेदी ने विनती के लहज़े में कहा.

'कौन-सा डिवीज़न मिला था ?' आचार्य ने राहुल को पहली बार सर से पांव

तक देखा.

'फर्स्ट सर!' राहुल ने कहा, 'ग्रेजुएशन में भी यही था.'

राहुल ने साफ देखा कि प्रसन्नता की जगह मिश्राजी के चेहरे पर बदहज़्मी की अभिव्यक्ति ने अपना आगमन दर्ज किया. गोपाल द्विवेदी ने फौरन ताड़ लिया. उसने बात संभाली—'यह मेरा लघुभ्राता समान है, सर. सदा आपके अधीन रहेगा. आप जो भी आज्ञा देंगे, उसे पूरा करने में यह प्राण न्योछावर करेगा. यह मेरी ओर से आप शपथ समझें, सर!'

पहली बार उस महिष-वर्णी, स्थूल, गोल-मटोल काया में मुदित होने के लक्षण दिखे. अत्यंत चपटी और फैली नासिका के नीचे स्थित अत्यंत मोटे अधरों में हँसी की एक क्षीण रेखा ने उपस्थिति दर्ज की और महाकुंभ जैसी गोलाकार तोंद में गुदगुद-सा कुछ दिखा. और तभी, इसी क्षण की ताक में बैठे गोपाल द्विवेदी ने मिट्टी का एक किलो वाला कुल्हड़, जो पॉलिथिन में बंद था, आचार्य के पार्श्व में रखी तिपाई पर टिकाया:

'प्रातःकाल शहर गया था. ब्रजवासी की दूकान संयोग से खुली दिखी. पंडित जगन्नाथ जी ने स्वयं आग्रहपूर्वक बुलाकर दिया था.' गोपाल द्विवेदी ने कहा.

'शकुन! शकुंतलाऽ! बालकों को चाय भिजवाओ.' आचार्य के गले से राग जैजैवंती प्रकट हुई. हालांकि इसमें पंचम का निषेध नहीं था. राहुल को पहली बार आश्वस्ति हुई. गोपाल द्विवेदी ने कहा था कि अगर आचार्यजी ने चाय पिला दी तो समझ लो काम बन गया.

'हमारे विभाग में राजनीति बहुत है. इनको समझा देना अपने अध्ययन पर ही ध्यान केंद्रित करें. समस्याओं आदि के लिए तुमसे या सीधे मुझसे संपर्क करें. किसी और को बीच में लाने की आवश्यकता नहीं है. और कल ठीक दस बजे मुझसे एक प्रार्थनापत्र के साथ विभाग में मिल लें.' आचार्य ने कहा. 'और तुम्हारी थीसिस किस अवस्था में है?'

'बस अंतिम दो अध्याय रह गये हैं, सर. सोचता हूं इस माह समाप्त हो जाएंगे. वो बहन के विवाह की समस्या न आई होती तो अब तक..!'

'समझता हूं. समझता हूं. लेकिन गति बढ़ाओ. पद विज्ञापित करने के लिए मुझ पर दबाव बढ़ रहे हैं. अभी जब तक मैं हूं, कुछ हो जाएगा. इसके बाद तो राधा रमण की बारी है. असली कान्यकुब्ज है. पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी जी के अनुसार उसी पत्तल में खाकर उसी में छेद करने वाला कृतघ्न.नमकहराम. इधर मेरे विरुद्ध प्रतिदिन कुलपति से मिल रहा है. हमारे अग्निहोत्रीजी भी तो ऐसे ही तत्वों को प्रोत्साहन देते हैं.' आचार्यजी ने क्षुब्ध स्वर में कहा. इसके बाद पहली बार वे राहुल पर कृपालु हुए:

'साहित्य में कुछ अभिरुचि है. उत्तम है. क्या-क्या साहित्य पढ़ा है अब तक ? काव्य अथवा गद्य ?'

'थोड़ा बहुत दोनों सर जी.' पता नहीं क्यों राहुल को 'सर' के बाद 'जी' लगाने

की आंतरिक इच्छा हुई.

'अच्छा-अच्छा. कुछ नामोल्लेख करो.'

'सर, दॉस्तयव्स्की का *क्राइम एंड पनिशमेंट*, तॉल्सतॉय का *वार एंड पीस* और *रिसरेक्शन* और कहानियां. *ओल्ड मैन एंड दि सी*, और टैगोर का *गोरा*, *गीतांजलि*, *घर और बाहर* मार्केज़ का *लव इन दि टाइम ऑफ कॉलरा*, मिलन कुंडेरा का *दि जोक*, इतालो कैल्विनो का *एडम एंड ईव*, अरुंधती राय का *गॉड ऑफ स्माल*...

'अच्छा! आजकल का आधुनिक साहित्य मॉडल लोग भी लिखा करती हैं ? हमने वो अरुंधती का कुछ पढ़ा तो नहीं, हां उसको लक्स के विज्ञापन में टी.वी. पर ज़रूर देखा है. मिस वर्ल्ड है न? ...और वो *ओल्ड मैन* किसकी रचना है? कुछ सुना हुआ लगता है.' आचार्य ने जिज्ञासा की.

'हेमिंग्वे की, सर! अर्नेस्ट हेमिंग्वे. और सर...' राहुल ने और बताना चाहा लेकिन आचार्य जी ने टोंक दिया.

'पाश्चात्य के अतिरिक्त कुछ भारतीय साहित्य भी पढ़ा है ?'

'हां सर! प्रेमचंद के उपन्यास, निर्मल वर्मा का *अंतिम अरण्य*, अलका सरावगी का *कलि कथा वाया बाइपास* विनोद कुमार शुक्ल का *नौकर*...!

'रासो पढ़ा है ? और घनानंद, मतिराम, बिहारी, देव?' आचार्य ने प्रश्न किया.

'नहीं सर!'

'और आलम, बोधा?'

'नहीं सर.'

'...और विद्यापति, सूर, तुलसी...?'

'तुलसीदासजी को सुना है सर. रामानंदजी का 'रामायण' सीरियल देखा है, और हमारे यहां रामलीला भी खूब होती है, दशहरे के टाइम पर. वैसे मां को सुंदरकांड पूरा याद था.'

'उत्तम. कल आ जाओ. परंतु यदि गंभीरता से हिंदी साहित्य को समझना चाहते हो तो आज ही आचार्य रामचंद्र शुक्ल का ग्रंथ *हिंदी साहित्य का इतिहास* पुस्तकालय से लेकर अध्ययन प्रारंभ कर दो.'

'कौन से शुक्लाजी सर?' राहुल ने हड़बड़ाहट और घबराहट में पूछा.

'हुम्...हुम्म...! हुम...हुम्म...!' आचार्यजी हँसे, 'गोपाल तुम्हें सब बता देगा. मेधावी छात्र है.'

'येस सर!'

चाय के बाद राहुल और गोपाल द्विवेदी सड़क पर आ गये. शाम ढल चुकी थी. परछाइयां गायब हो चुकीं थीं. अंधेरा धीरे-धीरे उतरने लगा था.

'थैंक यू गोपालजी. आपका बहुत-बहुत धन्यवाद.' राहुल ने कहा. गोपाल द्विवेदी ने दांत चिरा दिये.

'सूखे धन्यवाद से काम नहीं चलेगा राहुलजी. एडमीशन हो जाय तो छककर मिष्ठान्न होगा.'

'अवश्य-अवश्य! हम पर विश्वास रखें द्विवेदीजी.' राहुल बहुत खुश था. लेकिन तभी गोपाल द्विवेदी ने कहा, 'मुझे बस चिंता एक ही हो रही है कि उन्होंने लगता है आपको कहीं कनफ्यूज़ न कर लिया हो?

'मतलब?' बात राहुल की समझ में नहीं आयी.

'कुछ नहीं. मैं संभाल लूंगा. मेरा मतलब कास्ट से है.' गोपाल द्विवेदी ने बात को हल्का बनाते हुए कहा.

राहुल ने आकाश की ओर देखा. शाम को घिरने वाले बादल देर तक बरसते हैं. आज रात में पानी बरसेगा. उसके दिमाग में बार-बार आचार्य श्याम नारायण मिश्र का चेहरा घूम रहा था.

'इस देश के हज़ारों साल पुराने इतिहास में असंख्य जातियां, नस्लें, संस्कृतियां यहां आती रहीं और यहां आकर सब आपस में घुल मिल गयीं. कहां गये हूण, शक, कुषाण, मंगोल, आग्नेय ? क्या तुम आज सबको अलग-अलग खोज सकते हो?' किन्नू दा ने पूछा था. फिर उन्होंने एक ऐसी बात कही थी, जो राहुल कभी भूल नहीं सकता था.

किन्नू दा ने कहा था– 'देखो, आज जिस इंडियन मिडिल क्लास की बात इतनी ज़्यादा की जा रही है, तुम ऐसा करो कि उसी सवर्ण महा[illegible]गरी और खाते-पीते महान इंडियन मिडिल क्लास का कोई एक ऐसा परिवार चुनो, जिसकी चार पीढ़ियां उसमें मौजूद हों. मतलब, दादा-दादी से लेकर पोते-पोतियों तक. अब तुम सबको एक साथ बिठा दो और उनका एक ग्रैंड फेमिली फोटोग्राफ खींचो, जैसा बंबइया सिनेमा के आखिर में 'दि एंड' के पहले होता है. फिर उस फोटो को तुम एनलार्ज करा लो. और अब इसके बाद उस परिवार के जितने भी मेंबर हैं, उनका मारफोलॉजिकल विश्लेषण करो. ...हा! ...हा! ...हा!' किन्नू दा ने ज़ोरों से ठहाका लगाया था.

'मालूम है क्या होगा? वह एक अकेला फेमिली फोटोग्राफ हिंदुस्तान के पिछले हज़ारों साल के जेनेटिक इतिहास को खोल कर तुम्हारे सामने रख देगा. यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे. वे सारी नस्लें और जातियां, जो अतीत में कभी इस महादेश में आयीं, उन सबके वंशज, उनकी संततियां बिल्कुल संभव है कि एक ही मिडिल क्लास फेमिली फोटोग्राफ में तुम्हें मिल जाएं. याद रखो यही हमारे समाज का वह हिस्सा है, जो अपनी श्रेष्ठता की ग्रंथि का मारा हुआ है. शुद्धतावादी, सांप्रदायिक, भोगवादी, नस्लवादी महान् भारतीय सवर्ण मिडिल क्लास. उसकी ही फेमिली में कोई गोरा होगा, कोई काला, कोई भूरा या सांवला. कोई चपटी नाक और मोटे होंठ वाला होगा, कोई लंबी-पतली नाक, बड़ी-बड़ी आंख, प्रशस्त ललाट वाला. कोई पीला गोल-मटोल चेहरे का. हा...! हा...! हा...! ...सब मौजूद हैं! आर्य, द्रविड़, नाइजर, मंगोल, ऑस्ट्रिक...सब, एक ही पिंड में.'

किन्नू दा गंभीर हो गये थे—'यह देश मानव सभ्यता के इतिहास में अंडमान निकोबार, या अफ्रीका या आज के महान अमेरिका जैसा दुनिया से कटा कोई वूडूलैंड कभी नहीं था. यहां असंख्य आगंतुक आते रहे और यहीं का हो कर रह गये. तेरह से ले कर सतासी प्रतिशत तक जेनेटिक इंटरेक्शन यहां हुआ है. 'जेनेटिक इंटरेक्शन' का मतलब समझते हो? यह तब की बात है जब एड्स नहीं था, कंडोम भी नहीं था. हा...हा...हा...!'

राहुल की समझ में आज आया. ...तो हिंदी डिपार्टमेंट का हेड एस.एन. मिश्रा—वो ठिगना, मोटा, चपटी नाक, मोटे होंठ वाला कलूटा तिलकधारी, असलियत में 'अनार्य' या 'म्लेच्छ' के किसी बीज का फल है, जो उसकी किसी पूर्वजा की योनि में कभी छींटा गया होगा. मनुस्मृति की नसैनी लगाकर इस देश की सांस्कृतिक-सामाजिक सत्ता के सिर पर चढ़कर बैठा यह राक्षस आज वर्णाश्रम व्यवस्था की मुंडी बना घूमता है. रावण की हरामी औलाद साला. कभी मौक़ा लगा तो इसका 'जीन मैप' तैयार करके इसके 'डिफैक्टो' फाइल में ज़रूर डालूंगा.

राहुल ने गोपाल द्विवेदी की ओर देखा. वह खैनी मल रहा था.

'गोपालजी, तमिलनाडु की हेमा मालिनी और उत्तर प्रदेश के डॉ. एस.एन. मिश्रा में आर्य कौन है? कुछ बताएंगे आप ?'

गोपाल द्विवेदी ने खैनी फंकियाई और जीभ से उसे गाल में ठेलते हुए बोला, 'कैसा प्रश्न पूछ रहे हैं, राहुलजी?'

'आपके विचार से मिश्राजी ही होंगे, है न?' राहुल ने कहा. फिर उसने पूछा, 'और मैं? मैं क्या हूं...द्रविड़ कि आर्य?'

गोपाल द्विवेदी हँसने लगा. 'हिच्च...हिच्च...! अब एंथ्रोपोलॉजी भूल जाइये बंधुवर! आचार्य रामचंद्र शुक्ल का *हिंदी साहित्य का इतिहास* पढ़िये. हिच्च... हिच्च...हिच्च!'

'हूप...हूप... हू ऽप...!' राहुल ने भी गोरिल्ला की आवाज़ ज़ोरों से निकाली.

यह आवाज़ आकाश में घिरते बादलों की धीमी गड़गड़ाहट में घुलती हुई कैंपस में दूर-दूर तक गूंज गयी. उसमें कुछ ऐसा था कि गोपाल द्विवेदी को पहली बार कुछ बेचैनी-सी महसूस हुई.

अगले दिन राहुल का सारा समय हिंदी विभाग में अपना एडमीशन कराने की औपचारिकताओं में इस दफ़्तर से उस दफ़्तर तक दौड़ते-भागते बीता. बीच के लंच आवर में अणिमा, भगवत, राजू, सीमा फिलिप, राणा, और आभा से मुलाक़ात भी हुई. सभी उदास थे. राहुल को अचानक हिंदी साहित्य पढ़ने की ख़ब्त क्यों सवार हुई, इसका अंदाज़ा कोई नहीं लगा पा रहा था. ओ.पी. ने भी उससे कहा था—'ये अहमकपना, मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि आख़िर तू कर क्यों रहा है? अबे, दुबारा ठीक से सोच. बाद में पछताएगा.'

राहुल ने मुस्कराकर ओ.पी. को भींच लिया. 'यार वो जो चिड़िया होती है न! वो पट्ठी मेरा खेत चुग गई. अब पछताने से क्या होगा.'

'साले तूने एडमीशन मिलते ही हिंदी मुहावरों की प्रैक्टिस शुरू कर दी. तेरी तो...!'

राहुल ने एक चीज़ नोट की कि आज अणिमा एक बार भी नहीं हँसी. राहुल नहीं समझ सका कि वह उदास लड़की क्यों इस तरह आज उदास थी.

लेकिन उस दिन एक भी बार अंजली जोशी उस विभाग में नहीं दिखी. शायद उस दिन वह युनिवर्सिटी आई ही नहीं थी.

रात में ओ.पी., कार्तिकेय, प्रताप और प्रवीण मेस में खाने के बाद टहलने निकल गये. रास्ते में हेमंत बरुआ मिल गया. आज की तारीख पांच थी. हॉस्टल में गुंडों का हमला आठ से लेकर पंद्रह के बीच होता था. तय हुआ कि एस.एम.टी.एफ. की मीटिंग कल रात प्रवीण के कमरे में हो और इस बार गुंडों से सीधे-सीधे, आर-पार की लड़ाई हो जाय. परसों पोस्टमैन कैंपस में दिखा था. गंजियल फटीचर लेकिन खुर्राट अधेड़. साला पूरी लिस्ट गुंडों को देता है कि किस-किस स्टूडेंट के नाम कितने-कितने का मनीआर्डर या ड्राफ्ट आया. यह डर के मारे ऐसा करता है, या कमीशन के लालच में, पता लगाना मुश्किल था. राहुल ने हिंदी में डाकिये पर एक कविता पढ़ रखी थी और एक चीनी फ़िल्म देख रखी थी. इस डाकिये ने उस इमेज की ऐसी-तैसी कर दी थी. दरअसल एक ऐसा युग अचानक अवतरित हो गया था, कि हर किसी की ज़िंदगी का एक ही मकसद रह गया था—रुपया. पिछले दशक का 'गुस्सैल जवान हीरो' देखते-देखते 'लालची-खुर्राट-

सटोरिये' अधेड़ में बदल चुका था और उसके द्वारा एंकर किया गया टीवी प्रोगाम इस समय सुपरहिट था. प्रोग्राम का नाम था 'कौन बनेगा करोड़पति.'

सापाम तोंबा का भी ज़िक्र हुआ. उसने बोलना और हँसना छोड़ दिया है. बैडमिंटन कोर्ट में भी नहीं आता. आज मेस में भी दिखाई नहीं पड़ा था. उस पर क्या गुज़र रही है, इसका अंदाजा सभी को था.

केरल से आये मधुसूदन को कार्तिकेय और प्रताप ने समझा-बुझाकर रोक लिया था. यह तय किया गया कि कई लड़के मिलकर उसके फादर को एक चिट्ठी लिखें कि मधुसूदन को वापस बुलाने की ज़रूरत नहीं है. उसका कैरियर न बिगाड़ा जाय. डरने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है. हम सब साथ हैं.

तो ये ग्लोबलाइज़ेशन हो रहा है? पूरी दुनिया एक गांव बन रही है? सब कुछ अमेरिका हो जाएगा. अगर ऐसा है तो डॉ. वाटसन यहां से चले क्यों जाना चाहते हैं? सापाम तोंबा चुप क्यों है? मधुसूदन के फादर उसे वापस केरल क्यों बुला रहे है? ईसाई पादरी स्टेन्स अपने नन्हें-नन्हें बच्चों के साथ अपनी कार के भीतर जल क्यों रहा है? कलकत्ते के ग़ैर-बंगाली और मुंबई के ग़ैर मराठी डरे हुए क्यों है? कश्मीर के अल्प-संख्यक हिंदू अपना घर-जायदाद छोड़कर शरणार्थी बने हुए दर-दर क्यों भटक रहे हैं?

क्या अब इस युनिवर्सिटी में सिर्फ़ यहीं के लोकल लड़के ही पढ़ेंगे? यहीं के स्थानीय लोग ही अध्यापक और अधिकारी होंगे. राहुल को लगा जैसे यह विश्वविद्यालय और यहाँ के हॉस्टल इस देश के संघीय बनावट के 'डायरोमा' थे और अब वे विखंडित हो रहे हैं. क्षेत्रीयताएं, जातीयताएं और तलछट की घटिया, छोटी ताकतें अचानक बाहर की ओर फूट पड़ी है और इस देश के अब तक के बने सारे महा-रूपकों, और संघीय मिथकों का विनाश कर रही हैं.

उसने एक फ़िल्म देखी थी 'क्रिटर्स'. नन्हें-नन्हें, गोल-मटोल, गेंद की तरह लुढ़कने वाले 'क्रिटर्स', जो हर चीज़ को किट-किट-किट करते हुए देखते-देखते खा जाते थे. अचानक, कहीं से भी, एक साथ झुंड में वे प्रगट हो जाते और सामने पड़ने वाली हर चीज़ पर टूट पड़ते और उसे चट कर डालते.

वे यहां के नहीं थे. किसी और ग्रह से उन्हें पृथ्वी पर भेजा गया था. या फिर वहां से गिरने वाले किसी अजनबी अंडे से फूटकर वे खुद यहां पैदा हो गये थे. और उन्होंने अपनी संख्या देखते-देखते बेतहाशा बढ़ा ली थी. वे एक दिन समूची पृथ्वी को खाकर उसे भयावह उजाड़ में बदल डालने वाले थे. यह एक डरावनी फ़िल्म थी, जो वैज्ञानिक थी. साइंस फिक्शन.

'देख तो यार, ये लाइब्रेरी के सामने कौन-सा पोस्टर लगा है ?' प्रताप ने इशारा किया.

लाइब्रेरी के मुख्य दरवाज़े की बायीं ओर, जहां सीढ़िया खत्म होती थीं, दीवार पर एक तीन फुट बाइ दो फुट का पोस्टर चिपका था, जिसमें एक लड़की काले रंग की

मिनी स्कर्ट में, कमर पर हथेलियां टिकाये, अपने नितंबों को पीछे और छातियों को आगे धकेलने की कोशिश में अंग्रेज़ी के 'एस' जैसी हो गयी थी. लड़की के नीचे खूब मोटे अक्षरों में अंग्रेज़ी में लिखा था, जिसका हिंदी मतलब यह था :

शिप्रा इंटरनेशनल इंटरप्राइजेज द्वारा आयोजित

पहला ब्यूटी कांटेस्ट

फेमिना इंडिया द्वारा अधिकृत

'मिस वर्ल्ड' और 'मिस युनिवर्स' बनने का सुनहरा अवसर.

मॉडलिंग, अभिनय, विज्ञापन और फैशन के कैरियर में सबसे बड़ा मौक़ा.

तारीख : 10 सितंबर. दिनः रविवार. स्थानः युनिवर्सिटी ऑडिटोरियम.

समय : रात 9 बजे से 11:30 तक.

तारीख पांच सितंबर से पंद्रह सितंबर.

इन दस दिनों में इतनी घटनाएं एक के बाद एक घटती चली गयीं कि राहुल को लगा जैसे उसने किसी ऐंद्रजालिक तरीके से बनायी गयी फ़िल्म को अचानक 'फास्ट फारवर्ड' में एक साथ देख डाला है.

छह सितंबर को बुधवार था. उस दिन राहुल ने उठते ही, ब्रश करने और फ्रेश होने के पहले, आंखें मींचते हुए पहला काम यह किया कि अपनी रूमाल को पानी से भरे मग में बार-बार डुबाते हुए माधुरी दीक्षित की पीठ को इतना गीला कर डाला कि फेबिकोल ढीला पड़ गया और कमरा नंबर 252 की खिड़की की कांच से 'स्टार डस्ट' के 'सेंटर स्प्रेड' में छपा वह चित्र फर्श पर टपक पड़ा.

पानी में भीगकर काग़ज़ पारदर्शी हो गया था. माधुरी दीक्षित की आंखों और पीठ पर हीरो होंडा स्प्लेंडर और ईले ड्यूडरेंट दिखने लगे थे, क्योंकि उस पन्ने के पीछे की तरफ़ उन्हीं के विज्ञापन छपे हुए थे. न वहां हिरणी की चौंकी हुई आंखें थी, न सलमान खान की गुलेल से चोट खाई मांसल, कटावदार, उत्पीड़ित और मस्त पीठ.

राहुल ने रगड़-रगड़ कर अपने कमरे की खिड़की के कांच को खूब साफ कर डाला. अब वहां से घाटी के नीचे का समतल मैदान और उसे घेरने वाली अर्द्धवृत्ताकार सड़क साफ दिखाई देती थी.

बिना बायनाक्युलर के वह तितली की तरह दूर, धीरे-धीरे तैरते पीले रंग के उस चमकीले धब्बे को यहां से स्पष्ट देख सकता था, जिसके प्रगट होते ही उसकी सांसें तेज़ चलने लगती थी, और शिराओं में बहने वाला रक्त रफ़्तार पकड़ लेता था.

और उसके कानों में उसके अपने हृदय के धड़कनों की आवाज़ साफ-साफ सुनाई देने लगती थी.

धक्...धक्...! धक्...धक्...!

दि नाइट हैज अ थाउज़ैंड आईज़,
एंड दि डे बट वन.
येट दि लाइट ऑफ दि ब्राइट वर्ल्ड डाईज़

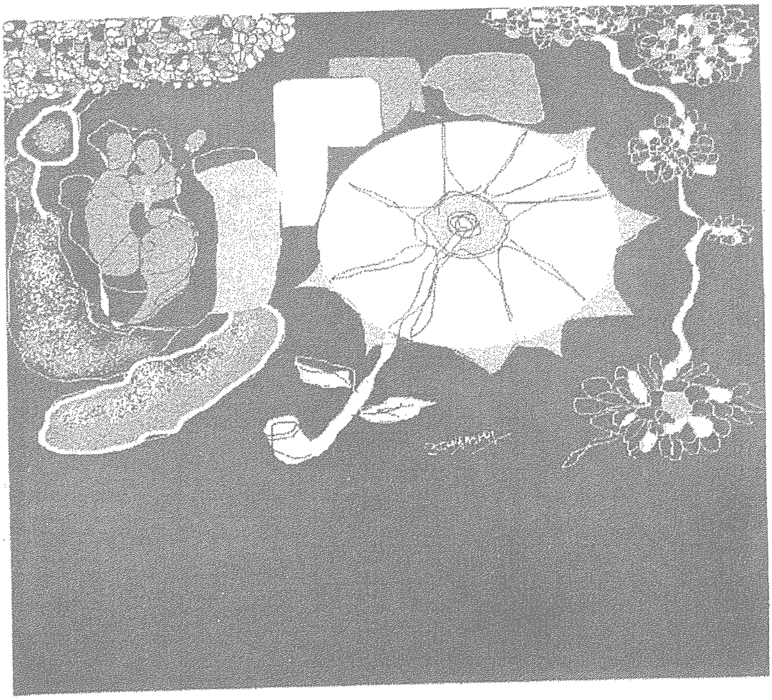

विद दि डाइंग सन

दि माइंड हैज़ थाउज़ैंड आईज़
एंड दि हार्ट बट वन
येट दि लाइट ऑफ अ होल लाइफ डाईज़
व्हेन लव इज़ डन!'

उसने झुक कर नीचे पड़े उस कागज़ के गीले टुकड़े को उठाया, जिसमें माधुरी दीक्षित का चित्र था और दरवाज़े के बाहर रखे डस्टबिन में उसे डाल दिया.

अलविदा मिसेज़ नेने! बाय...बाय...!

उस दिन पहली बार हिंदी विभाग में राहुल एम.ए. प्रीवियस के एक छात्र की हैसियत से गया. उसका एडमिशन हो चुका था. डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी पढ़ा रहे थे. विषय था 'भक्तिकाल का साहित्य'. भक्ति द्राविड़ी ऊपजी, लाये रामानंद. कबीर, तुलसी, सूर, दादू, मीरा, नाभादास, तुकाराम, ज्ञानेश्वर.

अच्छा तो त्रिपाठी जी, आपके मुताबिक सूरदास वगैरह...सन 1936 में मुल्कराज आनंद, सज्जाद ज़हीर, प्रेमचंद वाले पी.डब्ल्यू.ए. के मेम्बर थे, तुलसीदासजी सीपीआई के कार्यकर्ता और उन्होंने इमर्जेंसी को सपोर्ट किया था, जिससे खुश होकर इंदिरा गांधी ने उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया था. और कबीर दास आज अगर होते तो संडास बनाने वाली किसी कंपनी से ढाई लाख का पुरस्कार लेते हुए फोटो खिंचा रहे होते. श्रीफल और शाल के साथ. जिज्ञासा मात्र यह है कि त्रिपाठी जी, कि तुलसीदास का रामचरित मानस दरियागंज का कौन-सा प्रकाशक छापता और उसका विमोचन कौन-सा मंत्री करता? और मीराबाई किस सृजन पीठ पर आसीन होतीं?

प्रीवीयस में कुल मिलाकर अट्ठारह छात्र थे. बारह लड़के, छह लड़कियां. सारी लड़कियां दाहिनी ओर, एक-दूसरे से सटी हुई कुर्सियों पर एक साथ बैठती थीं. जैसे वह कोई अलग समुदाय हो. चंद्रा, लता, शर्मिष्ठा, पार्वती मेहंदाले, शुभा मिश्रा और वह.

वह, यानी अंजली जोशी .

विधाता गहरे असमंजस, ऊब और थकान के हाल में रहा होगा जब उसने हिंदी डिपार्टमेंट की इन कन्याओं की रचना की. वह इस सृष्टि के किसी अन्य प्राणी को बनाना चाहता रहा होगा, मसलन नील गाय, जिराफ़, हिप्पोपोटेमस, घड़ियाल, हाथी, मेढक, कछुए या घोड़े इत्यादि लेकिन उकताहट में आख़िर में उसने इन्हें बना डाला था. वे दुःखी, कुंद, अजीब और मानवीय आकार-प्रकार के समस्त नियमों का अपवाद सिद्ध होने के लिए बनी थीं. अपने-अपने घरों से खाना बांधकर लातीं और पीरियड्स के बीच के गैप में सबसे छुपकर झुंड में ही खाती थीं. एक दिन उन सबको झुंड में पी-एच.डी. करनी थी और फिर एक दिन अलग-अलग निज घर-बार बसाना था. लेकिन वे अक्सर चहकती हुई हँसती थीं. ऐसे में उनकी आंखें चमकदार हो जातीं, दांत निकल आते और वे दुपट्टे या साड़ी का पल्लू अपने मुंह की ओर लाने की कोशिश करतीं. उन्हें देखकर लगता कि

जैसे अभी भी 'उड़न खटोला,' 'अनमोल घड़ी', 'बावरे नैन' और 'बरसात' जैसी फ़िल्मों का ज़माना चल रहा है. इनमें जो सबसे आधुनिक होतीं, वे पटरी से खरीदी गयी सस्ती जींस की रेडीमेड पैंट के साथ कोई भी अनमैचिंग टॉप या शर्ट पहन लेतीं और तमिल फ़िल्मों की एक्स्ट्रा नज़र आतीं, या फिर अधिक से अधिक 'मेरा साया' फ़िल्म की हीरोइन साधना, जिसके जूड़े के भीतर स्टेनलेस स्टील का गिलास औंधा छुपा होता था. और वैसे ही लड़के. राहुल हिंदी विभाग में उसी तरह था, जैसे किसी टाइम मशीन ने उसे किसी और समय और स्पेस में पहुँचा दिया हो.

और इन सबके बीच थी अंजली जोशी.

क्या वह एलिस थी, जो फिलहाल इस आश्चर्यलोक में थी? या इस सुंदर जादुई देह के भीतर भी वही आत्मा थी जो देशी घी, अचार, एकादशी व्रत, सत्संग, छौंक-बघार, होम साइंस, मुंबईया सिनेमा और भावुक उपन्यासों की रासायनिक क्रिया द्वारा निर्मित होती है?

लेकिन छह सितंबर के ही खाते में यह भी दर्ज़ है कि राहुल का यह डर गलत निकला. तीन बजे उसके पुराने दोस्त आ गये. अणिमा, राणा, आभा, राजू, नीरा दीदी और रेणु. सभी कैंटीन गये. साथ में अंजली जोशी भी थी. गनीमत थी कि आज किसी लफूट ने रास्ते में पंगा नहीं किया.

एक-एक समोसा और एक-एक कप चाय. इसी मीनू के साथ राहुल ने हिंदी विभाग में अपने एडमीशन को सेलिब्रेट किया. ट्यूशन के पैसे अभी-अभी मिले थे, इसलिए कड़की अभी कुछ तारीखें दूर थी.

'तुम यहां सड़ जाओगे राहुल.' राणा ने कहा. 'हमें तो पता ही नहीं चला कि तुम्हारे भीतर हिंदी लिटरेचर का भूत कब से जागा.'

'इसे पढ़कर तुम करोगे क्या? लेक्चरर बनोगे? कोई ऐसा कोर्स करते जिसकी आज मांग है. पता है, जिन स्टूडेंट्स का एडमीशन हुआ है उनमें से कुछ तो वे हैं, जिनका कुछ और हो नहीं सकता था और कुछ बाकायदा वहां लाये गये हैं. डॉ. त्रिपाठी, अवस्थी, मिश्रा, तिवारी जी वगैरह हर साल ऐसी कोशिश करते रहते हैं, जिससे ये डिपार्टमेंट बंद न हो जाय.' राजू ने जानकारी दी.

'वो जो बलराम उपाध्याय है, वह डॉ. त्रिपाठी के घर खाना बनाने का काम करता है.' नीरा दीदी ने बताया.

'मैं जानती हूं राहुल ने एडमीशन क्यों लिया.' अणिमा ने पहली बार अपनी चुप्पी तोड़ी. उसके बोलने में कुछ ऐसा था कि राहुल को अपनी रीढ़ पर कोई चीज़ रेंगती हुई सी लगी.

'क्यों लिया?' नीरा दीदी ने पूछा.

'बताऊँ?' अणिमा ने राहुल को गहरी आँखों से घूरते हुए कहा.

'बताओ!' राहुल का गला सूख रहा था. उसका चेहरा घबराये हुए बच्चे की तरह अचानक संजीदा हो गया था, जो अपना कोई छोटा-सा राज़ सबसे छुपाए रखना

चाहता हो.

'बताऊँ?' अणिमा ने फिर कहा. यह एक विरक्त-सी, ठंडी, उदास लेकिन ठोस आवाज़ थी.

'बता न! पहेलियां क्यों बुझा रही है?' नीरा दीदी नाराज़ होने लगीं. सभी की आंखें अणिमा पर टिकी हुई थीं.

अणिमा उठ खड़ी हुई. उसने अंजली जोशी के कंधे पर हाथ रखा और कहा—

'अंजली, चल तू ही बता दे, कि राहुल ने एंथ्रोपोलॉजी छोड़कर हिंदी में एडमीशन क्यों लिया?'

'क्या मतलब?' अंजली जोशी की आंखें फैल गयीं.

'मतलब ये कि अगर तुझे जौंडिस न हुआ होता और एक्ज़ाम में तेरे पेपर्स न खराब हुए होते और तेरा एडमीशन कहीं और हुआ होता और उस दिन भुट्टा खाने तू हमारे डिपार्टमेंट में न आई होती तो ये बेचारा बच्चा अभी भी एंथ्रोपोलॉजी में होता!' अणिमा ने कहा. सब लोग हँस पड़े.

अंजली जोशी ने पहली बार राहुल को ठीक से देखा. राहुल हालांकि हँस पाने की भरपूर कोशिश कर रहा था लेकिन उसकी हँसी में कुछ ऐसा था जैसे वह अपना ज़ुर्म कुबूल कर रहा हो.

एक बुखार जैसा कुछ था, या एक धीमा नशा, जो राहुल पर छह सितंबर दिन बुधवार को तीन बज कर पैंतीस मिनट से चढ़ गया था. उससे कुछ बोला नहीं जा रहा था. एक चुप्पी थी जो इतनी गहरी और घुमावदार थी, कि बार-बार उसकी चेतना उसी में डूबने लगती थी. यह उसके जीवन का पहला, अनोखा, नया और अब तक का एक बिल्कुल अनजाना-सा अनुभव था.

वह अपने कमरा नंबर 252 में उस दिन सूरज ढलने के पहले ही आकर अपने बेड पर लेट गया था. खिड़की की कांच को उसने आज ही सुबह अपनी रूमाल से रगड़-रगड़ कर साफ किया था. उसने कई बार उठ-उठ कर खिड़की से बाहर देखा. घाटी की हरी-भरी झाड़ियां और पेड़ शाम की धूप में चुपचाप खड़े थे. यहां-वहां फैली सलेटी चट्टानों पर फिलहाल सुनहला रंग चढ़ा हुआ था. इसके बाद वह लंबा चौड़ा

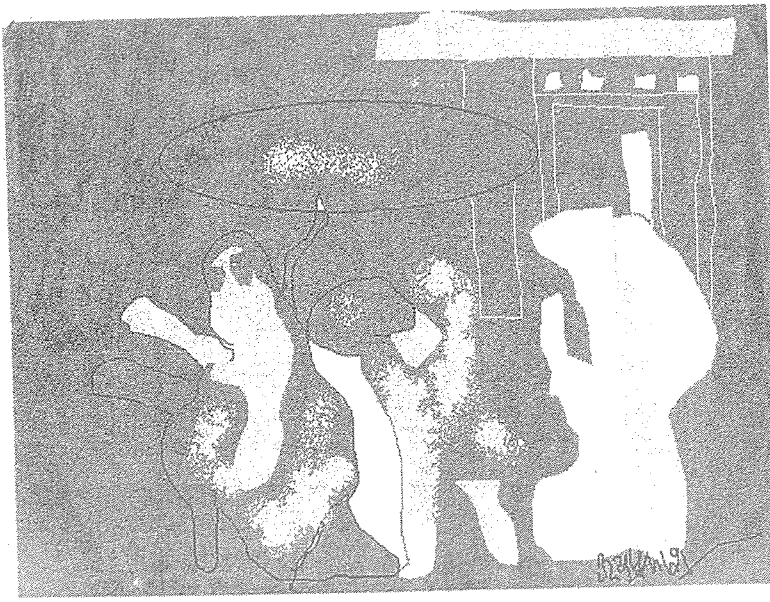

समतल मैदान था, जिस पर पेड़ों की परछाइयां लकीर की तरह हर पल लंबी होती जा रही थीं.

राहुल की आंखें दूर-दूर तक उस पीले रंग के धब्बे को खोजती रहीं, जो शायद अब वापस लौट रही होगी रेज़िडेंशियल कॉलोनी की ओर. बार-बार उसकी चेतना में अंजली का चेहरा कौंधने लगता. वह उसे अब भी देखे जा रही थी. लगातार उसने पलकें झपकाना बंद कर दिया था और उसकी चेतना में फ्रीज़ हो गयी थी.

लेकिन उन आंखों में गुस्सा नहीं था. बल्कि गुलेल की बंटी से अचानक चोट खा जाने की पीड़ा और उत्सुकता थी.

राहुल को कब नींद आ गयी थी, उसे पता नहीं चला. ओ.पी. उसे हिला-हिला कर जगा रहा था. 'खाना खाने नहीं चलना है क्या? मेस कब का शुरू हो चुका है! तेरी तबियत तो ठीक है?'

किसी तरह लड़खड़ाता हुआ राहुल उठा. बाथरूम जाकर उसने नल खोला और अपना सिर उसके नीचे रख दिया. यह एक नया पानी था. ताज़ा और ठंडा. लगभग छह बजे वह सोया था और अब साढ़े आठ बज रहे थे. इस ढाई घंटे की नींद में एक बहुत लंबा समय बीत गया था. वह सब कुछ किसी और जीवन का हिस्सा था, यह जो एक खुमारी, हल्का-सा बुखार जैसा कुछ है, यह एक दूसरा ही जीवन है.

राहुल ने अपनी आंखों में ठंडे पानी के छींटे मारे. मैं जाग तो रहा हूँ न?

'तू नीचे पहुंच मेस में. मैं जा रहा हूं.' ओ.पी. ने बाहर से आवाज़ लगाई.

मेस में हेमंत बरुआ मिला. वह अभी-अभी चेस में प्रोफ़ेसर अग्रवाल को मात देकर आ रहा था. हेमंत ने दो बातें बताईं. पहली यह कि सापाम तोंबा दो दिन से कहीं दिखाई नहीं दे रहा है और उसके कमरे के दरवाज़े पर लॉक लगा हुआ है.

और दूसरी बात यह कि राहुल ने हिंदी विभाग में एडमीशन लेकर इसलिए भयानक गलती की है क्योंकि उस विभाग मे चपरासी से लेकर हेड ऑफ दि डिपार्टमेंट तक सब के सब ब्राह्मण हैं. एम.ए. प्रीवियस में भी राहुल, शालिगराम और शैलेंद्र जॉर्ज के अलावा बाकी सभी .

आंकड़ों, सूचनाओं और तथ्यों को इकट्ठा करने और उनकी प्रोसेसिंग में हैरतअंगेज प्रतिभा रखने वाला, एम.एस-सी. मैथमेटिक्स का, असम के डिब्रूगढ़ से आये हेमंत बरुआ के मुताबिक हिंदी विभाग में जाति के आधार पर ब्राह्मणों और ग़ैर-बाह्मणों का अनुपात लगभग 88 प्रतिशत और 12 प्रतिशत का था. यही नहीं, यहां से पी.एच-डी. करके निकलने वाले और बाहर नौकरी पाने वालों का भी आंकड़ा यही.

बरुआ ने कहा- 'राहुल यू हैव गाट एंटर्ड इन टु अ लेब्रिंथ, व्हेयर दे विल लिंच यू वन डे. बी वेयर. नथिंग इज़ टू लेट.'

दोनों जानकारियां ऐसी थीं, जिन्होंने राहुल को चिंता में डाल दिया. सापाम कहां

गया? उसकी आंखों के सामने इंफाल से आये उस सुंदर, गोल-मटोल लड़के का चेहरा घूम गया.

रात किस तरह बीती राहुल को होश नहीं था.

लेकिन उस बेहोशी में भी पीले रंग की एक छतरी तितली की तरह धीरे-धीरे उड़ती हुई नीचे की अर्द्ध-वृत्ताकार सड़क के ऊपर घाटियों की ओर चुपचाप चली आ रही थी और हर पल इतनी बड़ी होती जा रही थी कि उसने राहुल की पूरी नींद को अपने नीचे घेर लिया था. दूर, उसके भीतर, किसी अबोध, अनाथ बच्चे की तरह राहुल निश्चिंत सो रहा था.

कुछ-कुछ उस तरह, जिस तरह सृष्टि के प्रलय के बाद अथाह समुद्र की लहरों पर तैरती-उतराती कल्पतरु की एक नन्हीं-सी पत्ती पर नन्हां-सा ईश्वर सोता है. अपनी अगली सृष्टि के पुनर्स्वप्न में लीन.

यह किसी पूर्व निर्धारित नियम जैसा था कि हिंदी विभाग में राहुल की दोस्ती शैलेंद्र जॉर्ज और शालिगराम के साथ ही सबसे ज़्यादा और सबसे पहले हुई. अपने आप ही, बिल्कुल सहजता से, वे तीनों क्लास में एक साथ, एक-दूसरे के नजदीक बैठने लगे. आपस की बातचीत में यह पता चला कि बाकी छात्र किसी न किसी अध्यापक के या तो रिश्ते में है या किन्हीं अन्य कारणों से उनके निकट हैं. वे अपने-अपने भविष्य के लिए आश्वस्त और बेफ़िक्र लड़के थे. विभाग में चलने वाली राजनीति के वे ज़्यादातर प्यादे थे. उनकी रुचि साहित्य या किताबों में कम और डिग्री, नियुक्ति, प्रोमोशन, फ़ैलोशिप आदि हथियाने के गुर सीखने में ज़्यादा थी. वे बहुत तेजी से यह प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे. उनकी जैविक आनुवांशिकता में कुछ गुणसूत्र ऐसे थे, जिससे वे यह विद्या उतनी ही सरलता से सीख रहे थे, जितनी सरलता से गिलहरी पेड़ पर चढ़ना, मछली पानी में तैरना, पनडुब्बी गोता लगाना या घूस किसी दीवार में बिल बनाकर घर में घुसना सीखता है.

शैलेंद्र जॉर्ज ने बताया, उसके पिता जब तक हिंदू थे, तब तक डोम थे. तीस साल पहले वे 'कनवर्ट' हुए. शालिगराम जाति से कोरी था. वह बताता था कि सवर्णों ने, और खासतौर पर ब्राह्मणों ने ऐसी कहावतें और किस्से गढ़ रखे थे, जो कोरियों की मूर्खता और उनकी बुद्धिहीनता को कोरी जाति का अनिवार्य सहजात चरित्र सिद्ध करने के लिए गढ़े गये थे.

एक किस्से के अनुसार एक कोरी को एक बार सपने में दिखा कि उसके घर के पिछवाड़े, जहां पर जलाऊ लकड़ियों का ढेर है, वहां एक-एक क्विंटल गेहूं भरने वाले पांच ऐसे जूट के बोरे रखे हुए हैं, जिनमें रुपये हैं. कोरी जब नींद से जागा, तो वह यों ही अपने स्वप्न के बारे में सोचता हुआ अपने घर के पिछवाड़े लक्कड़खाने की ओर गया और उसके आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने वहां लकड़ियों के ढेर के बीच सचमुच पांच बोरों को रखे हुए पाया. कोरी ने चीख-चीख कर अपने पड़ोसियों को इकट्ठा कर लिया और उनसे उसने अपने सपने की बात बताई.

कोरी के पड़ोसियों ने पांच बोरों में रखे करोड़ों रुपयों के नोटों और सिक्कों को देखा. उन्होंने एक दूसरे से बातचीत की और फिर कोरी को समझाया कि इन बोरों में

दौलत तो खूब है, लेकिन दौलत का दाना कम और दौलत का भूसा ज़्यादा है. तुम इसका भूसा साफ कर के असली दाना घर ले जाओ.

किस्से के अनुसार कोरी के परिवार की औरतों ने सूपे से बोरों में रखी दौलत को फटक कर भूसा साफ किया और दौलत के दाने को घर ले गयीं. भूसे में नोट थे, हल्के कागज़ के—सौ, पांच सौ, दस-बीस के. भूसे की तरह उड़ जाने वाले. इस तरह पांच बोरों से कोरी के घर की औरतों ने जो दौलत के दाने सिक्कों-चिल्लरों, चवन्नियों-अठन्नियों और कौड़ियों की शक्ल में इकट्ठा की, वह ढाई हज़ार रुपयों के बराबर थी.

अब भूसा बटोरने वाले कोरी के पड़ोसी करोड़पति हो चुके थे और स्वप्न देखने वाला कोरी 'कौड़ीपति' के रूप में इस सवर्ण-गाथा का नायक बना. दिलचस्प यह था कि छोटी जातियों के बारे में फैलाई गयीं ऐसी अनेक कथाओं के अंत में हमेशा किसी न किसी ठहाके की गूंज सुनाई देती थी, जो शताब्दियों पुरानी थी.

ठगों का एक पूरा इतिहास था, जिसमें छली गयी जातियों, समुदायों और मनुष्यों की निश्छलताओं और सीधेपन के तमाम किस्सों के अंत में ऐसे ही रस भरे, क्रूर, असभ्य, अघाये और ताकतवर ठहाके थे.

ऐसा ही एक समवेत ठहाका हिंदी डिपार्टमेंट में पीरियड गैप के बीच उस दिन लगा, जब डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी के घर खाना बनाने वाले स्टूडेंट बलराम उपाध्याय ने कोरी जाति के बारे में एक नया किस्सा सुनाया. उस समय क्लास की लड़कियां अपने-अपने टिफिन से, झुंड में, सबसे छुपकर, घर से लाये गये पराठे खाने बाहर गयी हुईं थीं.

बलराम उपाध्याय का किस्सा यह था.

एक बार एक कोरी की शादी हुई. दूसरे दिन उसके पड़ोसी दोस्तों ने, जो जाहिर है कि सवर्ण जातियों के थे, कोरी से पूछा कि 'तूने अपनी नयी-नयी बीवी को रात में कलेवा (नाश्ता) कराया कि नहीं? कोरी ने लड्डू, पेड़े, मोतीचूर, जलेबी का पूरा मीनू गिना डाला, जो उसने अपनी बीवी को प्यार से खिलाया था.

कोरी के दोस्त हँसने लगे कि देखो इस बेवकूफ़ को, इसे कुछ भी पता नहीं इस पाजी ने अपनी दुल्हन के दूसरे मुंह को तो अभी तक नाश्ता ही नहीं कराया. बेचारी अभी तक भूखी बैठी है. इसे तो ये भी नहीं मालूम कि औरत अपने उस मुंह से जलेबी और मोतीचूर नहीं, कोई और ही चीज़ खाती है.

कोरी ने बहुत मिन्नतें की कि वे उसे बता दें कि अपनी दुल्हन को वह कौन-सी मिठाई या पकवान खिलाये. दोस्तों ने कोरी की अज्ञानता पर पसीज कर उसे सलाह दी कि वह अभी जा कर अपनी दुल्हन के दूसरे मुंह को दातून-ब्रश के साथ कुल्ला वगैरह करा दे, फिर उनको बुला ले. वे उसे कलेवा-नाश्ता खुद करा देंगे. अगर दोस्त, दोस्त के काम न आये, तो दोस्ती किस काम की.

बहरहाल इस सवर्ण किस्से के अनुसार उस कोरी ने जाकर अपनी नयी-नवेली

दुल्हन से उसके दूसरे वाले मुंह और पेट के बारे में पूछा. दुलहन भी हालांकि भोली और ना-समझ थी, फिर भी उसने अपना दिमाग़ भिड़ाया और लजाते-लजाते अपने दूल्हे को अपना वह मुंह दिखाया. दूल्हे ने अपने दोस्तों द्वारा दिये गये दातून, टूथपेस्ट और ब्रश का इस्तेमाल किया और कुल्ला वगैरह करा के उस मुंह को धोया-पोंछा. फिर उसने अपने दोस्तों को सूचना दी.

वे आये और बारी-बारी से उन्होंने कोरी की नयी-नवेली दुल्हन को नाश्ता, ज्यौनार और बियारी यानी ब्रेकफास्ट, लंच और डिनर कराया.

इसके बाद हिंदी विभाग के एम.ए. प्रीवियस के उस क्लास रूम में ठहाके लगे. जलते, सुलगते, अश्लील, अघाये और अमानुषिक ठहाके. इन ठहाकों की उम्र सदियों पुरानी थी.

राहुल ने शैलेंद्र जॉर्ज और शालिगराम को देखा. बारह स्टूडेंट्स के बीच वे तीन एक तरफ़ थे, नौ दूसरी तरफ़. ठहाके दूसरी तरफ़ से आ रहे थे. बोकारो या भिलाई स्टील प्लांट में हज़ारों-लाखों डिग्री के तापमान वाली भट्ठियों से अंगारों की तरह दहकता हुआ जो लौह अयस्क द्रव की तरह खौलता हुआ बहता है, जिस पर गिरते ही आदमी भाप बन कर हवा में उड़ जाता है... उससे भी ज़्यादा गर्म और लपलपाते ठहाके. ये आवाज़ें ठहाकों की नहीं, जातीय घृणा की उस मध्यकालीन आग की थीं, जो द्रव की तरह उस पौराणिक भट्ठी से निकल कर बहती हुई उनके कानों में घुस रही थीं.

राहुल ने उन हँसते हुए चेहरों को देखा. विमल शुक्ल, विनोद वाजपेयी, बलराम उपाध्याय, विजय पचौरी, कमल त्रिपाठी, राम नारायण चतुर्वेदी, सुदीप पंत, विभूति प्रसाद मिश्र. वे सबके सब 'क्रिटर्स' थे. गेंद की तरह लुढ़कने वाले, डरावने, सर्वभक्षी 'क्रिटर्स'. किसी दूसरे ग्रह या दानव लोक से उन्हें पृथ्वी के इस हिस्से में भेजा गया था. या परलोक से गिरने वाले किसी अजनबी अंडे से फूट कर ये यहां खुद निकल आये थे और धीरे-धीरे उन्होंने अपना एक तंत्र बना डाला था. वे हर जगह थे. भाषा में, राजनीति में, मंदिरों में, संसद में, प्रशासन, पूजा-पाठ, जन्म-मरण, खाने-पीने की चीज़ों से लेकर दवाइयों और सूचना-संचार माध्यमों तक. अख़बार, किताबों, विश्वविद्यालय, टी.वी. चैनलों, बैंकों से लेकर कविता, कला और विचारों तक.

वे 'क्रिटर्स' थे. सबसे पहले उन्होंने पृथ्वी के इस हिस्से के सूरज को खाकर इतिहास में एक ऐसा अंधेरा पैदा कर डाला था, जिसके भीतर कोई उनके चलते हुए शाश्वत भूखे जबड़ों और चमकीले, धारदार, विषैले दांतों को न देख सके. उन्होंने बुद्ध को खा डाला था, जातक कथाओं, उपनिषदों और लोकगाथाओं को खा डाला था. उन्होंने ईसा, मूसा, पीर-पैगंबर, सूफी-संत सबको चट कर के, उनकी हड्डियों की खाद बनाकर, उसे अपने उन विषैले पेड़-पौधों की जड़ों में डाल दिया था, जिनके फल सदियों से धरती के इस हिस्से में रहने वाले करोड़ों भोले-भाले निवासियों के

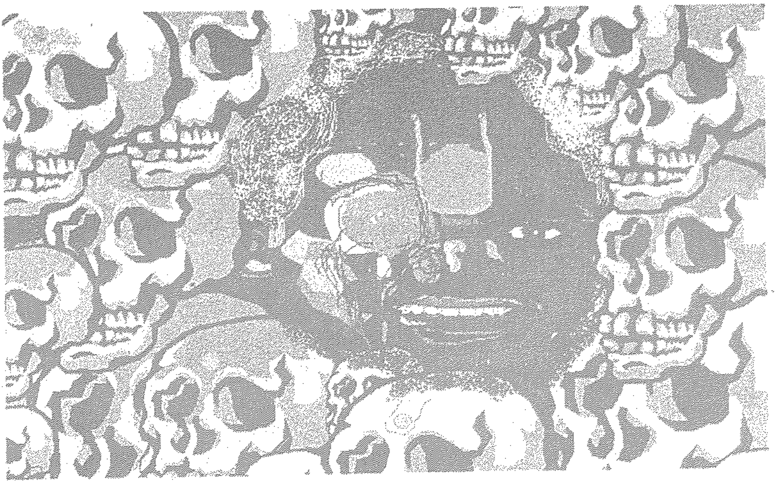

संस्कारों में लटके हुए थे.

शालिगराम का चेहरा मटमैला और धूसर हो गया था. अपमान और ग्लानि की कालिख ने उसका रंग स्याह कर दिया था. शैलेंद्र जॉर्ज की आँखों में भय था.

'शट अप! होल्ड योर फिल्दी टंग्स...बास्टर्ड्स!' राहुल उठ कर खड़ा हो गया. 'हिंदी लिटरेचर और हिंदू धर्म ने तुम्हें यही सिखाया है रावण की औलादो! कितना खाओगे? कितना इस मुल्क को तोड़ोगे? दीमकों, जोंकों, पिस्सुओं की तरह इस महादेश के जर्जर शरीर पर पलने वाले पैरासाइट्स. याद रखो, रावण भी तुम्हारी जाति का था और वह भी सोने की लंका में रहता था. त्रेता के उस युग में तुमने घर बार से निष्कासित राम की पत्नी का अपहरण कर के, उन्हें भीतर से तोड़ डाला था. एक कभी न खत्म होने वाली भटकती हुई, बदहवास ज़िंदगी! और हरामज़ादो तुम उन्हीं राम का भक्त होने का नाटक कर रहे हो. इस कलियुग में इस बीसवीं-इक्कीसवीं सदी में, उन्हीं राम को तुम अपने जैसा बर्बर, हिंसक, हत्यारा, कट्टरपंथी, मानवद्रोही... फासिस्ट बना रहे हो! क्योंकि तुम्हें वोट चाहिए. क्योंकि तुम्हें पॉवर में रहना है. क्योंकि तुम्हें अभी और खाना है.

कितने हज़ार साल तक की सत्ता तुम्हें चाहिए? अगर सच सुनना चाहते हो तो सुनो हरामज़ादो. इस देश में न कभी हूणों का शासन रहा, न शक, कुषाण, यवनों, मुगलों और अंग्रेज़ों का. हर सत्ता की आड़ में हमेशा तुम्हारा ही राज रहा है. हर ईमानदार, कमज़ोर या किसी न्याय के पक्ष में खड़े आदमी की गर्दन पर शताब्दियों से गिरने वाला परशुराम का गंड़ासा असलियत में तुम्हारी सत्ता ही है. अगर तुम इतने ही श्रेष्ठ हो तो बताओ कि आज तक कभी ईश्वर बाम्हन बन कर पैदा क्यों नहीं हुआ?'

राहुल गुस्से में कांप रहा था. लेकिन शालिगराम के चेहरे की कालिख मिट रही थी और शैलेंद्र जॉर्ज अब डरा हुआ नहीं दिख रहा था.

और ठीक इसी समय डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी ने क्लासरूम में प्रवेश किया. 'क्या मीटिंग चल रही थी यहां?...अच्छा-अच्छा, यूनियन काउंसिलर्स के चुनाव की तैयारी हो रही है. लेकिन यहां भाषण किस नेता का हो रहा था?'

लड़कियों के झुंड ने भी तभी प्रवेश किया. मध्यकाल का भक्ति साहित्य पढ़ाएंगे अब डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी, बलराम पांडे जिनके घर सुआर का काम करता है और एक दिन वही इस हिंदी विभाग का हेड ऑफ दि डिपार्टमेंट होगा.

तीन बजे पीरियड खत्म हुआ. अचानक ही ऐसा तनाव पैदा हो गया था, जिसकी भारी-भरकम परछाईं समूचे क्लासरूम पर छा गयी थी. राहुल का दम घुट रहा था. वह बाहर निकल कर गलियारे में खड़ा हो गया. सामने लाइब्रेरी दिख रही थी. उसके बगल में नीम के दोनों पेड़. उनके नीचे की छांह खूब ठंडी होगी.

राहुल वहीं खड़ा था, तभी कार्तिकेय, ओ.पी. और प्रताप तीन-चार दूसरे लड़कों के साथ वहां लगभग दौड़ते हुए आये.

'सापाम ने स्युसाइड कर लिया है. ही इज़ डेड.' कार्तिकेय का चेहरा कांप रहा था. सभी हांफ रहे थे.

'हॉस्टल के पीछे के पुराने कुएं में उसकी बॉडी मिली है.'

एक गहरा सन्नाटा. चीखता हुआ और बजता हुआ. एक ऐसा सुनसान, जो किसी नक्षत्र के टूट कर गिरने के बाद, किसी बहुत बड़े विस्फोट के बाद...किसी बहुत दारुण मृत्यु के बाद पैदा होता है.

राहुल की चेतना निष्पंद थी. कानों ने कुछ भी सुनना बंद कर दिया था. वह अपने हॉस्टल के दोस्तों के पीछे-पीछे किसी रोबो... किसी यंत्र मानव की तरह चल रहा था.

सामने लाइब्रेरी के पास, नीम की ठंडी छांह में चैतन्य खड़े थे. चैतन्य महाप्रभु. लेकिन वहां कोई कीर्तन नहीं था. वे चुप थे. उनकी देह में जगह-जगह खरोंचें थीं. उनका माथा फूट गया था. शायद किसी गोली की सूराख उनकी दोनों आंखों के ठीक ऊपर, भौंहों के बीचोबीच थी, जिसमें से लगातार बहते हुए खून ने उनकी आंखों को ढंक लिया था.

नीचे ज़मीन पर फूटी हुई ढोलक पड़ी थी, उसके बगल में करताल और मंजीरे. और उनके बगल में कुछ लाशें. उन्हें पुलिस ने, बी.एस.एफ. ने, सी.आर.पी.एफ. ने, आतंकवादियों ने, किसी माफिया गिरोह या तस्कर ने, किसी कट्टरपंथी ने, तालिबान या हिज़बुल ने, या रणबीर सेना ने, नक्सलवादियों ने, अच्छन गुरू ने, दाऊद ने, किसी मंत्री के एस.पी.जी. ने एक साथ अंधाधुंध फायरिंग कर के, किसी ज्वायंट ऑपरेशन में मार डाला था.

नीम के पेड़ के पीछे नाथूराम गोडसे खड़ा हुआ था और उसकी पिस्तौल से धुआं निकल रहा था.

चैतन्य कीर्तन के पद गाने के लिए अभी भी अपना मुंह खोल रहे थे लेकिन उनके गले से निकल रहा था...भांय-भांय-भांय करता एक सन्नाटा.

राहुल ने देखा, उनके पैरों के निकट, घास पर, फूटी हुई ढोलक के बगल में, सापाम की लाश है.

'हम एक दिन स्युसाइड कर लेगा. लेकिन...लेकिन हम ज़रूर कर लेगा. मिजसे लिख के ले लो...हम कैसे जियेगा?...टेल मी...! मिजे पढ़ाई के वास्ते पैसा मेरा भाई भेजता था. अब हम अपनी आज़ादी के लिए लड़ेगा... उनोंने मेरे साथ...'

वहां बहुत सारी बत्तखें थीं, जिनके सफेद पंखों में खून के धब्बे पड़े हुए थे. बांस के जंगलों से कोई हवा गुज़र रही थी और सूखे हुए बांस के हज़ारों पेड़ बांसुरी बजा रहे थे. बांसुरी बजाना उन्होंने कृष्ण से सीखा था, जिनसे मिलने रुक्मिणी वहां आई थी.

सापाम का भाई अपनी मृत आंखों से सापाम को चुपचाप देख रहा था. उसके पिता ढोलक बजा कर गा रहे थे.

राहुल फूट-फूट कर रो रहा था. ओ. पी. और कार्तिकेय उसे संभाल रहे थे.

'डोंट! डोंट बी सेंटी राहुल!'

गलियारे में खड़ी अंजली जोशी उसे चुपचाप देख रही थी.

रात के साढ़े नौ बजे. आज हॉस्टल के मेस में डिनर नहीं बना था. टैगोर हॉस्टल के लड़कों ने सापाम के शोक में यह सामूहिक निर्णय लिया था. मेस के नोटिस बोर्ड पर यह सूचना चिपका दी गई थी कि जो स्टूडेंट्स खाना चाहते हों वे बी.बी. देसाई हॉस्टल के मेस में जा सकते हैं.

बाद में पता चला, सिवा कुछ मेस कर्मचारियों और इक्का-दुक्का लड़कों के, उस रात खाना किसी ने नहीं खाया.

इसका मतलब था, सापाम की आत्महत्या से पैदा होने वाला शोक बहुत बड़ा और गहरा था. लड़के आपस में बहुत कम और बहुत धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे. लगता था, उनकी आवाज़ें कहीं पर रुंध रही हैं क्या वह सिर्फ़ सापाम की इस तरह की मृत्यु का आकस्मिक आघात और दुःख था, जिसने उनके गले को इतना कमज़ोर कर दिया था, या कहीं एक भय भी था, जो हर लड़के के भीतर अचानक पैठ गया था और उसने उनकी आवाज़ को इस तरह कमज़ोर, निहत्था और असहाय बना डाला था. वे लड़के भी, जो अक्सर ज़ोर-ज़ोर से बोलते, बहस करते, झगड़ते-गाते देखे जाते थे, आज चुप थे. मोटर साइकिलों की आवाज़ें सहमी हुईं थीं. हार्न बजाकर नीचे के मैदान से कोई हॉस्टल की दूसरी-तीसरी मंजिल पर रहने वाले अपने दोस्त को नहीं बुला रहा था. कोई किसी को पुकार नहीं रहा था.

कॉरिडोर के बल्ब मटमैली और उदास रोशनी फेंक रहे थे. इस धुंधले से अंधेरे में, रुंधे और दबे स्वरों में एक-दूसरे से सिर्फ़ कभी-कभार बातें करते वे लड़के, किसी फिल्म के धुंधले पर्दे पर उभरती परछाइयों की तरह यहां-वहां डोल रहे थे.

राहुल, कार्तिकेय, प्रताप, मसूद, ओ.पी. और प्रवीण बी.बी. हॉस्टल के पीछे की झाड़ियों, झुरमुटों और कंकरीले पत्थरों वाले रास्ते पर चल रहे थे. दिन भर वहां पुलिस मौज़ूद थी और विश्वविद्यालय के कुछ अधिकारियों के अलावा वहां किसी को आने नहीं दिया गया था. लड़कों की भीड़ को बहुत दूर, पीछे रोक दिया गया था, जहां से वह जगह बिल्कुल नहीं दिखती थी, जहां सापाम ने आत्महत्या की. कुछ लड़कों ने दिन में, पेड़ पर चढ़कर भी देखने की कोशिश की, लेकिन उस तरफ सिर्फ़ बबूल के पेड़ थे. एक सेमल का भी पेड़ था लेकिन, उसके तने में भी कांटे होते हैं.

शाम सात बजे तक पुलिस वहां से सारी तफ़्तीश पूरी कर हट गयी थी. सापाम का शव गांधी हॉस्पिटल के मुर्दाघर में रख दिया गया था. अगले दिन पोस्टमार्टम होना था. लड़कों ने सापाम को अस्पताल में देखने की बहुत कोशिश की लेकिन किसी को वहां नहीं जाने दिया गया. पता चला कुलपति ए.के. अग्निहोत्री ने मणिपुर के चीफ़ सेक्रेटरी को फोन पर सूचना दे दी है. इंफाल से सापाम के पिता जी आयेंगे, नहीं तो सापाम के शव को ट्रेन से इंफाल भेजा जाएगा.

सापाम का शव हवाई जहाज से भेजे जाने की हैसियत नहीं रखता था.

सापाम के पिता जी किस तरह इस ख़बर को सह पायेंगे—राहुल सोच रहा था. अभी कुछ ही अर्सा पहले उनके बड़े बेटे को, जो इंफाल के निकट सिंगजमेई में प्रायमरी स्कूल में टीचर था, आतंकवादी मान कर पुलिस ने गोली मार दी थी. इधर उनका छोटा बेटा सापाम भी अब सिर्फ़ एक शव के रूप में, बस कुछ घंटों के लिए, अस्पताल के मुर्दाघर में शेष था. इसके बाद तो वह भी नहीं रह जायेगा. क्या वे यहां सापाम के अंतिम संस्कार के लिए आयेंगे? या इस सूचना के बाद वे इतने टूट-बिखर चुके होंगे कि इंफाल से कोहिमा, गोहाटी, बोंगईगांव होते हुए—दिल्ली और फिर दिल्ली से आगरा, ग्वालियर, झांसी होते हुए यहां तक—लगभग ढाई-तीन दिनों के सफर की हिम्मत और ताकत ही उनके अंदर नहीं रह गई होगी.

यह एक निर्मम सच था कि सापाम या उसके पिता जी या इस देश के करोड़ों लोग दुर्भाग्य से उन लोगों में से नहीं थे, जिनके लिए इस नयी टेक्नालॉजी ने दुनिया को छोटा बना डाला था, दूरियां मिटा डाली थीं. वे लोग और थे, जिनके लिए अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी जैसे देश घर का आंगन हो चुके थे, जहां जब दिल करे वे टहलते हुए जाते थे और कुल्ला, पेशाब कर आते थे.

कार्तिकेय के हाथ में टॉर्च थी. सिरकिन, बेशर्म, लेंटीना, चकवड़ और कई ऐसी झाड़ियों के बीच से निकलते हुए वे आख़िरकार उस कुएं तक पहुंच गये थे, जिसमें कूदकर सापाम ने जान दी थी.

ऐसा क्या था उस जगह में, कि वहां पहुंचते ही उन सभी की चेतना पर कोई भारी-सी चीज छा गयी थी? एक ऐसी ऐंद्रिक स्तब्धता, जो उनके शरीर की सारी शिराओं में अचानक सिहरन की तरह फैल गयी थी. उन्हें लग रहा था, उस कुएं के टूटे-फूटे जगत के पत्थरों-ईंटों के ऊपर, झाड़ियों के बीच घिरा हुआ सापाम अचानक अभी वहां बैठा हुआ दिख जाएगा और कहेगा, '...ओ अच्चा, तो तुम लोग मिजको मेस में डिनर वास्ते वहां बुलाने आ गये! तुम चलो, मैं आया.'

कुआं बहुत पुराना था और पिछले दस वर्षों से इस्तेमाल में नहीं था. इसे मजदूरों ने खोदा होगा. यहां की ज़मीन पथरीली और चट्टानी थी. कितनी मुश्किल और मेहनत से इंच-इंच करके इस बड़े से कुएं को, जिसे यहां की बोली में 'इंदारा' कहते हैं, खोदा गया होगा. सब्बलों, कुदालों, गैंतियों का कितना लोहा इस लगभग सत्तर फुट गहरे कुएं की

खुदाई में घिस गया होगा. यह तब बना होगा, जब बोरिंग मशीनें नहीं थीं. कहते हैं इसी कुएं से पूरी युनिवर्सिटी को पानी सप्लाई होता था. अब तो एक दूसरी पहाड़ी पर पूरा वाटर-हाउस बन चुका है.

कार्तिकेय ने टॉर्च की रोशनी कुएं के अंदर फेंकी. भीतरी दीवारों पर झाड़ियां, जड़ें और सूखी हुई घासों का झुरमुट था. चारों ओर से इस झुरमुट ने बीच के उस अंधेरे को घेर रखा था, जो अतल तक जाता था और वहीं कहीं, बहुत नीचे, गहराई में पानी था. कहते हैं कि पानी बहुत गहरा था. टॉर्च की रोशनी उसी अतल तक फैले अंधेरे के बीच से उस पानी तक पहुंच रही थी. कुछ साफ समझ में नहीं आता था, बस एक हरी-कत्थई झिलमिल टॉर्च की उस पीली रोशनी में कांपती दिखाई देती थी. 'सापाम ने इस कुएं को खोजा कैसे होगा?' कार्तिकेय की आवाज़ बहुत धीमी और खरखराती हुई-सी थी.

'उसने एक बार इसके बारे में बतलाया था.' प्रवीण ने कहा. 'लगता है...मुझे तो लगता है कि वह बहुत दिनों से ऐसा सोच रहा था.'

'उसके पास दूसरा रास्ता ही क्या था? लेकिन हकीकत ये है कि स्युसाइड करने के पहले ही उसे ख़त्म कर दिया गया था.' मसूद ने कहा.

'उसे टेरॅरिस्ट हो जाना चाहिए था. वह उन सबसे बदला लेता, जिन्होंने उसके भाई को मारा, जिन्होंने उसके रुपये छीने और उसको सोडोमाइज़ करने की कोशिश की...!' यह प्रताप परिहार ने कहा.

'ऐसा मत सोचो.' कार्तिकेय अचानक जैसे चौंक गया. उसकी आवाज़ गंभीर होती गयी और उसमें वह ठोसपन आ गया, जो किसी धातु में होता है. एक सख़्त ठंडापन. उसने टॉर्च बुझाते हुए अंधेरे में से कहा, 'क्या इस भयानक हादसे के बाद भी तुम इस सच्चाई तक नहीं पहुंच सके कि टेरॅरिस्ट कौन है और अपराधी कौन है?'

पुणे से आये कार्तिकेय काजले के इस वाक्य के बाद एक गहरी चुप्पी उस अंधेरे में फैल गयी, जिसमें सिर्फ़ रात के कीड़े-मकोड़ों और उन सभी की अपनी सांसों की आवाज़ें भर मौजूद थी. यह एक निश्शब्द लेकिन घुटी हुई चुप्पी थी, जिसमें सापाम की त्रासदी के साथ-साथ एक ऐसी बेचैनी कहीं भीतर जाग रही थी, जिसके आवेग में वे कुछ ठीक-ठीक सोच नहीं पा रहे थे. यह एक अशांत, उद्विग्न, बेचैन और घुटी हुई खामोशी थी.

सत्तर फुट नीचे अतल के अंधेरे में, जहां टॉर्च की पीली कमज़ोर रोशनी में कुएं के पानी की कत्थई-हरी झिलमिल थी, वहां राहुल को कोई चीज़ उतराती हुई-सी लगी. उसने कार्तिकेय के कंधे को दबाया. 'उधर... कुछ है. थोड़ा-सा राइट... थोड़ा-सा और ऊपर.'

मुश्किल से नीचे तक पहुंचती जर्जर रोशनी का वृत्त वहां ठहरा और राहुल ने देखा, वहां सापाम की चप्पल उतरा रही थी. दो महीने पहले, जब सापाम से उसकी

नयी-नयी दोस्ती हुई थी, वह चप्पल उसने शहर की लिबर्टी की दुकान से खरीदी थी.

राहुल की इच्छा हुई कि वह किसी तरह कुएं की गहराई में उतरे और उस चप्पल को निकाल लाए. यह कैसी विडंबना है? सिर्फ़ दो महीने पहले सापाम के जीवन में पहली बार अस्तित्व में आने वाली प्लास्टिक की यह चालीस रुपये की बेजान चीज़ अभी तक मौजूद है, पानी की सतह पर उतराती हुई...और वह मूल जीवन समाप्त हो गया. उसी पानी की झिलमिल में.

जब वे उस जगह से वापस अपने हॉस्टल की ओर लौट रहे थे, कोई किसी से कुछ बोल नहीं रहा था. लगता था उनके साथ झाड़ियों-झुरमुटों के बीच से निकलता, उनके पीछे-पीछे चलते अंधेरे के साथ सापाम भी चला आ रहा है. सिर झुकाए. अपनी मृत्यु के पार से. शायद यही वजह रही होगी कि कार्तिकेय ने कई बार यों ही टॉर्च पीछे की ओर घुमाई.

वहां कुछ नहीं था. चट्टानें, झाड़ियां, पत्थर और बबूल के सूखे हुए कंटीले पेड़ थे. जब वे हॉस्टल के कॉरिडोर में से निकल रहे थे तब उन्होंने कमरा नंबर 212 को देखा. इसी में सापाम तोंबा रहता था.

उस कमरे को पुलिस और युनिवर्सिटी के अधिकारियों ने सील कर दिया था. वहां पर एक अपरिचित-सा भारी-भरकम ताला लटक रहा था. यह ताला डरावना था क्योंकि उसके पीछे से सापाम की मृत्यु झांक रही थी.

उस रात राहुल देर तक जागता रहा. कमरे की दूसरी दीवार के साथ ही ओ.पी. का बेड था. वह भी देर तक जागता रहा लेकिन दोनों एक-दूसरे से कुछ नहीं बोल रहे थे. एक ऐसी निश्शब्दता दोनों के बीच थी, जिसे लांघने की शक्ति दोनों में से किसी के गले में नहीं थी. इसी कमरे के बाहर के गलियारे में कुछ कदम दूर सापाम का कमरा था, जिसमें अभी चार दिन पहले तक वह रह रहा था.

और इसी शहर के महात्मा गांधी अस्पताल के मुर्दाघर में ठीक इस समय उसका फूला हुआ शव रखा था. उसका सुंदर, गोल-मटोल चेहरा इस समय कैसा दिखता होगा? हॉस्पिटल की मॉर्च्युअरी में तो एयरकंडीशनिंग भी नहीं है. बर्फ की सिल्ली पर लाश रख दी जाती है. कहते हैं शव को सुरक्षित रखने की ख़ातिर बर्फ की सिल्ली के लिए दिये गये रुपये भी अस्पताल के कर्मचारी खा जाते हैं.

अगले दिन यानी सात सितंबर को विश्वविद्यालय में अवकाश घोषित कर दिया गया था. यह इस विश्वविद्यालय के उस छात्र की मृत्यु के शोक की रूटीन औपचारिकता में किया गया था, जिसका नाम सापाम तोंबा था और जो मणिपुर से यहां एम.एस-सी. प्रीवियस करने आया था.

राहुल हेमंत बरुआ के साथ दस बजे यों ही हॉस्टल से टहलता हुआ कैंपस की ओर चला गया था. कैंपस सुनसान था. डिपार्टमेंट्स बंद थे. कैंटीन के सामने कुत्ते और कौए थे. एक निर्जनता-सी चारों ओर फैली हुई थी.

'सापाम कहता था कि अब मणिपुर का नया जेनरेशन अपने नाम के आख़ीर में लगा हिंदू सरनेम तेजी से ड्रॉप कर रहा है. वो लोग वापस अपने ट्राइबल रूट्स की ओर जाना चाहते हैं. हमें अपनी पुरानी पीढ़ियों की मूर्खता पर शर्म आती है, जिन्हें इतने दिनों तक बेवकूफ़ बनाया गया.' हेमंत बरुआ बता रहा था. 'असम में भी यही हवा चल रही है. हमें सोचना पड़ रहा है कि क्या हम रियली इंडियन हैं?'

'तो कौन है इंडियन? क्या दिल्ली, यू.पी. और बिहार के प्रोफेशनल पोलिटीशियंस, व्यापारी, दलाल, करप्ट ब्यूरोक्रेट्स, क्रिमिनल्स और चीटर्स ही इंडियन हैं?' राहुल उत्तेजित था. 'इन्होंने आज़ादी को हाइजैक कर लिया है. तुम बताओ कोई इंडियन कैसे हो सकता है, जब तक इंडिया जैसा कोई नेशन स्टेट न हो?'

'व्हाई, देयर इज़ दि इंडियन नेशनलिज्म. अभी करगिल की लड़ाई में जो दिखाई पड़ा था, वो क्या था? हमारे गुवाहाटी, सिल्चर, डिब्रूगढ़ के भी कई आफिसर और जवान उसमें मारे गये थे.'

राहुल को हँसी आयी. हेतंत बरुआ भी हँसने लगा.

'स्पांसर्ड नेशनलिज़्म! हेमंत, मुझे तू ये बता, कभी तूने कोई ऐसा नेशनलिज़्म देखा है, जो सिर्फ़ एक ही कंट्री के मामले में दिखाई पड़ता हो?' राहुल ने कहा.

'मतलब?' हेमंत ने पूछा.

'मतलब ये कि इस नेशनलिज़्म के मामले में हर बार और हमेशा पाकिस्तान ही क्यों होता है? किसी भी दूसरे ताकतवर देश के सामने, जिन्होंने हमें गुलाम बनाया, हथियारों से भरे जहाजी बेड़े इस देश को ख़त्म करने के लिए भेजे, जिनके दिये गये हथियारों से

हमारे इतने सारे लोग मरे...उनके सामने नेशनलिज़्म क्यों नहीं पैदा होता? एक लंबी-सी चापलूस दुम क्यों लगातार हिलती नज़र आती है?' राहुल उत्तेजित था.

वह सोच रहा था कि क्या सचमुच पहले के सारे संदर्भ अब निरस्त हो चुके हैं और क्या इतिहास का सचमुच अंत हो चुका है? या फिर इस देश के शासकों और नागरिकों की स्मृतियां ही नष्ट हो चुकी हैं. या यह समय ही एक बिल्कुल बदला हुआ समय है. यह एक नयी दुनिया है. एक नयी विश्व व्यवस्था. इसमें अतीत के अब सारे संदर्भ अ-प्रासंगिक हैं. लेकिन अगर ऐसा है, तो अभी पोखरण में बम फोड़ने के साथ और करगिल या कश्मीर के मामले में उसी अतीत के 'राष्ट्रवाद' को क्यों पैदा किया गया? क्या यह सचमुच का राष्ट्रवाद ही है या एक तरह की सामुदायिक घृणा? एक निश्चित इरादे से जगाई गयी सांप्रदायिक नफ़रत? अगर मान लें कि इंग्लैंड और अमेरिका के मामले में हमारे इतिहास के सारे संदर्भ अब बदल चुके हैं, तो बाबर या औरंगज़ेब के ज़माने के संदर्भों को बार-बार क्यों जगाया जा रहा है? अगर बाबरी मस्जिद एक गलत ढांचा था, तो लुटियन का बनवाया गया वायसराय हाउस क्यों गलत नहीं है, जिसमें इस देश का राष्ट्रपति रहता है? इंडियागेट गलत क्यों नहीं है, जहां अभी कुछ साल पहले, आज़ादी के पचास साल पूरा होने पर ए.आर. रहमान ने 'मां तुझे सलाम' गाया था और खूब जश्न मनाया गया था? अगर दिल्ली के उस ढांचे को नहीं तोड़ा गया तो अयोध्या के उस ढांचे को क्यों तोड़ा गया?

राहुल को लगा जैसे वह सोचते-सोचते किसी अजीबो-गरीब वास्तविकता तक पहुंच रहा है. 15 अगस्त की उस रात, जो गाना आज़ादी की गोल्डेन जुबली के जश्न में गाया गया था और जिसे टी.वी. पर राहुल ने एक सिहरती उत्तेजना और आंखों में छलकते अपने देश के प्रति समर्पण से आंसुओं के साथ देखा-सुना था, अचानक इस पल वह उसे एक दूसरा ही अनुभव देता हुआ लगा. उसने सुना था कि बंकिम चंद्र के बांग्ला उपन्यास *आनंदमठ* में यह गीत मठ में रहने वाले संन्यासी 'यवनों' यानी मुसलमान शासकों के खिलाफ़ गाते थे. भवानंद का 'बंदे मातरम्'. इस गीत को लगभग दूसरा राष्ट्रगीत माना जाता था. इसे इसलिए क्रांतिकारी माना गया था, क्योंकि यह गीत अपनी व्यंजना में उस समय अंग्रेजों के राज के खिलाफ़ अपना अर्थ प्रकट करता था. बंकिमचंद्र की शायद यह मंशा भी रही हो. *आनंदमठ* में जो संन्यासी इस गीत को गाते थे, वे गेरूआ कपड़ा पहनते थे.

राहुल को अचानक 1992 में अयोध्या की बाबरी मस्ज़िद की गुंबद पर चढ़े हुए लोगों के वे फोटोग्राफ याद आये, जो उसने अख़बारों और पत्रिकाओं में देखे थे. उस गुंबद पर भी गेरूआ कपड़े वाले लोग थे. तो क्या 'आनंदमठ' के भवानंद और दूसरे संन्यासी ही बंकिमचंद्र के उपन्यास से निकलकर 6 दिसंबर 1992 को उस गुंबद पर सवार हो गये थे और उन्होंने उसे ढहा दिया था? और वही लोग 1997 में भारतीय स्वतंत्रता की स्वर्णजयंती पर ए.आर. रहमान के गले से उस गीत को हिंदुस्तानी में अनुवाद

करा के दिल्ली के इंडियागेट में गवा रहे थे? लेकिन वे लोग तो उस उपन्यास के पात्र थे, जिन्हें बंकिमचंद्र ने अंग्रेजों के शासन के खिलाफ़ रचा था! अगर ऐसा था तो वे लोग, जो प्रगट होता था कि अब भारत के शासक बन गये थे, यह गाना अंग्रेजी राज के दौरान लुटियन द्वारा बनाये गये ढांचे के नीचे क्यों गा रहे थे? इस गाने से जो 'नेशनलिज़्म' प्रगट हो रहा था, उसमें मुगल राज के बाबर के ढांचे से नफ़रत और अंग्रेजी राज के लुटियन के ढांचे की गुलामी अंतर्निहित थी. तो क्या वे लोग बंकिमचंद्र के उपन्यास *आनंदमठ* के क्रांतिकारी संन्यासी नहीं, कोई दूसरे छद्मभेषधारी लोग थे, जिनका 'राष्ट्रवाद' मुसलमानों से नफ़रत और अंग्रेजों की चापलूसी के सिद्धांत पर आधारित था? और क्या यही वजह नहीं थी कि यह राष्ट्रवाद सिर्फ़ पाकिस्तान के सामने हथियार उठाता था और पश्चिम के नव औपनिवेशिक ताकतों के सामने अपनी पूंछ निकाल कर हिलाना शुरू कर देता था. लपर लप...लपर लप्!

'हेमंत, तुम्हें पता है कि लुटियन, जिसने दिल्ली के वायसराय हाउस से लेकर उस समय की बाकी दूसरी इमारतों का निर्माण किया और जिस पर हमारा आज का ग्रेट इंडियन मिडिल क्लास एलीट गर्व करता है, वह हिंदुस्तानियों के बारे में क्या कहता था?'

'क्या कहता था?' हेमंत बरूआ जानने के लिए उत्सुक था.

'लुटियन कहता था कि दुनिया की सबसे गंदी, भोंड़ी और जाहिल नस्ल इंडियन नेटिव्स की है. वह इन्हें डार्विन के विकासवाद के मुताबिक बंदर से मनुष्य के विकास के बीच की एक लुप्त कड़ी या 'मिसिंग लिंक' मानता था.' एक 'उप' या 'अर्द्ध'मानव या अधिक से अधिक एक 'विकसित' वनमानुस.' राहुल ने कहा.

'रियली? तुमने कहां पढ़ा?' हेमंत ने पूछा.

'विलियम डार्लिंपल की बेस्टसेलर 'सिटी ऑफ जिन्स' (जिन्नातों का शहर) को उठाकर देख लो. उसने लिखा है कि एक दिन शाम को जब सूरज डूब रहा था और वह दिल्ली के इंडिया गेट पर खड़ा था, उसने सूर्यास्त की पृष्ठभूमि में राष्ट्रपति भवन यानी लुटियन द्वारा निर्मित वायसरॉय हाउस को देखा, तो सिहर उठा. इस स्थापत्य को देखकर दो दूसरे स्थापत्य डिजाइनों की छवियां अचानक उसके दिमाग़ में कौंध गयीं. इटली के मुसोलिनी काल के मिलान और जर्मनी के हिटलर के वक्त के बर्लिन के स्थापत्य की छवियां. वैसा ही भव्य, वैसा ही सम्मोहक लेकिन संभवतः मानवता की नियति के लिए किसी अभिशाप जैसा डरावना स्थापत्य. डार्लिंपल ने लिखा है कि 'ब्रिटिश एंपायर, जर्मनी के नाजीवाद और इटली के फासीवाद में कोई-न-कोई रहस्यपूर्ण और डरावनी समानता ज़रूर थी.' राहुल की आवाज़ कांप रही थी और जैसे कहीं किसी गहरे कुएं के भीतर से आ रही थी, उसी कुएं के अतल से, जहां आत्महत्या के बाद सापाम की चप्पल उतरा रही थी.

'डरावना यह भी है कि आज भी हमारे देश का पहला नागरिक, हमारे संविधान

का पहरेदार और हमारी तीनों सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति उसी स्थापत्य के भीतर रहता है.'

यह राहुल कह रहा था, जिसकी उम्र अभी मुश्किल से तेईस साल की थी और जो एंथ्रोपोलॉजी छोड़कर अंजली जोशी के प्यार के चक्कर में हिंदी साहित्य में एम.ए. प्रीवियस का छात्र बन गया था.

'राहुल, आइ हैव कलेक्टेड अ लाट्स ऑफ डेटा अबाउट असम. अगर आज असम से दिल्ली के इन इंडियन रूलर्स का कंट्रोल हट जाये और वहां के नेचुरल रिसोर्सेज़ पर असम के लोगों का अधिकार हो जाये, तो मालूम है क्या होगा? असम का पर कैपिटा इनकम यूनाइटेड अरब एमिराट्स से ज़्यादा होगा. दुनिया का सबसे अमीर देश असम होगा, जो आज इंडिया के सबसे गरीब और बैकवर्ड स्टेट्स में से एक है. और यही बात अलग-अलग लगभग हर राज्य पर लागू होती है.'

यह हेमंत बरूआ कह रहा था, जिसकी उम्र मुश्किल से इक्कीस साल की थी और जो मैथमेटिक्स में एम.एस-सी. करने यहां आया हुआ था और साथ-साथ 'निट' से ई-कॉमर्स का कोर्स भी कर रहा था.

राहुल यह सोच रहा था कि भारत की नयी पीढ़ी आखिर कौन-सी है, जो आने वाले दिनों को आकार देगी? क्या इंडिया का नया 'एक्स-वाइ' जेनेरेशन वह है, जो टीवी में, सिनेमा में, फैशन परेडों और दिल्ली-मुंबई-कलकत्ता-बंगलूर से निकलने वाले अंग्रेजी के रंगीन अखबारों में पेप्सी पीता, क्रिकेट खेलता, पॉप म्युजिक एलबम में नंगी-अधनंगी लड़कियों के साथ हिप्पियों जैसा नाचता या ज़्यादा से ज़्यादा दौलत कमाने के लिए एम. एन.सी. की नौकरियों के लिए मां-बाप को लतियाता और तमाम परंपराओं पर थूकता हुआ अमेरिका, कनाडा, जर्मनी भाग रहा है?

या नया जेनरेशन वह है, जो असम, मिजोरम, मणिपुर, आंध्र, कश्मीर, बिहार, तमिलनाडु से लेकर तमाम नरक जैसे पिछड़े इलाकों में ए.के.-47, बारूदी सुरंग, तोड़ फोड़ और हताश हिंसक वारदात में शामिल है? या फिर रोजी-रोटी न होने की निराशा में हर रोज़ आत्महत्याएं कर रहा है? नया जेनरेशन कौन-सा है? जिसके एक हाथ में पेप्सी, बगल में एक अधनंगी मॉडल और जेब में क्रेडिट कार्ड और वीजा है या वह, जिसकी आंखें लाल हैं, जिसके मां-बापों को पिछले पचास सालों में शासकों द्वारा लगातार ठगा गया है और जिसके हाथ में फिलहाल हथियार है और जिसे हर रोज़ मुठभेड़ों में मारा जा रहा है?

वह आज़ादी किसके लिए थी, जो साबरमती के एक बूढ़े संत ने अपने करिश्मे से बिना तलवार और ढाल के 'वैष्णव जन ते तेणे कहिये जे पीर पराई जाणे रे' गाते हुए पचास से कुछ साल पहले पैदा की थी? क्या उस संत को इसीलिए पिस्तौल से उड़ा दिया गया था, जिससे वह भविष्य में कभी कोई करिश्मा पैदा न कर पाये?

राहुल और हेमंत दोनों एक-दूसरे को स्तब्ध आंखों से देख रहे थे. कैंपस वीरान

था. एक उजाड़-सी निर्जनता, जिसमें पेड़ तक बुतों की तरह स्थिर खड़े थे. शोक मग्न.

'हो ऽ हो ऽ हो ऽ...
सइयो नी...ई ई ई... ऽ ऽ
चैन इक पल नहीं, और कोई हल नहीं
सइयो नी ऽ...ई...ई ऽऽ'

दोनों ने एक साथ धीरे-धीरे गाना शुरू किया. पर यह एक पॉप था, जिसे ब्रियान ओ-कोनेल, सलमान अहमद और अली अज़मत ने नुसरत फतेहअली की स्मृति में गाया था और इन दिनों युनिवर्सिटी से स्टुडेंट्स के बीच यह गाना खूब लोकप्रिय था.

आश्चर्य था कि यह कैसेट पाकिस्तानी पॉप गायकों का था. तो क्या इस समूचे उपमहाद्वीप के साधारण आम इन्सानों के भीतर एक जैसी बेचैनी तमाम राजनीतिक सरहदों को निरस्त करती हुई लगातार बढ़ती चली जा रही थी? कुछ-कुछ उस तरह, जिस तरह किसी घनी बस्ती में लगी हुई आग फैलती जाती है, बिना इस परवाह के कि जलने वाला घर किसका है, फेंसिंग किसकी है, वह फाटक किसका है और किस मालिक का नेम प्लेट उस मकान के सामने लटका है. एक स्वाभाविक, प्राकृतिक, वास्तविक आग. अग्नि, वही अग्नि, जो समस्त यज्ञों का मूल कर्त्ता और समाहारक है.

इदं जगत् सर्वं दहेयं भस्मीकुर्यां यद् इदं स्थावरादि पृथीव्याम्! इस पृथ्वी पर जो कुछ भी दिखता है, उस सबको जलाकर राख में बदल डालने वाली अग्नि!

हो...हो...हो...ऽ
सइयो नी ऽ ई...ऽ...ऽ ई
चैन इक पल नहीं
और कोई हल नहीं
सइयो नी ई...ऽ...ऽ ई...ऽ ई...ऽ...ऽ...

राहुल को लगा, जैसे कोई चुपचाप, विराट अदृश्य हाथों से, इस दक्षिणी एशिया के विशाल उप-महाद्वीप में रहने वाले सीधे-सादे, सरल, निश्छल, वंचित, सताये गये, ठगे गये, सौ करोड़ से भी ज़्यादा मनुष्यों के दिलों की एक-एक धड़कन पर, एक बिल्कुल नया...भविष्य में कभी करोड़ों कंठों के समवेत स्वरों में गाया जाने वाला, समूचे अखिल को गुंजा डालने वाला, एक नया महा-राष्ट्रगान लिख रहा है. अ न्यू मेगा-नेशनल सांग!

क्या पश्चिम की कंपनियों के राज के खिलाफ़ इस बार समूचे दक्षिणी एशिया में एक बहुत बड़ा गदर फिर होगा? क्या इस बार इस 'इंडिया कंपनी सरकार' की फौज उस स्वाधीनता संग्राम को 1857 की तरह फिर कुचल डालेगी और फिर उसके बाद क्या कोई अधनंगा, लंगोटी लगाने वाला, वंचितों और दरिद्रों का एक नया प्रतीक फिर कहीं इस अंधकार में से निकलकर आयेगा और सटोरियों, दलालों, अपराधियों और ठगों के इस भ्रष्ट बाम्हन-बनिया बाज़ार-व्यवस्था को निहत्था चुनौती देगा? इस मार्केट एंपायर में जो सूरज एक बार फिर नहीं डूबता दिखाई देता, वह बंगाल की खाड़ी या हिंद महासागर

में फिर एक बार डुबा दिया जाएगा.

या उस संत को इस बार पहले ही कोई नाथूराम मौत की नींद सुला देगा? और सत्ता पर कब्जा जमा लेगा?

हे राम!

हेमंत ने राहुल के कंधे पर हाथ रखकर दबाया और फुसफुसाते हुए कहा, 'सी...सी...! देयर, दैट साइड! उधर देखो.'

राहुल ने उधर देखा. लाइब्रेरी के बगल में, नीम के पेड़ के नीचे की छांह में, जहां कल चैतन्य खड़े थे, वहां वही पीली छतरी मौजूद थी. वही पीला रंग, जो राहुल की आंख से उसकी शिराओं में उतरता हुआ उसके रक्त के साथ बहने लगता था. एक मीठा, मद्धिम आंच से तपता संगीत उसकी देह के भीतर बजने लगता था. रक्त के साथ बजता संगीत, जिसमें उसके हृदय की धड़कन की आवाज़ उसके अपने ही कानों को साफ़-साफ़ सुनाई देने लगती थी.

धक्...धक. धक्...धक.

छतरी के बगल में नीम की छांह में अणिमा और 'वह' थी. वह यानी अंजली. अंजली जोशी. राहुल चुप खड़ा था. हेमंत ने उसका हाथ पकड़ा...' शी इज़ योर बर्ड. चलो, बात करते हैं.'

'छोड़ यार.' राहुल हिचकिचा रहा था लेकिन हेमंत उसे खींचता हुआ उसी ओर ले गया.

अणिमा और अंजली जोशी राहुल और हेमंत को देखकर खुश हुईं. वे आज इस उम्मीद में आ गयी थीं कि शायद युनिवर्सिटी की लाइब्रेरी खुली होगी. लेकिन वह बंद थी. वे दोनों भी वहीं बैठ गये.

'जिसकी डेथ हुई, वह आपका फ्रेंड था?' अंजली ने राहुल से पूछा. उसने कल राहुल को रोते हुए डिपार्टमेंट के गलियारे से देखा था.

'सापाम बहुत अच्छा लड़का था. हमारे ही हॉस्टल में, मेरे ही फ्लोर पर रहता था. ' राहुल ने कहा. 'हम लोग बैडमिंटन खेलते थे.'

'जिन गुंडों ने उसके साथ लूट-पाट की उन्हें पुलिस ने अरेस्ट नहीं किया?' अंजली ने फिर पूछा. उसके स्वर में जिज्ञासा थी.

'पुलिस क्यों करेगी? उनके खिलाफ़ एविडेंस क्या है?' राहुल ने कहा.

'उसके रियल बड़े भाई को तो इंफाल में पुलिस ने ही गोली मारी.' हेमंत ने गुस्से में कहा. 'एवरी डे आर्गेनाइज्ड क्रिमिनल्स आर किलिंग इनोसेंट पीपल. दिस इज़ दि एवरी डे न्यूज़, दैट मीडिया हाइड्स.'

अणिमा ने अंजली से कहा, 'तू अपने पापा से बात कर न! क्या पता कुछ हो जाये. वे मिनिस्टर हैं.'

'उससे क्या होगा? वे मिनिस्टर तो गुंडों की वजह से ही हैं.' अंजली ने चौंककर राहुल को देखा. अणिमा हँस पड़ी. उसने राहुल का बायां कान खींच लिया.

'इस बच्चे की ट्रेजेडी ये है कि ये बिना सोचे-समझे तड़ से बोलता है. और हमेशा बेचारा सच बोलता है. पता है, इसका रीज़न क्या है?'

अणिमा ने राहुल का हाथ पकड़कर उसकी हथेली फैला दी. 'देखो, इसकी हथेली में हेड लाइन, हार्ट लाइन और लाइफ लाइन एक साथ जुड़ी हुई हैं. जो इसके दिल में होता है, वही इसका दिमाग सोचता है और इस बच्चे की लाइफ झमेले में पड़ जाती है.'

अंजली, हेमंत और अणिमा सबने अपनी-अपनी हथेलियां देखीं लेकिन उनमें या तो मस्तक रेखा अलग थी, तीनों रेखाएं अलग-अलग थीं या सिर्फ़ जीवन और हृदय रेखाएं जुड़ी हुई थीं. ऐसा किसी भी हाथ में नहीं था, कि सब एक साथ जुड़ गयी हों.

अंजली और हेमंत दोनों को यह मज़ेदार लगा.

'तुमने किसी ज्योतिषी को दिखाया?' अंजली वास्तव में चौंकी हुई थी.

'हां' राहुल ने कहा. 'उनका कहना है कि सामुद्रिक शास्त्र में लिखा हुआ है कि ऐसी रेखाओं वाला आदमी या तो डिक्टेटर होता है या साधू या फिर पागल. या फिर.. .लीव इट...' राहुल कहते-कहते रुक गया.

'बताओ न! ऊं हूं...हूं...हूं.' अणिमा ने बच्चों जैसा मचलते हुए कहा.

'टेल...टेल यार! नहीं तो क्या होता है?' हेमंत भी उत्सुक था.

राहुल एक पल उलझन में रहा फिर उसने कहा, '...नहीं तो वह आत्महत्या कर लेता है.' उसकी आवाज़ कहीं डूब-सी गयी. फिर उसने धीरे-से भर्राए हुए स्वर में कहा, 'सापाम की तरह.'

'धत्!' इतने ज़ोरों से यह आवाज़ अंजली जोशी के गले से निकली कि वह खुद झेंप गयी. अणिमा और हेमंत दोनों हँस पड़े.

'क्या तुम पामिस्ट्री में बिलीव करते हो?' हेमंत ने राहुल से पूछा.

'मैं तो नहीं करता. कहते हैं ऐसी ही रेखाएं नेहरू जी की भी थीं. पंडित जवाहरलाल नेहरू. लेकिन न तो वो पागल थे, न साधू, न उन्होंने स्युसाइड किया.' राहुल ने कहा.

'लेकिन डिक्टेटर?... नहीं तो उनका खानदान इतने सालों तक इंडिया में रूल क्यों करता?' यह हेमंत का तर्क था.

'मुझे तो लगता है, उन्होंने स्युसाइड ही किया था. ऑफ्टर चाइना वार.' राहुल ने कहा.

'देखो...देखो. ऊंट चला आ रहा है.' अणिमा ने हॉस्टल की ओर इशारा किया. सभी ने देखा. सड़क पर छह फुट तीन इंच लंबा, बांस की लाठ जैसा सींकिया ढांचा, हर कदम पर अपनी गर्दन लचकाता इसी ओर चला आ रहा था.

'आजा...आजा कंकाल! तेरा ही इंतज़ार था.' राहुल ने आवाज़ लगाई.

ओ.पी. बीच तक आकर ही रुक गया. 'कुछ स्नैक्स का जुगाड़ लगाने जा रहा हूं यार! जबर्दश्त भूख लगी है.' वहीं से वह बोला.

भूख राहुल और हेमंत बरूआ को भी लगी थी. रात में सापाम के शोक में मेस में खाना नहीं बना था. ब्रेकफास्ट में भी कुछ नहीं. पेट में चूहे कूद रहे थे.

'लेकिन आज तो कैंटीन बंद है. कहां से कुछ मिलेगा?' अंजली को फिक्र हुई.

हेमंत उठ खड़ा हुआ. 'कैंटीन के पिछवाड़े जंग बहादुर सोता है. उसे पटाएंगे.'

हेमंत ओ.पी. की तरफ बढ़ा तो अणिमा भी उठ खड़ी हुई. 'चलते हैं अपन भी, शायद कुछ हाथ लग जाए...'

'मैं भी चलूं?' अंजली ने पूछा. वह उठने की मुद्रा बना रही थी.

'तुम दोनों यहीं बैठो...वो अपना हिंदी लिटरेचर डिस्कस कर लो. हम अभी आते हैं. सी.यू. अंजली!' अणिमा ने मुस्कराते हुए एक आंख दबाई. अणिमा, हेमंत और ओ. पी. कैंटीन की ओर चले गये.

नीम की छांह के नीचे, अब राहुल और अंजली थे. और उनसे थोड़ी ही दूर वह पीली छतरी थी, जो रह-रहकर हवा के झोकों से कांप जाती थी. लगता था अभी कोई एक ऐसी हवा आयेगी, जिससे सिहर कर वह अपने पीले पंख फैलाएगी और तितली बनकर धीरे-धीरे उड़ने लगेगी.

सचमुच एक तितली भटकती हुई कहीं से आयी और सीधे अंजली के कंधे पर एक पल के लिए टिक गयी.

'धत्...! धत्!...धत्...!' अंजली घबराहट में उठकर खड़ी हो गई.

'क्या हो गया?' राहुल चौंका. अंजली के कंधे पर बैठी तितली उड़ गयी और मंडराती हुई छतरी के ऊपर जाकर बैठ गयी थी. ताज्जुब था कि उस तितली का भी रंग

पीला था. एक जीवित पीला रंग. ऐसा पीला, जो उड़ता है, सांस लेता है, जीवित होता है और डरता भी है. उसी डर के कारण ही वह अंजली के कंधे पर से उड़ा था.

'वो तो तितली थी. इसमें डरने की क्या बात थी?' राहुल को अंजली की घबराहट पर हँसी आयी. अंजली वापस घास पर बैठ रही थी.

'काट लेती कहीं तो?' अंजली ने कहा.

'तितली नहीं काटती.'

'तुम्हें कैसे पता कि नहीं काटती? कहीं काट ही लेती तो!'

'तितली नहीं काटती.' राहुल ने बहस की. 'ततैया काटती है.'

अंजली ने अपनी हार या शायद झेंप मिटाने के लिए इस बहस को खत्म करना चाहा. 'सब एक ही बात है. तितली हो या ततैया.'

'एक ही बात कैसे है? तितली कभी नहीं काटती, ततैया काट दिया करती है. कभी-कभी.' राहुल इतनी ज़ल्दी बिना समस्या को पूरी तरह सुलझाए, बात खत्म कर देने के मूड में नहीं था.

'तुम्हें कभी काटा? ततैया ने?' अंजली ने पूछा.

'हां. दो-तीन बार.' राहुल बताने लगा. 'गांव में जहां हमारे खेत हैं, ट्यूबवेल की पानी की टंकी के पास पापा ने एक सीमेंट का बड़ा-सा टैंक बनवा रखा है. वो कहते हैं कि ये हमाम है. गर्मियों में उस टैंक में नहाने में बड़ा मज़ा आता है.'

'तुम उसमें नहाते हो कभी?' अंजली ने पूछा.

'क्यों नहीं? गर्मी की छुट्टियों में तो रात में साबुन और तौलिया ले के जाओ और उस टैंक में घुस जाओ. ग्रेट मज़ा. पता है, वहां साबुन भी इतने ज़ोरों से महकता है, जितना यहां कभी नहीं महकता.'

'ऐसा कैसे हो सकता है? साबुन तो एक ही होता है.'

'नहीं. जंगल में, खेतों के पास, रात में, साबुन ज़्यादा महकता है. ये बात सच है.' राहुल ने कहा. 'उस टैंक के पास बेले के पौधे उगे हुए हैं. उसके फूल भी रात में ज़्यादा महकते हैं.'

'ये क्या बात हुई?' अंजली चिढ़ गयी. 'अभी तुम साबुन के महकने की बात कर रहे थे, अब तुम बेला के महकने की बात करने लगे.'

'ओह! तुम भी. कभी वहां जाओ तो पता चले. रात में मैं टैंक में नहाता हूं तो साबुन और बेला दोनों महकते हैं. कभी लगता है मैं साबुन नहीं, बेला लगा रहा हूं. कभी लगता है टैंक के बगल में साबुन के पौधे उगे हुए हैं. लेकिन जब तुम टैंक में रात में नहाओ ही नहीं, तो कैसे पता चले!' राहुल भी चिढ़ रहा था.

'लेकिन तुम तो ततैया की बात कर रहे थे. इसमें ततैया कहां है?' अंजली ने उसे घूरते हुए कहा.

'वो तो दिन की बात है. दोपहर में टैंक के पास जो पानी बहता है, उसमें खूब

सारी ततैया आती हैं. एक बार दोपहर को मैं नहा रहा था. मैंने टॉवेल और पैंट-शर्ट ट्यूबवेल के पाइप पर रख दिये थे. नहाने के बाद जब मैंने टॉवेल से पोंछना शुरू किया तो ततैया ने काट लिया. वो उसमें घुसी हुई थी.'

अंजली ज़ोरों से हँसने लगी.

'इसमें हँसने की क्या बात है? ततैया कभी काटे तो पता चले.' राहुल को गुस्सा आया.

'नहीं. बट आई थिंक, अगर वो कहीं, टॉवेल की जगह पैंट में घुसी होती तो?'

अंजली फिर से हँस रही थी. राहुल ने देखा. हँसते-हँसते उसकी आंखों में आंसू छल-छला आये थे. कितनी मात्रा में हँसी है इस लड़की के भीतर? वे हँसती हुई आंखें राहुल पर ही टिकी थीं. अचानक राहुल को वैसा ही लगने लगा, जैसा टैगोर हॉस्टल के अपने रूम नं. 252 की खिड़की से, घाटी के नीचे के समतल मैदान को घेरने वाली अर्द्धवृत्ताकार सड़क पर धीरे-धीरे रेंगते हुए उस पीले रंग के धब्बे को देखते हुए लगता था.

उसे लगा वे हँसती हुई आंखें धीरे-धीरे उसके भीतर उतरती जा रही हैं. उसकी शिराओं में बहते रक्त में, दो नन्हीं-नन्हीं चमकीली मछलियों की तरह तैरती हुईं.

...और उस लाल नदी में, जो उसकी देह की नीली नसों के भीतर के अंधेरे में बह रही है, धीरे-धीरे तिरती हुई वे उधर पहुंच रही हैं, जहां समूचे शरीर की सारी शिराएं और धमनियां एक दूसरे से मिलती हैं. उसी जगह, जहां जीवन एक बहुत नाजुक और रहस्यपूर्ण जैविक घड़ी की टिक्-टिक्...टिक्-टिक् में निरंतर धड़कता रहता है. जिस पल यह 'टिक्...टिक' बंद, कहां है जीवन!

वही जगह, जहां हृदय है.

एक बहुत धीमा बुखार धीरे-धीरे राहुल पर चढ़ने लगा. ऐसा बुखार, जिसमें संगीत जैसा कुछ घुला होता है. राहुल के कान उस बुखार के भीतर उस संगीत को सुनने लगे और वह उसमें डूबने लगा. कैसी धुन थी, जो मुश्किल से, बहुत सारा कान लगाने पर मुश्किल से सुनाई देती थी. वे दोनों चमकीली मछलियां उसकी देह के भीतर, उस बुखार के पार हँसे जा रही थीं. लगातार.

'क्या हो गया?' अंजली ने जब कहा तो राहुल जैसे नींद से जागा. 'तुम किसी बुत की तरह क्यों हो गये थे? स्टेच्यू.'

राहुल चुप था. उसने बड़ी कातरता के साथ अंजली को देखा. वह अभी भी हँसती हुई-सी लग रही थी, जब कि राहुल संगीत और बुखार में घिरा हुआ था.

'अच्छा चलो! फिर दूसरी बार तुम्हें ततैया ने कब काटा?' अंजली ने पूछा.

'एक बार मैं अपनी बाइक पर जा रहा था. पता नहीं कहां से एक उड़ती हुई आई और मेरे हेल्मेट के भीतर घुस गई.'

'बाप रे! इट्स हॉरिफाइंग. बंद हेल्मेट में सिर के साथ बंद एक ततैया.' अंजली

सचमुच डर गई थी.

'हां. उसने मुझे काटा. मैं इतना डर गया. अब हैंडिल से हाथ कैसे छोड़ूं और हेल्मेट कैसे उतारूं...?'

'फिर... फिर तुमने क्या किया?' अंजली चिंतित थी.

'मैं सामने से आ रही एक बस से टकराते-टकराते बचा! एक्सीडेंट हो जाता एक ततैया की वजह से.' राहुल ने कहा.

'धत्!' अंजली ने कहा. वह डर गयी थी.

'फिर वो निकली कैसे हेल्मेट से?'

'निकली क्या? मैंने एक किनारे बाइक रोक कर हेल्मेट उतारा तो वो उड़ गयी.' राहुल ने कहा.

'ओह!' अंजली ने जैसे छुटकारे की सांस ली. ये सोचना ही कितना अजीब लगता है, कितना डरावना, कि आपका सिर एक हेल्मेट के भीतर, एक ततैया के साथ बंद है.'

'मेरा तो था ही. वो भी साठ-सत्तर किलोमीटर की स्पीड से दौड़ती एक मोटरसाइकिल के ऊपर.' राहुल ने घमंड में मुस्कराते हुए कहा. अंजली अब निश्चिंत हो गयी थी.

'लेकिन तुम्हारी बात से तब भी वो तो नहीं सिद्ध होता.' उसने कहा.

'क्या?'

'कि...वो शुरू वाली बात.'

'कौन-सी बात?' राहुल की समझ में नहीं आ रहा था.

'कि तितली नहीं काटती.' अंजली ने कहा.

राहुल को हँसी आ गयी. 'तितली नहीं काटती. आइ बेट. ततैया काटती है. मैंने अभी बताया न.'

'लेकिन ततैया काटती है, इस बात से ये कैसे कह सकते हैं कि तितली नहीं काटती.' अंजली ने फिर बहस की.

'अजीब हो तुम भी.'

'क्यों?'

'तितली इसलिए नहीं काटती क्योंकि वह फूलों पर बैठती है. ततैया टैंक के पास के पानी पर और मिठाइयों पर बैठती है.' राहुल ने तर्क दिया. 'मिठाई की दुकानों पर तुमने नहीं देखा? कितनी सारी ततैया होती हैं, जलेबियों, गुझियों, बर्फियों के ऊपर...'

'लेकिन फूलों पर तो मधुमक्खी भी बैठती है. हनी बी. वो तो काटती है. जबकि मक्खियां भी मिठाइयों पर बैठती हैं. लेकिन वो तो नहीं काटतीं.' अंजली ने फिर तर्क दिया.

राहुल परेशान हो रहा था. इस लड़की को वह कैसे समझाए कि तितली नहीं काटती. वह इतना समझाने में तो कामयाब हो गया था कि ततैया काटती है. लेकिन ये

तो सिर्फ आधी सफलता थी. अब जो बाकी की आधी असफलता थी, उससे निपटना कठिन था.

'तितली के डंक नहीं होता, इसलिए नहीं काटती. ततैया के होता है. पीछे, दुम के पास.' राहुल ने काफी सोचकर किसी ट्रंपकार्ड जैसा तर्क प्रस्तुत किया.

'क्या तुमने देखा है किसी तितली के पीछे, उसकी दुम को, कि वहां डंक नहीं होता?' अंजली का प्रश्न फिर हाज़िर था.

राहुल ने अब उम्मीद छोड़ दी. वह पस्त हो गया. चारों खाने चित. वह सचमुच घास पर ढीला होकर लुढ़क गया.

'बस...बस. मैंने मान लिया प्रिंसेज डायना जी, कि तुम्हारे कंधे पर जो तितली बैठी थी और जो अब उड़कर तुम्हारी छतरी पर जाकर बैठी हुई है, वो काटती है. ठीक है...? खुश? अब टॉपिक चेंज करें?'

अंजली फिर हँसने लगी. शायद अपनी जीत पर. शायद राहुल के इस तरह आत्मसमर्पण कर देने पर.

'अब हँसने की क्या बात है?' राहुल को अच्छा भी लग रहा था और चिढ़ भी मच रही थी. अंजली ने दायें हाथ की मुट्ठी से घास की ढेर-सी पत्तियां नोंची और उन्हें राहुल की ओर उछाल दिया.

'तुम्हारे साथ क्या है कि तुम सच बोलते हो लेकिन हार जाते हो. है न?' उसने हँसते हुए कहा.

ये बात राहुल से पहले क्यों नहीं किसी ने कही. उसे लगा कितनी सरलता से, यों ही खेल-खेल में अंजली ने इसे जान लिया. यह अंजली के साथ उसका पहला खेल था, जिसमें वह हार गया था, जबकि उसकी बात सही थी.

लेकिन अपनी हार उसे इतनी अच्छी क्यों लग रही थी? वह भीतर से इतना खुश क्यों था?

'मैं नशे में टुल्ली हो गया...की करिए की करिए
दिल चोरी साड्डा हो गया...की करिए की करिए...'

राहुल ने धीरे-धीरे गुनगुनाना शुरू कर दिया था. नीम के नीचे छांह थी. ठंडी और गाढ़ी-घनी. हवा में सितंबर की दोपहर की आंच, ठंडक और नमी थी. मानसून अभी पूरी तरह गया नहीं था. कभी भी बादल फिर से आकाश में इकट्ठा हो सकते थे और कभी भी बरस सकते थे.

छतरी वहीं रखी हुई थी और हवा में धीरे-धीरे कभी-कभी कांप जाती थी. उसके ऊपर बैठी हुई तितली पंख समेटकर शायद सो गयी थी.

तितली भी क्या सपने देखती है? राहुल ने कहीं पढ़ा था कि हम सिर्फ़ स्पेक्ट्रम में सात रंग ही देख सकते हैं जबकि तितलियां हजार से ज़्यादा रंग देखती हैं. इतना नन्हां-सा, उड़ने वाला, इतने सुंदर पंखों का कीड़ा. इसकी कितनी छोटी-सी आंख होगी? फिर

उसका रेटिना तो और भी छोटा. सुई की नोक जितना. उस सुई की नोक बराबर रेटिना पर कितने नन्हें इमेज बनते होंगे?

लेकिन इमेज तो और कुछ नहीं प्रकाश के संकेत भर होते हैं, जिन्हें मस्तिष्क पढ़ता है. तो क्या तितली का जो दिमाग़ हजार रंगों के संकेतों को अलग-अलग पढ़ लेता है, वह हमसे अधिक विकसित और अधिक जटिल दिमाग़ होगा? और अगर ऐसा होगा तो वह कितना ज़्यादा, कितना जटिल और कितने विकसित तरीके से सोचती होगी!

इसका मतलब वह तितली, जो अभी-अभी अंजली के कंधे से डर कर उड़ गयी थी और अब उस पीली छतरी पर बैठी हुई सो रही है, वह इस समय हजार से भी ज़्यादा रंगों का एक बहुत जटिल, बहुत सम्मोहक, किसी अज्ञात लोक का स्वप्न देख रही है.

तितली के पास भाषा होती, तो हम उसके सपने, उन रंगों और उसके लोक के बारे में जानते. लेकिन हो सकता है तितली की भाषा होती हो और जैसे हम उसकी आंखों द्वारा देखे गये हजारों रंगों को नहीं देख पाते, उसी तरह हम उसकी बहुत विकसित, बहुत जटिल और बहुत सारी अज्ञात ध्वनियों, स्वरों और व्यंजनों की भाषा को भी न सुन पाते हों.

अगर तितली लिख सकती, उसकी भाषा की कोई लिपि होती...

क्या पता ऐसा हो. वह फूलों-पत्तियों पर बैठकर अपनी लिपियों में कुछ लिखती हो. और हम उसे पढ़ न पाते हों?

ओह! दुनिया के जटिल से जटिल कंप्यूटर और चिप्स से ज़्यादा जटिल है इस तितली का दिमाग़. इस नन्हे-से कीड़े के भीतर वह बायो-जेनेटिक माइक्रो चिप किसने डाला? इसके पंखों पर किसने ऐसे चित्र बनाये? क्या वह बात सच थी?' अंजली ने पूछा. उसकी आवाज़ से राहुल जैसे किसी तंद्रा से जागा.

'कौन-सी बात?' राहुल ने पूछा.

'वही जो अणिमा ने उस दिन कैंटीन में कही थी.'

'कब?' राहुल जान बूझकर अनजान बन रहा था.

'अरे, जब तुम्हारे हिंदी के एडमीशन के बाद हम वहां गये थे और तुमने समोसे और चाय का ट्रीट दिया था.' अंजली उसे याद दिलाने की गंभीर कोशिश कर रही थी. जबकि राहुल को याद दिलाने की ज़रूरत नहीं थी. कत्तई.

'कौन-सी बात! साफ-साफ बताओ.' राहुल ने पूछा.

अंजली कुछ उलझन में पड़ी. थोड़ा रुक कर उसने कहा, 'यही कि तुमने एंथ्रोपोलॉजी छोड़कर हिंदी डिपार्टमेंट में इसलिए एडमीशन लिया...'

राहुल ने अंजली को गौर से देखा. अपनी हार का बदला चुकाने का यही मौका था. 'किसलिए लिया?' उसने सीधे सवाल किया. बड़ी अबोधता से.

'इसीलिए...ऽ.' अंजली ने आंखें तरेरीं.

'किसीऽलिए...ऽ?' राहुल ने फिर से पूछा. पूछने की लंबाई उतनी ही बढ़ाते हुए.

'धत्' अंजली चिढ़ गई. 'कोई बात नहीं. ऐसी जानने की ज़रूरत भी मुझे नहीं है.'

यह डर था, जो अंजली के ऐसा कहने से राहुल के भीतर पैदा हुआ. उसे लगा इसे पूछते हुए अंजली अब हँसी के मूड में नहीं थी. वह सचमुच इसे जानने के लिए व्यग्र थी. अब यहां से हँसी ख़त्म होती थी और शुरू होती थी एक किस्म की तकलीफ़. एक तरह की पीड़ा. उसने साफ-साफ देखा कि अंजली के माथे पर तनाव की कुछ उलझी हुई-सी रेखाएं थीं.

कितनी सुंदर हैं वे रेखाएं, लेकिन उन्हें उस माथे पर क्यों होना चाहिए? यह इतना हँसने वाली लड़की इस तनाव में क्यों पड़े? वह भी उसकी वजह से.

राहुल ने देखा अंजली की आंखें उसी पर टिकी हैं. उनमें कोई उत्सुकता थी या याचना. कुछ तो ऐसा था, जो इसके पहले अब तक नहीं था.

राहुल को अपना गला सूखता-सा लगा. वह बुखार जो कहीं दब गया था, एक बार फिर उभरने लगा. उसने थूक घुटका. उसका गला सूख रहा था. उसने अंजली को देखा और फिर धीरे से कहा, 'हूं!'

'क्या हूं?' अंजली की आवाज़ भी कमजोर और कांपती हुई-सी लगी.

'वह सच था.' राहुल ने कहा. उसने सिर झुका लिया था और उंगलियों से एक दूब की लंबाई खोज रहा था. कहां से उगी है यह?

कहीं से एक ठंडी हवा आई. सितंबर में अगस्त की बची हुई नमी के साथ. घास की पत्तियां धीरे-धीरे हिल रही थीं. एक चुप्पी वहां फैल गयी थी.

राहुल ने सिर उठाकर देखा. वे आंखें वहीं थीं. उसी पर टिकी हुईं. राहुल उनका सामना नहीं कर सका. उसने दूसरी ओर देखा. उधर, जिधर हवा में कांपती छतरी के ऊपर वह तितली सो रही थी. वह इस समय ज़रूर कोई स्वप्न देख रही होगी.

और ठीक इसी पल वह जादू शुरू हुआ. राहुल बिना पलक झपकाए, सांस रोके, उस जादू के एक-एक पल को पूरे विस्तार में देख रहा था. वीडियो के एक सेकेंड में चौबीस फ्रेम होते हैं. वह हर फ्रेम में घटित होते उस दृश्य को हर पल की धीमी गति के साथ, विस्तार में देख रहा था. यह अद्भुत था. आश्चर्यजनक. राहुल की सांसें रुक गयीं थीं.

वह तितली, जो सो रही थी, चुपचाप अपना रूप बदल रही थी. यह कायांतरण था. उसे शायद यह पता नहीं था कि उसके इस करिश्मे को कोई देख भी रहा है. तितली तो ख़ैर एक जीवित प्राणी थी. हद तो यह थी कि वह पीली छतरी भी, जो कपड़े धातु और प्लास्टिक की बनी एक बेजान चीज़ थी, वह भी इस जादू में शामिल थी. वह भी चुपचाप अपना रूप बदलने में लगी थी.

राहुल भौंचक था. यह सब कुछ उसके जीवन में पहली बार, बिल्कुल उसकी आंखों के सामने घट रहा था. मैं जाग रहा हूं न? उसने अपनी आंखें मलीं. तो यह यथार्थ था, वास्तविक? रियल?

वह तितली बड़ी हो रही थी और गोल. और हर पल फैलती जा रही थी. हर

सेकेंड के चौबीस में से प्रत्येक फ्रेम में.

और छतरी छोटी होती जा रही थी. ठीक उसी गति और अनुपात में. इसका मतलब, तितली और छतरी दोनों मिलकर यह खेल खेल रहे थे. दोनों जानते-बूझते इस जादू में शामिल थे. मुश्किल से आधा मिनट लगा होगा, वह तितली पूरी तरह छतरी में बदलकर हवा में उसी तरह कांपने लग गयी थी, जैसे वही असली छतरी हो.

और छतरी तितली बनकर उस छतरी के ऊपर उसी तरह बैठ गयी थी, जैसे वह असली तितली हो.

राहुल हतप्रभ था. स्तब्ध. हे ईश्वर, यह कैसी लीला थी?

क्या यह उस तितली का स्वप्न तो नहीं था, जो अंजली के कंधे से उड़कर गयी थी और छतरी के ऊपर बैठकर सो गई थी? कहीं ऐसा तो नहीं कि राहुल ने जो देखा, वह उस तितली का स्वप्न रहा हो, जो उसकी नींद के भीतर चलता रहा हो.

या क्या पता, खुद उसने ही उस बीच कोई सपना देख डाला हो! उसे एक पल के लिए झपकी आयी भी थी.

लेकिन बीच में उसने आंखें मली थीं और यह अच्छी तरह से जान लिया था कि वह जाग रहा है. फिर उसने अंजली को भी देखा था. वह तो वास्तव में वहां बैठी थी और उसको लगातार देखे जा रही थी. उसकी आंखें नन्हीं-नन्हीं चमकीली मछलियों की तरह उसकी नसों के भीतर बहती लाल नदी में तैरती हुई उसके हृदय की ओर बढ़ रही थीं, वहीं, जहां एक रहस्यपूर्ण जैविक घड़ी होती है, जिसकी 'टिक्...टिक्' में यह सारा

जीवन टिका होता है.

इसका मतलब हुआ, वह जादू सच था! वह तितली वास्तव में छतरी में बदल गयी थी और छतरी तितली बन गयी थी.

तभी, नीम की एक पत्ती टूटकर गिरी और उड़ती हुई वहीं आई, जहां वह तितली बैठी थी, जो कि असल में, अभी कुछ देर पहले तक छतरी थी.

नीम की गिरती हुई पत्ती से डर कर वह तितली उड़ी. जबकि राहुल इस रहस्य को अच्छी तरह से जानता था कि वह तितली नहीं, असलियत में छतरी है.

'छतरी उड़ गयी...देखो.' राहुल ने अचानक ज़ोरों से चीख कर कहा.

अंजली ने चौंकर उधर देखा. 'कहां उड़ गयी? वो तो यहीं है.' उसने कहा.

'नहीं, ये तितली है. बिलीव मी. इट्स अ बटरफ्लाइ.'

अंजली ज़ोरों से हँसने लगी. 'तुम रियली...जोकर हो.'

राहुल ने हार मान ली. वह जान गया था कि इस लड़की को यह समझा पाना लगभग असंभव होगा कि जो उड़ गयी, वह छतरी थी और जो यहां पर रखी हुई है फिलहाल, वह छतरी कत्तई नहीं, तितली है.

'जॉनी जोकर मेरा नाम है...' राहुल ने कहा. हताशा में. यह श्वेता शेट्टी का पॉप सांग था.

अंजली ने उसे देखा. यह पहली बार था. कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी. वह हो गया था, जो ऐसे में हो जाता है. राहुल को लगा, उसके भीतर कोई एक म्यूजिक सिस्टम था, जो पहली बार अचानक बजने लगा है.

अणिमा, ओ.पी. और हेमंत आ गये थे. वे लोग केक, बिस्किट्स, अंकल चिप्स और पेप्सी की पांच बोतलें ले आये थे.

'तो तुम लोगों ने हिंदी लिटरेचर डिस्कस कर लिया?' अणिमा ने अंजली की ओर देख कर कहा. अंजली चुप थी. लेकिन अणिमा की आवाज़ में इतनी विरक्ति और ऐसी उदासी क्यों थी?

जब सब जन, जो जहां से आये थे, वहां पयान कर रहे थे और अंजली जोशी ने अपनी पीली छतरी उठाई तो राहुल ने घूमकर उसे यह सच्चाई बतानी चाही कि वह जिसे धूप में ओढ़कर जा रही है, वह दरअसल छतरी नहीं है.

सच तो यह है कि वह तितली है.

लेकिन वह चुप ही रहा और छह फुट तीन इंच लंबे बांस की लाठ जैसे जिराफ़ के पीछे-पीछे घिसटता हुआ हॉस्टल लौट आया और अपने कमरे में, बेड पर आकर औंधा गिर पड़ा.

'आई थिंक, आई हैव फालेन इन लव...फर्स्ट टाइम इन माई लाइफ...!' ऐसा उसने अपने तकिये से फुसफुसा कर कहा.

यह कैसा समय था. महात्मा गांधी हॉस्पिटल की मॉर्च्युअरी में सापाम का शव बर्फ की सिल्ली के ऊपर अब भी रखा हुआ मणिपुर से पिताजी के यहां आने या अपने वहां भेजे जाने का इंतज़ार कर रहा था. वे तारीखें पास आ रही थीं, जब लोकल गुंडों का हॉस्टल पर हमला होना था.

गोपाल द्विवेदी ने बताया था कि हिंदी विभाग के हेड आचार्य एस.एन. मिश्र नाराज़ थे और उन्होंने गोपाल द्विवेदी से कहा था कि उसने एक गलत लड़के का एडमीशन विभाग में करवा दिया है. वह वहां जातिवाद फैला रहा है. डॉ. राजेन्द्र तिवारी और डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी ने कहा कि ऐसे खर-पतवारों को हम हमेशा उखाड़ फेंकते हैं.

पानी नहीं पायेगा एक बूंद, हम ऐसी मार मारेंगे.

राहुल की आंखों के सामने एक अंधेरा था, जो घिरता जा रहा था. लेकिन उसमें एक पीली तितली कहीं दूर मंडराती हुई दिखाई पड़ रही थी.

इसीलिए उस चिंता के बीच भी राहुल के होंठों पर हँसी जैसी कोई एक लकीर पैदा हुई और वह सो गया.

आठ और नौ सितंबर की तारीखें आयीं और बीत गयीं. इस बीच सापाम का शव ट्रेन से इंफाल के लिए रवाना कर दिया गया. कार्तिकेय, मधुसूदन, प्रताप, मसूद, प्रवीण, ओ.पी. और लगभग पच्चीस स्टुडेंट्स ने, जिनमें लड़कियां भी शामिल थीं, वाइस चांसलर ए.के. अग्निहोत्री को मेमोरेंडम भी दिया, जिसमें मांग की गयी थी कि सापाम को हवाई जहाज से इंफाल भेजा जाय और उन अपराधियों को गिरफ़्तार किया जाय, जिन्होंने उसके साथ लूट-पाट और मारपीट की थी.

वाइस चांसलर ने दूसरी मांग के बारे में आश्वासन दिया कि वे पुलिस को संपर्क करेंगे और जहां तक लाश को हवाई जहाज़ से मणिपुर भेजे जाने का सवाल है, तो युनिवर्सिटी वेलफेयर फंड में इतना रुपया नहीं है.

इन्हीं तारीखों में प्रवीण के कमरे में एस.एम.टी.एफ. की बैठक हुई, जिसमें लड़कों के चारों हॉस्टल—अरबिंद, रमण, टैगोर और देसाई के उन कमरों को, जिनमें स्पेशल मिलिटेंट टास्क फोर्स की कोर कमिटी के सदस्य लड़के रहते थे, सीमित फ्रीक्वेंसी के ट्रांसमिशन से जोड़ने का निर्णय लिया गया. कुल लागत सिर्फ़ आठ सौ रुपयों के आसपास

थी, जो चंदे के द्वारा तीन घंटों के भीतर-भीतर इकट्ठा कर ली गयी. मधुसूदन, हेमंत और प्रवीण ने मिलकर चारों हॉस्टल के दो-दो कमरों में स्पीकर्स फिट किये. तीन माइक किट थे जो राहुल, प्रताप और कार्तिकेय को मिले. तीन बार रिहर्सल के जरिये यह तैयारी कर ली गयी कि मौका आते ही दस-बारह मिनट के भीतर-भीतर स्टुडेंट्स की ओर से एक्शन शुरू हो जाय. चारों हॉस्टल के लड़कों से यह सूचना भी इकट्ठी कर ली गयी कि किसके घर से कितने का मनीऑर्डर या ड्राफ्ट आया है या आने वाला है. गुंडे अक्सर उन्हीं लड़कों को अपना टारगेट बनाते थे, जिनके पास ज़्यादा रुपया आता था.

डी. गोपाल राज़ुलु, अखिलेश रंजन और नवकांत झा—ये वे तीन लड़के थे, जो इस बार सूची में टॉप पर थे. सर्दियां आ रही थीं इसलिए गर्म कपड़े ख़रीदने के लिए उनके घर वालों ने ज़्यादा रुपये भेजे थे. गोपाल राज़ुलु के भाई डॉक्टर थे. राज़ुलु कई वर्षों से एक कैमरा ख़रीदना चाहता था. एक्सकर्शन टूर में उसे कलकत्ता जाना था, इसलिए उसके पहले उसके भाई ने वर्जीनिया से उसे बीस हज़ार रुपये भेजे थे.

तो हिटलिस्ट में सबसे ऊपर था—डी. गोपाल राज़ुलु. दूसरे नंबर पर अखिलेश रंजन. और तीसरे पर नवकांत झा. एक आंध्र-प्रदेश और दो बिहार से यहां आये हुए स्टुडेंट्स.

लेकिन इन्हीं तारीखों में अंजली भी तो मौजूद थी!

यह एक ऐसा समय था, जिसकी ज़्यादातर तारीख़ों के भीतर किसी तीसरे दर्जे के सड़क छाप, सस्ते, घटिया उपन्यास या बॉलीवुड की फ्लॉप-हिट फिल्मों जैसा टुच्चा यथार्थ था. उनकी पटकथा ऐसी थी, जिसमें घटने वाली घटनाओं का कोई तर्क नहीं था. वे संयोगों और तमाम तरह की आकस्मिकताओं से भरी हुईं थीं. असंगत, बचकाना, घटिया लेकिन सनसनीखेज़. हिंसा, ग्लैमर, सेक्स, साज़िश, फूहड़ 'स्पेशल एफेक्ट्स', आंसुओं, चीख-पुकार और दिल को छू लेने वाले 'सिचुएशंस' और गानों से भरपूर.

लगता था जैसे इस समय की पटकथा किसी संवेदनशील सट्टेबाज़ ने लिखी है, जो हर बार एक नया दांव लगाता है और फिर अपने उसी दांव की परिणति से डरता रहता है.

लेकिन इन्हीं तारीख़ों में कुछ ऐसा भी घट रहा था, जो सुबह-सुबह पत्तियों पर गिरने वाली ओस जैसा शीतल, पारदर्शी और सुंदर था.

राहुल क्लास रूम से निकलकर गलियारे में खड़ा था कि पीछे से आकर कोई उससे टकराया. राहुल ने घूमकर देखा. वह अंजली थी. अपनी हँसी के साथ.

राहुल लाइब्रेरी में बैठा, डेस्क पर झुका हुआ, कुछ नोट्स ले रहा था कि अचानक उसके कान में किसी ने फूंक मारी. ' फूऽहऽ...ऽ.' हवा इतनी तेज़ थी कि कान के भीतर खुजली होने लगी. अंजली ही थी.

वह चला जा रहा था कि पीछे, उसकी गर्दन पर, एक ठंडी, नुकीली चीज़ चुभने लगी. उसने घूमकर देखा. अंजली अपनी बंद छतरी के साथ हँस रही थी. नोक को उसकी ओर ताने हुए. डराने की कोशिश में.

लाइब्रेरी में ही, बुक शेल्व्स के बीच की संकरी जगह में खड़ा वह किताबें देखने में लगा था कि किसी कंधे ने उसे धक्का दिया. वह कंधा अंजली का ही था.

राहुल शैलेंद्र जॉर्ज और शालिगराम के साथ कैंटीन जा रहा था. सामने से चंद्रा, शुभा मिश्रा और शर्मिष्ठा के साथ अंजली आ रही थी. लोकल लफूटों का कुख्यात गैंग सड़क के किनारे, कुछ ही मीटर की दूरी पर खड़ा था. इसमें लक्खू भी था, जिसने उस दिन पहले राहुल को और फिर आभा को ढेला मारा था. 'तुम्हाई तो

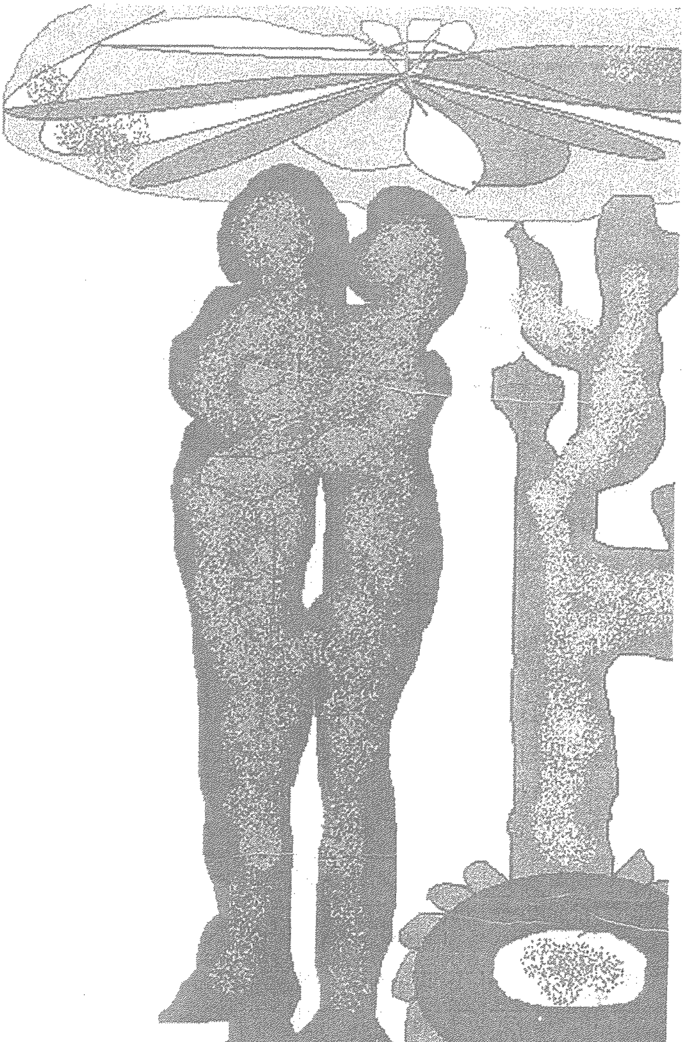

बऊ की.' राहुल डर रहा था कि कहीं अभी उनमें से कोई उसे आवाज़ न मार दे. 'अबे ओ हीरो! स्साले हमाए हत्थे पै चढ़ा तो तुमखों राहुल राय से अनुपम खेर बना देंगे...' अंजली अपने झुंड में से उसी की ओर देखती हुई चली आ रही थी. वही मुस्कराती हुई आंखें, जो अचानक दो नन्हीं-नन्हीं चमकीली मछलियां बनकर उसके भीतर की लाल नदी में तैरने लगती हैं.

दोनों झुंड जब सड़क पर एक-दूसरे को पार करने लगे, तभी अचानक अंजली ने लड़खड़ाते हुए अपनी साइड बदल ली. कुछ इस तरीके से, जैसे उसकी सैंडिल की हील किसी पत्थर पर फिसल गयी हो और उस सोची-समझी, झूठ-मूठ की लड़खड़ाहट के बीच, एक झटके में, एक चिकोटी राहुल की पीठ पर, पल भर को, चिपक गयी. 'उक्ख...!' राहुल के गले से निकला. फिर उसके कानों में सुनाई पड़ा—'ततैया.'

शिकारी बाजों का गिरोह कुछ ही फुट दूर था और उनकी घाघ आंखों के ठीक सामने वह चालाक चिड़िया अपना खेल खेल गई थी. और अब वह अपने झुंड में हँसती हुई चली जा रही थी, किसी दूसरी ही बात पर.

ओह! बहुत ब्रिलियंट हैं आप. दिस इज़ दैट आय लव यू. मैं तो एक मूर्ख-सा घुग्घू हूं. लेकिन मैडम, एक दिन अपनी पीठ पर बिठाकर मैं आपको आसमान में ले जाऊंगा. पक्का! कभी घुग्घू का गाना सुना है आपने?

'दिल का भंवर करे पुकार...
प्यार का गीत सुनो...प्यार का गीत सुनो...रे...ऽ
हूं...ऊं-ऽ हूं...ऊं...ऽ हूं...ऽऽ हूं!'

अगर हेमंत बरूआ, कार्तिकेय या ओ.पी. होते, तो फौरन भांप जाते कि अभी-अभी यहां 'कुछ' हुआ है. लेकिन राहुल के साथ तो हिंदी साहित्य, एम.ए. प्रीवियस के साथी थे. शालिग्राम ने कहा, 'राहुल जी, आपने वास्तव में अत्यंत सुरीला कंठ पाया है. बहुत बढ़िया गाते हैं आप.'

'अरे नहीं! ये तो बस यूं ही.' राहुल ने झेंपते हुए कहा.

अंजली इन दिनों हर ऐसे मौके की ताक में रहती, जिसमें वह राहुल को छू सके. और राहुल भी इसी फेर में रहता.

अंजली लड़कियों के साथ लंच आवर में क्लास रूम से बाहर निकल रही थी. राहुल ने चुपके से उसकी सबसे छोटी कानी उंगली दबा दी. लाइब्रेरी में एक बार उसकी चोटी खींची, दूसरी बार उसका कान खींचा, तीसरी बार उसकी गर्दन पर हल्के से उंगलियां धंसाईं और चौथी बार उसकी हथेली को अपनी हथेली में कुछ सेकेंड्स के लिए भर लिया.

यह एक नयी भाषा थी, जिसे उन्होंने अपने-अपने जीवन में पहली बार जाना था. इस भाषा के वाक्य अलग थे, उनका सिंटैक्स भिन्न था. वे उसके अनोखे व्याकरण को

धीरे-धीरे, हर रोज़ सीख रहे थे. यह सीखना इतने आश्चर्यों, सुखों, कौतुकों और सांस तक को रोक देने वाली बेचैनियों से भरा था कि वे उन पलों में अवाक्, हतप्रभ और अवसन्न रह जाते. वह अनुभव उनकी चेतना और देह को अपने इंद्रजाल में बांध कर जड़ कर देता और उन्हें लगता इस समूचे ब्रह्मांड में वे दोनों बिल्कुल अकेले हैं.

इस भाषा में ऐसे शब्द थे, जिनका ध्वनियों में उच्चारण नहीं होता था. उनको लिखने के लिए लिपियों की, वर्ण की ज़रूरत नहीं थी. यह एक ऐसी भाषा थी, जिसके भीतर विद्युत और चुंबकीय तरंगें थीं. इलेक्ट्रो मैग्नेटिक करेंट्स. इस भाषा में कोई भी अभिव्यक्ति एक-दूसरे को छूकर ही संभव होती थी. और ऐसा करते ही अचानक जैसे किसी सम्मोहक ऊर्जा से भरी किसी तेज़ आंधी या प्रचंड नदी में उनका शरीर अवसन्न होकर तिनके-पत्ते-सा उड़ने-बहने लगता था. असहाय.

उदाहरण के लिए उस दोपहर, जब लाइब्रेरी में, बुक शेल्व्स के बीच की संकरी-सी जगह में, जहां पुरानी होती किताबों की धूल और नमी में लिथड़ी गंध थी, राहुल ने जब अंजली की हथेली को अपनी हथेलियों में लिया, तो उसके शरीर के भीतर बिजली और चुंबक से भरी इतनी तेज़ आंधी पैदा हुई और बिना कुछ बोले इतनी ज़्यादा मात्रा में अभिव्यक्ति हुई कि उसने साफ-साफ देखा कि अंजली का गोरा चेहरा उस ऊर्जा में दहक कर तांबे की तरह धूमिल होता जा रहा है. उसकी आंखों में एक तरह की कातरता-सी झलकने लगी और लगा वह अभी फर्श पर या उसकी छाती पर ढह जाएगी. स्वयं उसे लगा कि उसकी देह की शिराओं में बहने वाला सारा रक्त अचानक द्रव की तरल अवस्था छोड़कर भाप या ऊर्जा जैसी किसी और ही चीज़ में बदल गया है और अंजली की हथेली ने एक पल में उसे पी लिया है. उसे खुद अपने ही घुटने कांपते-से लगे. वह अशक्त हो गया था. किसी कमज़ोर पौधे की तरह उस तेज़ अंधड़ में थरथराता हुआ.

क्या 'रेइकी', जिस पर राहुल कभी विश्वास नहीं करता था, वास्तव में हुआ करती है? जापानी स्पर्श चिकित्सा विज्ञान; जो कहते हैं, भारत से ही कभी कोई बौद्ध संन्यासी सदियों पहले अपने साथ जापान ले गया था.

जो भी प्यार करने लगता है वह बौद्ध भिक्षु बन जाता है, अ बुद्धिस्ट मांक. और जिसको भी वह छू देता है, उसके सारे रोग ठीक हो जाते हैं. मैं एक दिन आपको ठीक करूंगा और आप भी मुझे एक दिन ठीक कर दीजिएगा, प्लीज़! क्योंकि आप भी तो एक बौद्ध भिक्षुणी हैं. राइट?

कितनी विचित्र थीं ये तारीख़ें, जिनमें एक तितली ने तीस सेकेंड्स के भीतर-भीतर, एक अनोखे जादू द्वारा, छतरी का रूप धारण कर लिया था और अब सारी दुनिया को चकमा देते हुए राहुल की समूची चेतना और अस्तित्व को अपने नीचे घेरती जा रही थी.

और इन्हीं तारीख़ों में वह खाऊ, तुंदियल, भोगी, अमीर, कामुक, लुच्चा, मोटा

आदमी भी मौजूद था, अपने बाज़ार और अपनी सत्ता के साथ. और वे 'क्रिटर्स' भी, जिनकी हिंसा, लूट, अनैतिकता और व्यभिचार के कारण आज का समूचा यथार्थ लहूलुहान था.

विडंबना यह थी कि यही 'क्रिटर्स' एक बहुत बड़ी, डरावनी संख्या में उस भाषा के भीतर भी मौजूद थे और उन्होंने उसे अधिगृहीत कर डाला था, जिस भाषा के साथ अब राहुल ने अपने जीवन को जोड़ लिया था. एंथ्रोपोलॉजी छोड़कर.

यानी हिंदी.

12 सितंबर की रात. दस बजकर तेरह मिनट, बाइस सेकेंड्स.

लड़कों के चारों हॉस्टल्स के उन कमरों में, जिनमें एस.एम.टी.एफ. (स्पेशल मिलिटेंट टास्क फोर्स) की कोर कमिटी के सदस्य लड़के रहते थे, दीवार पर लगे स्पीकर्स पर कार्तिकेय काजले की आवाज़ गूंजने लगी.

'हेलो...हेलो! गेट रेडी. क्विक. जीप सी.वी. रमण हॉस्टल के गेट से अंदर आ गयी है. गेट होल्ड ऑव एवरीथिंग यू हैव! ओ.के. वेट फॉर द नेक्स्ट कॉल! ओ.के. एंड ओवर!...ओवर!'

निकेतन, प्रवीण, मसूद, मधुसूदन, कण्णन, ओ.पी., रवि, दिनेश, इमरोज़, परवेज़, हेमंत बरुआ, दिनमणि, रमेश अटलूरी, गुलाब केसवानी समेत चारों हॉस्टल्स के 25 लड़के फटाफट हॉकी की स्टिक्स, सरिया, खुखरी, डंडे, रामपुरी, साइकिल की चेन और कट्टों से लैस हो गये. देखते-देखते दूसरे लड़कों ने एक रूम से दूसरे रूम तक, दौड़ कर यह सूचना हर स्टूडेंट तक, एक छोर से दूसरे छोर तक, पहुंचा दी. मोलोतोव, ईंट-पत्थर, पटकने वाले हथगोलों के साथ कुछ लड़के सी.वी. रमण हॉस्टल की छत पर पहुंच गये थे, जिसके नीचे गुंडों की जीप खड़ी थी.

डी. गोपाल राजुलु. रूम नंबर 112 और नवकांत झा रूम नंबर 148. आंध्र प्रदेश और बिहार से यहां आने वाले स्टूडेंट्स. सी.वी. रमण हॉस्टल के यही दो लड़के थे, जो 'हिटलिस्ट' की सूची में टॉप पर थे. राजुलु के पास बीस हजार रुपये का और नवकांत झा के पास साढ़े आठ हजार का ड्राफ्ट आया था.

उस गंजियल, खुर्राट, फटीचर अधेड़ डाकिये ने इस बार फिर कमीशन के लालच में मुखबिरी की थी. लेकिन इस बार फ़र्क यह था कि स्टूडेंट्स ने उसकी सूचना को 'इंटरसेप्ट' कर लिया था और अपराधियों के इस दांव की काट पहले से तैयार कर ली थी.

बीस मिनट बाद एक साथ घटनाएं घटने लगीं. एस.एम.टी.एफ. का एक्शन शुरू हो गया था.

धड़...धड़...धड़ाक्!

लात मारकर रूम नंबर 112 का दरवाज़ा खोल डाला गया और किसी अंधड़

की तरह लड़के राजुलु के कमरे में घुस गये. ठीक इसी पल बिजली का मेन स्विच ऑफ हुआ और चारों हॉस्टल्स अंधेरे में डूब गये.

तड़...तड़...तड़...! तड़ाक्...तड़ाक्.

लाठियां, छड़ें और हॉकी की स्टिक्स अंधेरे में चल रही थीं. अचानक कहीं धमाका हुआ. किसी ने कट्टे से फायर किया. कांच टूटने की आवाज़ आयी.

शहर का नामी-गिरामी हिस्ट्रीशीटर और कुख्यात गुंडा लच्छू गुरू अपने चार शागिर्दों के साथ रूम नंबर 112 की फर्श पर लहूलुहान तड़प रहा था. उसका कट्टा छीन लिया गया था. एक-एक मिनट पर पचासों चोटें उस पर पड़ीं थीं.

पांचों गुंडे लस्त-पस्त थे. उन्हें गलियारे में घसीटा जा रहा था.

'बी, केयरफुल. मरना नहीं चाहिए. टेक देम डाउन...' राहुल कह रहा था. उसकी बांहों की मछलियां सख्त थीं. छह फुट तीन इंच का सींकिया कंकाल ओ.पी. सेंटर फारवर्ड खेलता हुआ अपनी हॉकी की स्टिक से अब तक लच्छू गुरू की खोपड़ी में कई गोल दाग चुका था. प्रताप और कार्तिकेय गंभीर थे.

अट्ठारह साल का निकेतन, जिसने इसी साल फर्स्ट इयर में एडमीशन लिया था और जिसके होंठों के ऊपर के रोयें अभी ठीक से काले भी नहीं हो पाये थे, वह भी अपना बेल्ट लहराता हुआ, ब्रूस ली बना, गुंडों को बीच-बीच में 'सटाक्-सटाक्' मार रहा था.

मेन स्विच फिर ऑन हुआ. चारों हॉस्टल्स से एक साथ समवेत शोर उठा. हो. ..हो...हुर्रेऽ...! रोशनी फिर लौट आयी.

यह एक बहुत बड़ी कामयाबी थी. कुछ लड़के उत्तेजना में गुंडों की जीप को जला डालना चाहते थे, उस पर पेट्रोल छिड़क भी दिया गया था और अब बस या तो छत से मोलोतोव फेंकने की देर थी, या फिर एक छोटी-सी तीली दिखाने की. लेकिन प्रताप और मसूद ने किसी तरह उनको समझाकर रोक लिया. हालांकि, गुंडे जीप से भाग न जायें, इस संभावना को खत्म करने के मकसद से उसके चारों पहियों की हवा पहले ही निकाली जा चुकी थी.

गुंडों को सीढ़ियों से घसीटते हुए रमण हॉस्टल के मैदान में लाया गया. देखते-देखते तीन सौ से ज़्यादा स्टूडेंट्स की भीड़ वहां इकट्ठी हो गयी. जीत के गर्व और सफलता की खुशी में उनके चेहरे दमक रहे थे.

'हिप...हिप हुर्रे...ऽऽ'

हिप...हिप...हिप...हिप...

'अभी तो ये अंगड़ाई है, आगे और लड़ाई है.'

'नहीं चलेगी, नहीं चलेगी.

गुंडागर्दी नहीं चलेगी...'

उस भीड़ में से कहीं से अजय देवगन ऊंची छलांग लगाकर सीधे गुंडों की

पीठ पर अपने बूटों के साथ टपकता था, कभी ब्रूस ली 'हो...शू...शू...ऽऽ ओच्च... ओच्च...शूऽऽ' करता हुआ, कराटे-जूडो के दांव दिखाता अपनी बेल्ट 'सांय...सांय.. सटाक्' लहराता था. अपनी शर्ट उतारकर खूंख्वार तरीके से चलता हुआ 'टर्मिनेटर' का अर्नाल्ड श्वात्जेनेगर उन पस्त पड़े गुंडों को कॉलर पकड़कर ऊपर उठा लेता था और ठीक इसी वक़्त कहीं से एक महावानर आकर उस गुंडे के थोबड़े पर मुष्टिका प्रहार करता था और एक-साथ जय घोष गूंजता था—

'बोलो, बजरंग बली की...जय!'

राहुल जेम्स बांड का पियर्स ब्रॉसनेन बना हुआ था और लच्छू उस्ताद को अपनी टांगों पर खड़ा होने में मदद देते-देते लंगड़ी मार देता था और इसके बाद ठहाके लगने लगते थे.

इसी बीच अचानक कहीं से जॉनी लीवर और 'मास्क' के जिम कैरी निकलकर आये, दोनों जोकरों ने अपने-अपने दांत चमकाए और उछल-उछलकर गाने लगे—

'मार दिया जाय, कि छोड़ दिया, बोल तेरे साथ...'

'मैं हूं डॉन, मैं हूं डॉन...मैं...मैं...मैं...' छह फुट तीन इंच लंबा शुतुरमुर्ग सुपर स्टार अमिताभ बच्चन बना, नाचता हुआ, अपनी पतली टांगें हवा में फेंक रहा था.

'अब तेरा क्या होगा रे कालियाऽ... ऐं?' गब्बर सिंह और सांभा लहूलुहान और मिमियाते गुंडों से पूछ रहे थे.

राहुल के कंधे पर किसी ने हाथ रखकर दबाया. वह दिनमणि था. मणिपुर से जियोलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएशन करने के लिए आया हुआ छात्र.

'ही इज़ द मैन! नाउ आइ कैन मेक आउट. सापाम के साथ इनोंने ही मारा-पीटी किया था. मैं पैचानता है उसको. एकदम कनफर्म्ड. आई टेल यू.'

राहुल को ओ.पी. और कार्तिकेय ने पकड़ रखा था. वह घायल तेंदुए की तरह छूटने के लिए तड़प रहा था. 'आय विल किल हिम...!'

'कंट्रोल...कंट्रोल योरसेल्फ...राहुल! राऽहुल' कार्तिकेय चीख रहा था.

जीप में उन गुंडों को पीछे लाद लिया गया और लड़के, उसमें जहां कहीं भी जगह थी, हर जगह लद गये. बोनट, फुटबोर्ड से लेकर स्टेपनी और हुड की रॉड तक. बिना हवा की पंक्चर जीप धीरे-धीरे वायस चांसलर अशोक कुमार अग्निहोत्री के रेजिडेंस की ओर चलने लगी और पीछे-पीछे लड़कों का झुंड.

राहुल ने देखा कि जीप के पीछे-पीछे नाचते-कूदते हुए लड़कों की उस भीड़ में चुपचाप, सापाम और उसका भाई भी चल रहे थे. राहुल की आंखें एक पल को सापाम से मिलीं फिर उसने उसके भाई को देखा. उसकी कनपटी से अब भी खून बह रहा था. यह वही जगह थी, जहां पुलिस ने उसे आतंकवादी समझकर इंफाल में उस वक़्त गोली मारी थी, जब वह बच्चों को पढ़ाने स्कूल जा रहा था.

'एक बड़ा, बहुत बड़ा और बिना किसी स्वार्थ का सामूहिक स्वप्न या यूटोपिया हर सभ्यता के पास ज़रूर होना चाहिए. इतिहास बताता है कि कोई ऐसी मानव सभ्यता नहीं हुई, जिसमें किसी लक्ष्य को लेकर उन्माद या जुनून या क्रेज़ नहीं रहा.' किन्नू दा ने कहा था.

'तुमने मिशेल फूको को पढ़ा है? पंद्रहवी-सोलहवीं सदी में कोढ़ियों और अश्वेत आदिवासियों के प्रति जो भय और घृणा पश्चिमी सभ्यता में थी, वह कुछ नहीं एक उन्माद, एक पागलपन...एक कलेक्टिव न्यूरॉटिक डिसआर्डर ही था. विचारधाराओं, धर्मों, दर्शनों या राजनीतिक सिद्धांतों की महानता या उनका घटियापा इस पर निर्भर करता है कि वे ऐसा कौन-सा यूटोपिया या उन्माद या स्वप्न अपनी सभ्यता के मनुष्यों के सामने पेश करते हैं, जिसमें कम से कम घृणा, हिंसा, भय और तोड़-फोड़ हो. बुद्ध या गांधी इसीलिए महान् थे कि उनके स्वप्न में कहीं हिंसा और घृणा की जगह नहीं थी. जब कि पश्चिम में पैदा होने वाले ज़्यादातर 'कांस्ट्रक्ट्स' बिना हिंसा और बिना घृणा के पूरे ही नहीं होते थे.'

किन्नू दा की आवाज़ राहुल के कानों में गूंज रही थी.

'राहुल, पश्चिम ने गांधी को परास्त कर डाला है. मुझे डर लगता है कि हम बहुत जल्द लहूलुहान होकर टुकड़ों-टुकड़ों में टूट जाएंगे.'

राहुल ने सापाम और उसके भाई को देखा. फिर उसे नीम के पेड़ के नीचे खड़े क्षत-विक्षत चैतन्य महाप्रभु दिखाई पड़े. उनकी फूटी हुई ढोलक और मंजीरे. फिर उसने देखा कि उसके उस देश का नक्शा कई टुकड़ों में टूट-टूटकर बिखरता हुआ उस स्याह अंधेरे में गायब हो रहा है, जिसे वह बेतहाशा प्यार करता है.

'मैं बाज़ार का विरोधी नहीं हूं. लेकिन मार्केट कोई 'कलेक्टिव ड्रीम' नहीं है. यह कोई यूटोपिया नहीं है. इसमें कोई स्वप्न नहीं देखा जा सकता. इसमें ऐसा कुछ नहीं है जो उदात्त, विराट और नैतिक हो. मुनाफा, नगदी, लाभ, घाटा...इसके सारे 'इनग्रेडिएंट्स' घटिया, क्षुद्र और छोटे हैं. यह लालच, ठगी, होड़, स्वार्थ और लूट-खसोट के मनोविज्ञान से परिचालित होता है.' किन्नू दा की आवाज़ गंभीर और उदास थी.

'क्या तुम अपनी आंख से नहीं देख सकते कि यह मार्केट जहां-जहां, जिन-जिन देशों में आया है, उसने उन्हें टुकड़ों-टुकड़ों में तोड़ कर, उन्हें रक्तपात और हिंसा के हवाले कर डाला है.'

राहुल की आंखों के सामने उन महादेशों, महासंघीय गणतंत्रों के दृश्य घूम गये, जिन्हें बाज़ार ने तहस-नहस कर डाला था. कोसोवो, सर्बिया, यूगोस्लाविया, सोवियत संघ...

अमेरिका और यूरोप के कुछ अमीर देश ऐसे थे, जो व्यापारी देशों में बदल गये थे और तीसरी दुनिया के समाजों को उन्होंने अपनी मंडियों में तब्दील करके उन्हें

उथल-पुथल, विघटन, हिंसा और अपने दलालों से भर दिया था. एक-एक कर उन समाजों और अतीत के उन सार्वभौम देशों के सारे पुर्जे, सारे अंग, सारे अवयव विखंडित होकर एक-दूसरे से टकरा रहे थे. बिखर रहे थे.

आश्चर्य यह था कि टेलिविजन और अख़बारों में सिर्फ शेयर बाज़ार के मूल्य सूचकांक का उतार-चढ़ाव दिखाया जा रहा था, वह विघटन और हिंसक टकराहटें नहीं, जो लगातार जारी थीं. चारों ओर. हर तरफ.

क्या अब हमारी बारी है?...कौन है इस बाज़ार का एजेंट? कौन है इस देश का असली दुश्मन? क्या वही, रावण की वे संतानें, जिन्हें पुलत्स्य ने समुद्र में फेंक दिया था? क्या वे लौट आये हैं और अंग्रेजों ने सत्ता दरअसल उन्हीं को हस्तांतरित की थी?

राहुल, ओ.पी., कार्तिकेय, परवेज़, इमरोज़, हेमंत जीप के हुड के साथ सटकर खड़े थे. उन्होंने एक-दूसरे का हाथ थाम रखा था और वे गा रहे थे...

'...वक़्त आने दे तुझे, बतलाएंगे ऐ आसमां
हम अभी से क्या बताएं, क्या हमारे दिल में है...
सरफ़रोशी की तमन्ना..'

काफी देर तक नारे लगाने के बाद वाइस चांसलर अशोक कुमार अग्निहोत्री अपने रेजिडेंस से बाहर निकले. उन्होंने पुलिस को फोन किया. थोड़ी देर में पुलिस की गाड़ियां आ गयीं और लच्छू गुरू और उसके चारों घायल साथियों को ले गयीं.

वाइस चांसलर ने वायदा किया कि युनिवर्सिटी और हॉस्टल की सिक्योरिटी बढ़ा दी जाएगी. लड़के कानून को अपने हाथ में न लें. उन्हें जानकारी मिली है कि हॉस्टल के कुछ कमरों में हथियार इकट्ठा किये गये हैं. यह गैर कानूनी है. उन्होंने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके रोक रखा है, वरना सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस उनसे कई बार हॉस्टल के कमरों की तलाशी लेने और 'रेड' करने की बात कर चुके हैं.

वाइस चांसलर अग्निहोत्री ने कहा कि कुछ स्टुडेंट्स के बारे में उन्हें ऐसी जानकारियां मिली हैं, जो ठीक नहीं हैं. स्टूडेंट्स को अपना सारा ध्यान अपने कैरियर पर लगाना चाहिए. सच पूछिये तो मैं तो ऐसे हायर एजुकेशन के भी खिलाफ हूं, जिसका कमाई या 'अर्निंग' से कोई संबंध न हो. इतना अच्छा समय आया है, इतनी कैरियर अपार्च्युनिटीज़ हैं. शॉर्ट टर्म कोर्सेस चल रहे हैं. आप फालतू चीज़ों में अपना वक़्त क्यों बरबाद कर रहे हैं? टेक अ डिप्लोमा एंड फ्लाई टु स्टेट्स. वाइस चांसलर ने हँसते हुए कहा.

'सर, अबी-अबी जिस क्रिमनल को पकड़ा है, ये वही है जिसने सापाम तोंबा के साथ लूट-पाट की थी...'

'और उसे 'सोडोमाइज़' करने की कोशिश की थी...हीटर पर उससे 'पिस'

कराया था, जिसके करेंट से...'

राहुल और दिनमणि ने वी सी को टोककर बताने की कोशिश की. 'वही सापाम तोंबा सर, जिसने स्यूइसाइड किया था!'

'ओह!' अशोक अग्निहोत्री गंभीर हो गये. 'आय विल लुक इन टु इट. वैसे वह बहुत बुरा हुआ. मुझे उसके फादर से बड़ी सिंपैथी है. पुअर चैप... मैंने मणिपुर के गवर्नर और चीफ सेक्रेटरी को फोन किया...उसके फादर तक सूचना भिजवाई... मालूम है, उसी की वजह से हमने युनिवर्सिटी में दस सितंबर को होने वाला फैशन शो और कल्चरल प्रोग्राम पोस्टपोन किया... इसमें युनिवर्सिटी को आठ लाख का घाटा हुआ. हमने 'स्पांसर्स' से बात की थी. एक अच्छा खासा 'रेवेन्यू' हमें मिलता. मेरी बड़ी अच्छी योजनाएं हैं. मैंने सोचा है, हमें खुद 'एक्स्ट्रा फंड जेनरेट' करना चाहिए. यू.जी.सी. से हमें क्या मिलता है? सब कुछ तो स्टाफ की सैलेरी में खत्म हो जाता है. मैं यहां पार्क डेवलप करना चाहता हूं. एडमिनिस्ट्रेशन को पूरी तरह कंप्युटराइज़्ड कर देना चाहता हूं. बहुत नॉमिनल फी पर सारे हॉस्टलर्स को ट्वेंटी फोर आवर्स नेट सर्फिंग की सुविधा देना चाहता हूं...'

'आपके सिक्योरिटी ऑफिसर्स यहां के लोकल गुंडों और क्रिमिनल्स से मिले हुए हैं सर!'

'और वह पोस्टमैन सारी इनफार्मेशन उन्हें देता है कि किस स्टूडेंट के पास कितना मनीऑर्डर या ड्राफ्ट आया...'

'हॉस्टल के वार्डेन बहुत बंगलिंग कर रहे हैं, सर!'

'एडमीशन में बड़ी धांधली है, सर.'

'मेस का खाना कुत्ता भी नहीं खा सकता सर!'

'डिस्पेंसरी में न तो डॉक्टर है, न दवा...'

'हिंदी डिपार्टमेंट, ब्राह्मणवाद का अड्डा है सर.'

'टीचर्स क्लास नहीं लेते और बार-बार स्ट्राइक करते हैं. स्टुडेंट्स का बड़ा लॉस होता है सर!'

सबने देखा, वाइस चांसलर अशोक कुमार अग्निहोत्री के चेहरे की हँसी अचानक गायब हुई. चिढ़ और गुस्से ने अपनी जगह बनाई और वे अपने चारों सिक्योरिटी गार्ड्स के साथ अपने बंगले के अंदर चले गये.

'मैक्स कंप्यूटर सेंटर' में वाइस चांसलर अशोक अग्निहोत्री की 'डि-फैक्टो फाइल' में जो सूचना अंग्रजी में 'फीड' की गयी थी, उसका हिंदी में तर्जुमा यों था:

'वित्तीय और रुपये-पैसे की हेरा-फेरी और उनके मनचाहे दुरुपयोग में तकनीकी तौर पर इतना दक्ष और शातिर वाइस चांसलर कि उसे आर्थिक-भ्रष्टाचार के मामले में नहीं पकड़ा जा सकता. लेकिन अपने कुलपतित्व के कार्यकाल में उसने सिर्फ अपने

चापलूसों, रिश्तेदारों और प्रेमिकाओं आदि को ही प्रोमोट किया है. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्धारित नियम-कायदों को पूरी तरह दरकिनार करते हुए श्री अशोक कुमार अग्निहोत्री ने बिना पदों को विज्ञापित किये, बिना किसी तरह की शैक्षणिक या अन्य योग्यताओं को आधार बनाये, मनमाने तरीके से अपने चाटुकारों और नाते-रिश्तेदारों को विभिन्न पदों पर नियुक्त किया है, उन्हें विभिन्न परियोजनाओं में लगाया है, अनुदान और फेलोशिप प्रदान किये हैं, विदेश भेजा है. विश्वविद्यालय के प्रकाशन विभाग में जिस व्यक्ति की नियुक्ति अंग्रेजी के संपादक पद पर हुई है, उसके पास हिंदी की डिग्री है और उसे अंग्रेजी का एक वाक्य लिखना नहीं आता. जिसे मनोविज्ञान का प्रोफेसर बनाया गया है, उसके पास पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय से बागवानी (हॉर्टीकल्चर) की डिग्री है. जिसे गणित का प्रोफेसर बनाया गया है, वह बॉटनी का थर्ड डिवीज़नर है. इसके बावजूद इस वाइस चांसलर के खिलाफ़ मुंह खोलने की कोई हिम्मत इसलिए नहीं करता क्योंकि ज़्यादातर उसके अहसानों से दबे हुए धूर्त, चापलूस और लालची लोग हैं. इसके अलावा उसकी ताकत का एक मुख्य आधार तमाम शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थानों में उसकी गहरी पकड़ और उसका जातिवाद भी है. उसकी षष्ठिपूर्ति पर एक स्थानीय संस्था ने, विश्वविद्यालय के ही पैसे से, जो अभिनंदन ग्रंथ निकाला था, उसमें अग्निहोत्री जी को सम्राट अशोक, अकबर महान और सिकंदर से भी बड़ा दिग्विजयी सिद्ध करने वाले अट्ठाइस लेखकों में इक्कीस ब्राह्मण, तीन बनिये, एक कायस्थ, दो ठाकुर और एक विदेशी था.'

'डि-फेक्टो फाइल' के मुताबिक विश्वविद्यालय जिस पहाड़ी पर बसा हुआ था, उसके कई सौ एकड़ ज़मीन को गुप्त रूप से कुछ स्थानीय ठेकेदारों और कुछ व्यापारी कंपनियों को लीज़ पर देने के नाम पर उसने अच्छा-खासा कमीशन खाया है. विश्वविद्यालय के फंड को वह अपना निजी बैंक एकाउंट मानता है और पानी पीने लंदन और पेशाब करने अमेरिका जाता है. यह भ्रष्टाचारी वाइस चांसलर इसलिए ताकतवर बना हुआ है क्योंकि यह सिस्टम ही पूरी तरह भ्रष्ट हो चुका है.'

'तुम देखना...अगर अभी भी कुछ नहीं हुआ तो हमारा ये देश हाइती, पनामा, कोलंबिया या दुबई बन जाएगा. माफियाओं का राज यहां होगा और दो अक्टूबर को राजघाट पर सिर्फ वही जा पायेंगे. बाकी नागरिकों का प्रवेश वहां वर्जित होगा.' कार्तिकेय काजले ने कहा.

'इस वाक्य को तुम 'फ्यूचर टेंस' में क्यों बोल रहे हो? ऐसा तो हो चुका है, या फिर होने ही वाला है.' प्रताप ने हँसते हुए जोड़ा.

वे हँस तो रहे थे लेकिन उस हँसी के पीछे एक गहरी विकलता थी. आने वाले दिनों का अंधेरा उनकी आंखों के सामने खड़ा था.

'मैं तो सोचता हूं, जाकर वाइस चांसलर के पैर पकड़ लूं और कहूं कि ओ

हमारे समय के अपराजेय शैतान, मैं तेरे पैर पड़ता हूं, कहीं मुझे भी तू उसी तरह फिट कर दे जैसा अपनी रखैलों और कुत्तों को 'फिट' किया है...मैं डर गया हूं, राहुल!' यह ओ.पी. कह रहा था. हमेशा का हँसोड़ और बातूनी. उसकी आवाज़ में हताशा और पराजय की स्याह परछाईं थी.

राहुल, हेमंत, ओ.पी., कार्तिकेय, प्रवीण, निकेतन, परवेज़, इमरोज़, मसूद, रमेश अटलूरी, दिनमणि, रवि, मधुसूदन—ये सभी अट्ठारह से तेईस-चौबीस की उम्र के वे लड़के थे, जो देश के अलग-अलग राज्यों से, गांव या छोटे कस्बों से, यहां पढ़ने आये थे. उनके मां-बाप दिल्ली-बंगलूर-चेन्नई-कलकत्ता जैसे महानगरों में दो नंबर की कमाई करने वाले व्यापारी, ठेकेदार, प्रॉपर्टी डीलर्स, दलाल या भ्रष्ट नौकरशाह नहीं, खेती-किसानी, छोटा-मोटा व्यापार या छोटी-मोटी नौकरी करने वाले सीधे-सादे लोग थे. हर महीने पेट काटकर या कहीं से कर्ज़-उधार लेकर जो रुपये वे ड्राफ्ट या मनीआर्डर से अपने बच्चों को हॉस्टल भेजते थे, वे रुपये उनके आंसुओं, पसीने और स्वप्नों से भीगे हुए होते थे.

ये वे लोग नहीं थे जिन्हें टीवी और अख़बारों में लगातार दिखाया जाता था. सीरियलों में जो ड्राइंग, डाइनिंग, टैरेस, कार, सेल्युलर वाला रंगीन और खाता-पीता 'इंडियन मिडिल क्लास' दिखाया जाता था, उसे वे अपनी फटी-फटी, चौंधियाई हुई आंखों से देखते रहते थे. उनके घरों की दीवारों के प्लास्टर गिर रहे होते थे, छतें दरक रही होती थीं, दरवाजे कराहते थे और दोपहर या रात के खाने के लिए दाल बीनते या आटा गूंथते हुए, वे लगातार बढ़ते जाते ब्याज, सूद और महंगाई का हिसाब लगाते थे. उनकी बेटियां दहेज के बिना घरों में कुंवारी बैठी थीं, उनके बेटे बेरोजगार थे और शर्म के कारण दिन-दिन भर अपने घरों से गायब रहते थे. रेलवे प्लेटफार्म, सड़क किनारे की गुमटियों, किसी पी.सी.ओ. या किसी वीरान-उजाड़-सी जगह में इन लड़कों का झुंड बैठा हुआ किसी चमत्कार या संयोग के इंतज़ार में गुम रहता था.

ये वे लड़के थे, जिनकी संख्या करोड़ों में थी. उनमें कोई भी शारीरिक या मानसिक खामी नहीं थी. वे अपार क्षमताओं, संभावनाओं और श्रम से भरपूर नौजवान थे. चिंताओं ने उनकी गाल की हड्डियों को उभार दिया था. उनकी आंखों के नीचे झाईं पैदा कर दी थी.

'कहीं से स्साला एक लाख मिल जाय तो मैं दिखा दूं, बैंचो...'

'मैं तीन दिन से घर नहीं गया. स्साला बुड्ढा मेरी रोटी गिनने लगा है...तेरे पास कुछ है यार? चाय बंद का जुगाड़ हो जाय...'

'वो गुप्ता फाइनेंस का मालिक टी.डी. गुप्ता है न...वो तुंदियल माच्चो... उसे ठिकाने लगाना है. बैंचो मेरी सिस्टर पर लाइन मारता है. पिछले महीने आठ सौ पर उसने नौकरी ज्वायन की है...'

'कुंदनाणी मेरे को बोलता था, एक ट्रिप सिंगापुर का मार दे, दस हज्जार दूंगा.'

'पकड़ा गया तो बैंचो' जमानत कुंदनाणी का बाप देगा?'

'यार, कहीं से छोटा राजन या इब्राहीम भाई का नंबर मिल जाता...'

'कोई खाली पांच हजार मुझे दे दे, कसम से, और किसी का भी मर्डर करा ले!'

'रमाशंकर नेपाल का ट्रिप मारकर आया है. लंबी कमाई हुई है...अगली बार मेरे को भी ले जाने को बोल रहा था.'

'वो खड्डूस बेकरी वाले की बेटी दीपा ने जब से 'ब्यूटी पार्लर' खोला है, मां-बाप की किस्मत पलट गई दिखती है...'

'ब्यूटी पार्लर...काहे का बैंचो', उसकी आड़ में धंधा करती है. जूनियर इंजीनियर शर्मा और बिल्डर सतविंदर जम के ले रहे हैं उसकी...'

'उसका भाई सुन लेगा रे तो स्साले बजा देगा तेरा बैंड...'

'वो क्या सुनेगा हरामी! दल्ला है, दल्ला...! ला दो हजार निकाल, तेरे को अभी ले चलता हूं उसकी बहन के पास...'

'किशोर, तूने तो एम.एस-सी. किया था न? फिजिक्स से.'

'सब भूल गया, बैंचो.' पॉलिटिक्स का धंधा करूंगा अब मैं. सुन, मेरा एक प्लान है. कहीं से स्साले फर्जी नौकरी का सर्टिफिकेट दिखाकर मोटी दहेज लेकर शादी करूंगा, फिर एक हफ्ता हनीमून में ठोंक-बजाकर, बीवी को बेचकर दुबई चला जाऊंगा ...तंग आ गया मैं इस लाइफ से.'

तो यह वह समय था जब इंडिया के बाज़ारों में तरह-तरह के परफ्यूम, कॉस्मेटिक्स, सॉफ्ट ड्रिंक्स, एलेक्ट्रिकल और एलेक्ट्रॉनिक गजेट्स, वाशिंग मशीन, सेलुलर फोन, डिजिटल टीवी, हैंडी कैम अंटे पड़े थे. हर हफ्ते आधा दर्जन कारों के नये मॉडल सामने आ रहे थे. दिल्ली में मैक्डोनल, केसीएफ और निरूलाज़ के सैकड़ों ईटिंग ज्वायंट्स खुल रहे थे. राजधानी और दूसरे बड़े शहरों में नाइट क्लब्स खुल गये थे, जहां रात में अधनंगी मॉडल्स व्हिस्की और वाइन बेचती थीं और जहां मंत्रियों-नौकरशाहों और अपराधियों की संतानें ऐश करती थीं. देशी-विदेशी सट्टेबाज खुले आम लोगों में जुए और लाटरी की लत डालकर उन्हें करोड़पति और दस करोड़पति बनाने का स्वप्न दिखा रहे थे. एक दिन में इस देश के मंत्री और नौकरशाह जितने का लंच कर जाते थे, सिर्फ उतने रुपयों से सारे गांवों में पीने का पानी, स्कूलों में अध्यापक और ब्लैकबोर्ड, खेतों और घरों में बिजली और झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों के लिए हगने-मूतने का शौचालय लग सकता था.

लेकिन ऐसा सोचने वाला हर शख्स पिछड़ा हुआ, दकियानूस और किसी अजायबघर का ओरंग-उटांग मान लिया गया था. हर ऐसा सोचने वाले आदमी को लात मारकर

इस व्यवस्था ने किसी 'जंकयार्ड' में धकेल दिया था या 'खतरनाक सिरफिरा' मानकर हर तरह से उसे खत्म करने की कोशिश की जा रही थी.

संसद और विधान सभाओं में हिस्ट्री शीटर्स, हत्यारे, तस्कर, विदेशी कंपनियों के दलाल, जमाखोर और नंबर दो की कमाई करने वाले बेईमान भर गये थे. पांच सितारा होटल गुलज़ार थे. वहां शराब की नदियां बह रही थीं. नदियां, पहाड़, जंगल, खेत-खलिहान, खनिज, अयस्क, औरत, बच्चे, ऐतिहासिक स्मारक, ईमान, धर्म, हवा, नदी, समुद्र सबकी नीलामी हो रही थी. प्रधानमंत्री जेल जा रहे थे. मुख्यमंत्रियों पर गबन, ठगी और भ्रष्टाचार के मुकदमे चल रहे थे. जज रिश्वत खा रहा था. पुलिस अपराधियों से मिल गयी थी और इक्कीसवीं सदी की दहलीज़ की हर तारीख़ निर्दोष और ईमानदार और न्याय मांगते हिंदुस्तानियों के खून में लिथड़ी हुई थी.

अंग्रेजों ने एक जलियांवाला बाग कांड किया था, अब हर रोज़ दर्जनों ऐसे कांड हो रहे थे. राम का झंडा उठाकर रावण की हरामी संतानों ने समूचे यथार्थ पर अपना शासन जमा लिया था.

'हो...हो...हो...
सइयो नी...ऽ ऽ ई...ऽ...ई...ऽ
चैन इक पल नही, और कोई हल नही...
सइयो नी...ऽ ऽ ई...ऽ ऽ...ई...ऽ ऽ'

वे लड़के गा रहे थे. उनके चेहरे उस स्याह परछाईं में डूबते जा रहे थे, जो हर पल गाढ़ी और घनी होती जा रही थी. रात इतनी रात थी, अंधेरा इतना अंधेरा था, सुनसान इतना सुनसान था कि डर लगता था.

लेकिन इसी बीहड़-उजाड़ समय की किसी पत्ती पर ओस की कुछ ठंडी, पारदर्शी और निर्दोष बूंदें भी गिरती रहती थीं, जिनकी नमी से जीवन कभी-कभार हरा हो जाया करता था.

डॉ. राजेंद्र तिवारी का पीरियड ख़त्म हुआ. उन्होंने विद्यापति पढ़ाया था. पयोधर, कुच, कटि, रति, मदन ज़ैसे शब्दों का रस ले लेकर, मिचमिची आंखों में छलकती कामुकता और लंपटता के साथ उन्होंने 'अर्थ' समझाया था. स्त्री उनके लिए कुच, कटि, पयोधर और त्रिबली थी. लड़कियों की गर्दनें नीची थीं. बलराम पांडे, विजय पचौरी, विमल शुक्ल, विभूति प्रसाद मिश्रा सब एक-दूसरे को कनखियों में देखकर मुस्करा रहे थे.

डॉ. राजेंद्र तिवारी ने अपने बहनोई के 'कांटैक्ट' से, जो कि राज्यसभा के मेंबर थे, पद्मश्री का जुगाड़ कर लिया था. लड़कियों को घूरना, लाइब्रेरी में उनकी जासूसी करना और उनके पैरेंट्स को फोन करना उनकी आदत में शामिल था. दो बार पिट चुके थे. अलग-अलग शहरों और कस्बों में अपने अभिनंदन समारोह आयोजित कराने का उन्हें शौक था. उनके बारे में मशहूर था कि वे जहां भी जाते हैं अपने झोले में एक शाल, एक नारियल, पांच सौ एक रुपये का एक लिफाफा और अपनी प्रशस्ति का एक मुद्रित फ्रेम किया प्रपत्र साथ लेकर चलते हैं. 'सुप्रसिद्ध हिंदी सेवी एवं विद्वान डॉ. राजेंद्र तिवारी का नगर में अभिनंदन' शीर्षक समाचार अखबारों में अक्सर छपता रहता था. हर महीने-पखवाड़े उन्हें कोई न कोई सम्मान या पुरस्कार मिलता रहता था, जिसका प्रबंध वे स्वयं करते थे. 'कृष्ण काव्य में संयोग शृंगार' विषय पर उन्होंने पीएच. डी. की थी, जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा था.

क्लास रूम के दरवाज़े पर लड़कियां खड़ी थीं. राहुल, शैलेंद्र जॉर्ज और शालिगराम लाइब्रेरी के लिए निकल रहे थे. उन्हें किताबें इश्यू करानी थीं. राहुल ने निकलते हुए अंजली की कुहनी दबाई. अंजली ने उसे देखा फिर शर्मिष्ठा के साथ वह भी पीछे-पीछे लाइब्रेरी की ओर ही आने लगी.

लाइब्रेरी की सीढ़ियों पर अंजली ने उसे बुलाया, 'राहुल! एक मिनट!'

राहुल उसके पास गया.

'मुझे कुछ बात करनी है.' अंजली ने कहा.

'नाउ?...अभी?'

'नहीं. कल. मैं सुबह जल्दी आ जाऊंगी.'

'कित्ते बजे?' राहुल का दिल धड़क रहा था. अंजली के चेहरे पर बुखार की आंच थी.

'एट थर्टी... साढ़े आठ बजे.' अंजली की आवाज़ कांप रही थी.

'डन! मैं इंतज़ार करूंगा.' राहुल ने कहा. फिर दौड़ता हुआ लाइब्रेरी के काउंटर तक पहुंचा, जहां शालिगराम और शैलेंद्र खड़े थे.

राहुल ने तीन किताबें इश्यू कराईं, *'हिंदी साहित्य का इतिहास'*, लेखक आचार्य रामचंद्र शुक्ल, *'अनामदास का पोथा'*, लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और निराला की रचनावली का पहला भाग जिसमें उनकी कविता *'राम की शक्ति पूजा'* मौजूद थी.

जब वह लाइब्रेरी से निकलकर डिपार्टमेंट की ओर आ रहा था तो एक पल को उसने सोचा, ऐसा क्यों है कि इन तीनों किताबों के लेखक ब्राह्मण हैं.

और अंजली?

राज्य के लोक निर्माण विभाग के मंत्री एल.के. जोशी की बेटी? वह भी तो?

यह कैसी विडंबना है, जो जाति उसे और उसके जैसे असंख्य लोगों को मिटा डालना चाहती है, जिसकी अनैतिकता, अन्याय और भ्रष्ट आचरण के चलते यह समूचा समय कराह रहा है, उसी जाति के लेखकों की रचनाएं वह पढ़ रहा है और उसी जाति की एक लड़की उसके हृदय की जैविक घड़ी में 'टिक्-टिक्...टिक् टिक्' के साथ हर पल धड़क रही है?

मेरे मस्तिष्क और मेरे हृदय पर किसकी सत्ता है? मेरी संवेदनाओं और संस्कारों पर किसका प्रभाव और आधिपत्य है? वह भाषा जिसमें मैं बोलता हूं, सोचता हूं, लिखता हूं, वह किसके अधीन है?

वर्णाश्रम व्यवस्था की मुंडी बनकर समूची सामाजिक-सांस्कृतिक सत्ता को अपनी मुट्ठियों में भरकर शताब्दियों से अट्टहास करने वाले रावण की हरामी औलादो, मैं सचमुच साफ-साफ खुद नहीं जानता कि मैं तुमसे प्रेम करता हूं या घृणा!

राहुल स्तब्ध था. उसके भीतर एक अजीब-सा युद्ध चल रहा था. जैसे कोई एंटी बॉयटिक रक्त के भीतर रोग फैलाने वाले वायरस के खिलाफ उसी प्रजाति के दूसरे जीवाणुओं को उसी रक्त में जन्म दे रहा हो. उसका अपना मस्तिष्क एक ऐसे यातनाघर में बदल गया था, जिसके भीतर एक उत्कट संघर्ष चल रहा था.

उसके अपने रक्त के भीतर रोग और औषधि, व्याधि और निदान की यह लड़ाई विकट थी.

राहुल ने 'निराला रचनावली' को खोलकर देखा.

'है अमा निशा; उगलता घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अंबुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यान मग्न; केवल जलती मशाल

स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर-फिर संशय
रह-रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय...'

ये पंक्तियां 'राम की शक्ति पूजा' की थीं. आश्चर्य यह था कि राहुल ने जब किताब खोली तो यही पन्ने अपने आप उसकी आंखों के सामने खुले.

तो? इसका मतलब हुआ...कोई है, जो मेरी चेतना के भीतर के इस युद्ध को देख रहा है. चुपचाप. अदृश्य.

थैंक यू... थैंक यू...

नीम के पेड़ की ओर से एक खूब ठंडी हवा का झोंका आया. राहुल को शांति मिली.

'क्या हो गया राहुल जी? आप कहीं खो गये लगते हैं?' शालिगराम ने कहा.

राहुल ने शैलेंद्र जॉर्ज के कंधे पर हाथ रखा और हँसते हुए बोला: 'नहीं शालिगराम जी,...*वो तो मैं नशे में टल्ली हो गया... की करिए...की करिए...!'*

'तुम मज़ेदार आदमी हो यार राहुल भाई!' शैलेंद्र जॉर्ज ने उसकी गर्दन में बांहें डाल दीं.

सुबह राहुल हॉस्टल के अपने रूम नंबर 252 की खिड़की के पास खड़ा ब्रश कर रहा था. मुश्किल से साढ़े सात बजे थे. ओ.पी. बाथरूम में नहा रहा था. तभी उसने घाटी के नीचे, प्ले ग्राउंड को तीन ओर से घेरने वाली अर्द्ध वृत्ताकार सड़क को देखा.

वह पीला रंग धीरे-धीरे रिहायशी कालोनी की ओर से रेंग रहा था. राहुल ने चौंककर दीवार पर टंगी घड़ी देखी. सात बजकर बत्तीस मिनट. ऐसा कैसे हो सकता है? उसे तो साढ़े आठ बजे आना था!

उसने खिड़की के कांच को हथेलियों से पोंछकर गौर से देखा. यह वही पीली तितली थी, जो उस दिन छतरी बन गयी थी. कोई संदेह नहीं. पक्का. उसकी नसों में दौड़ते खून ने रफ़्तार पकड़ ली. उत्कंठा ने उसे घेर लिया. उसके कान उसके अपने ही दिल के स्पंदन सुनने लगे. धक...धक्.   धक...धक्!

'ये वही है! वही! श्योर!' उसके मुंह से निकला. तुरत उसने पैंट चढ़ाई. तौलिये से मुंह पोंछा, जूते पहने और भागा. तीन-तीन सीढ़ियां एक-साथ फलांगते हुए.

अंज़ली एक दम फ्रेश दिख रही थी. सफेद सलवार, बादामी और हल्के हरे रंग का एब्सर्ड छीटों वाला कुर्ता. हल्के हरे रंग की चुन्नी. उसके बाल धुलकर चमक रहे थे. सूखे हुए, हवा के हर झोंके के साथ इधर-उधर बिखरते हुए.

उसने राहुल को देखा. 'बाप रे! तुम्हें कैसे पता चला? तुम इतना हांफ रहे हो.'

'मैं अपने रूम की खिड़की पर खड़ा था.'

'वहीं खड़े रहते हो क्या आजकल?' अंजली ने गर्दन घुमाकर चारों ओर देखा. वह कुछ घबराई हुई-सी लग रही थी. दूर-दूर तक सुबह की धूप थी. प्ले ग्राउंड में घास पर अभी तक ओस की नमी थी.

'हम सड़क की बजाय इस मैदान से होकर चलें?' राहुल ने अंजली की कुहनी को छू लिया.

'तुम तो एट थर्टी पर आने वाली थीं?' राहुल ने अपना कंधा धीरे से उसके

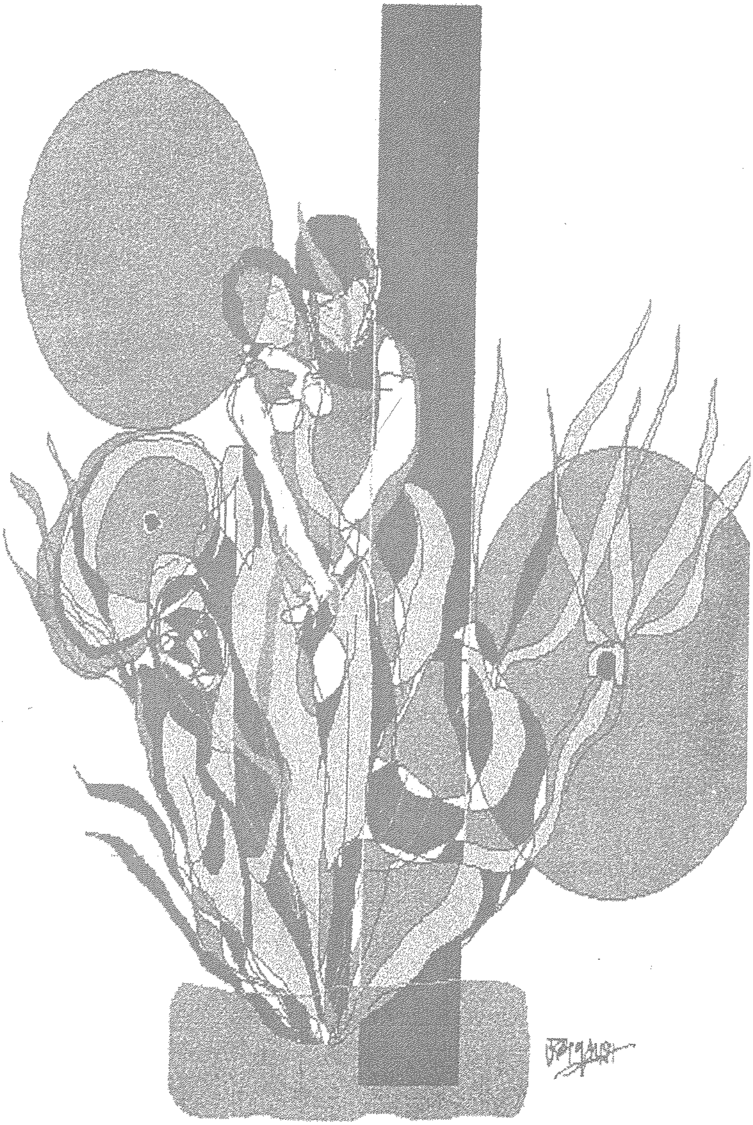

साथ सटाया. अंजली के शरीर और कपड़ों की खुशबू से उसकी सांसें भर गयीं.

'मैं बोर हो रही थी. पापा हैं नहीं. एसेंबली सेशन चल रहा है. भइया रात में तीन बजे तक जागते हैं और फिर दिन में 12 बजे तक सोते हैं.'

'डु यू थिंक एवर अबाउट मी. कभी-कभी.' राहुल ने उसकी बाहों को छुआ. अंजली रुक गयी. उसकी आंखों में पीड़ा और कातरता थी. उसने राहुल को इस तरह देखा कि उसकी तकलीफ़ से वह भीतर तक सिहर उठा.

'व्हाइ कभी-कभी...?' कुछ देर की चुप्पी के बाद जैसे उसने अपनी आवाज़ को खोजा, जो कहीं खो गयी थी, 'ईच एंड एवरी मोमेंट, राहुल!'

राहुल सिहर गया. वह धीमा बुखार, जिसमें एक कोई धुन कहीं दूर गहराई में डूबी हुई बहुत मुश्किल से कान देने पर सुनाई देती, धीरे-धीरे चढ़ना शुरू हो गया था. ऐसा क्यों था? राहुल ने सोचा. अंजली के पास आते ही, उसको देखते ही उसके शरीर के भीतर जो एक रहस्यभरी हलचल शुरू होती है, एक तरह की रासायनिक क्रिया, जो धीरे-धीरे उसकी चेतना को घेरने लगती है और उसकी सांसें बढ़ जाती हैं, ऐसा पहले कभी क्यों नहीं होता था?

यह मेरा ही जीवन इस तरह अपने आप बदल क्यों गया?

मैं तो जिम में जाकर एक फुर्तीला पैंथर या चीता बनना चाहता था. अपने शिकार पर झपटने को तैयार. वो शाहरुख कौन था, जो जिस लड़की से प्यार करता था उसे लहूलुहान कर देता था. उससे रेप करता था, फोन पर उसे डराता था. मैं तो सोचता था कि लड़कियां उसी को पसंद करती हैं, जो उन्हें चोट पहुंचाता है. जो उनके साथ हिंसा करता है. लेकिन मेरे और अंजली के बीच तो सिर्फ़ तितली और छतरी के अलावा कुछ भी नहीं! टीवी में, समुद्र की रेत पर, एक नारियल के पेड़ के नीचे, वाइन पीती हुई, स्विमिंग सूट में जो लड़की धूप का चश्मा लगाए लड़के की कमर से लिपटती है, क्या वह फीलिंग भी ऐसी ही होगी, जैसा मैं अंजली के लिए महसूस कर रहा हूं?

राहुल ने अंजली को देखा. वह उसी को देख रही थी. उसने अंजली की दायीं हथेली को अपने पंजे में भर लिया. और बस, चुंबक और बिजली के तरंगों से भरी हुई एक आंधी, उसकी देह के भीतर से कहीं उठने लगी. सुबह की धूप को प्रत्यावर्तित करता हुआ अंजली का चेहरा धीरे-धीरे धुंधला होने लगा. तांबे के रंग जैसा. अभी वह आंधी एक तेज़, अनियंत्रित बवंडर में बदल जाएगी और वे तिनके-सा उसमें उड़ने लगेंगे. असहाय.

'हम उधर चलें?' राहुल ने पूछा. सड़क के पार, हॉस्टल की ओर की पहाड़ी की तलहटी पर बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं. सेमल और बबूल के पेड़ थे. सिरकिन, लेंटिना की झाड़ियां थीं. वहीं पर स्टोर रूम और उसका टेरेस था, जहां पर खेल के सामान रखे जाते थे. वहां हमेशा ताला पड़ा रहता था. उस कमरे के पीछे झाड़ियां थीं और निर्जनता.

राहुल ने अंजली के चेहरे पर पड़े बालों को हटाया. अंजली ने उसकी हथेलियों को पहली बार ज़ोर से दबाया. अपनी सारी ताकत लगाकर. फिर उसने मुस्कराकर राहुल को देखा.

'बस, इत्ती-सी ताकत है?' राहुल ने कहा. 'पंजा लड़ाओगी?'

'चलो!' अंजली ने राहुल की हथेली पर अपनी हथेली फैलाकर उंगलियां फंसा लीं. आह! कितनी दूर थी यह लड़की पहले. पीली छतरी के नीचे चलती हुई. उस दिन भुट्टे खा रही थी, कितनी तल्लीनता से.

राहुल ने उसे अपनी ओर खींचा. अंजली पहले से ही टूटकर गिरने के लिए तैयार थी.

प्ले ग्राउंड के स्टोर रूम के पिछवाड़े की निर्जनता में, जहां दो चट्टानों और लेंटिना की झाड़ियों के बीच थोड़ी-सी जगह थी, दोनों एक-दूसरे के चेहरे में, किसी पागलपन के साथ, अपने होंठों से कुछ खोज रहे थे. वहां सिर्फ़ तेज़-तेज़ चलती सांसें थीं.

वह तितली जो सारी दुनिया को चकमा देती हुई अभी तक छतरी बनी हुई थी, उसके ऊपर कहीं से एक दूसरी तितली आकर बैठ गयी थी और शायद उसने यह रहस्य जान लिया था कि यह छतरी नहीं, असल में तितली ही है, इसलिए वह उसके कानों में अपनी भाषा में कुछ कह रही थी.

राहुल और अंजली ने एक-दूसरे को इतना ज़्यादा चूमा था कि दोनों के चेहरे गीले हो चुके थे. उनकी सांसें ज़ोर-ज़ोर से चल रही थीं. आंखों में एक तरह की विकलता, बेचैनी और उन्माद-सा कुछ था.

'आय लव यू अंजली.' राहुल ने जैसे-तैसे कहा. उसकी आवाज़ भर गयी. वह अंजली से भी यही सुनना चाहता था. लेकिन वह चुप थी. बिल्कुल खामोश. राहुल ने एक बार फिर अपने होंठ वहीं रख दिये.

अंजली ने राहुल की दाहिनी हथेली को खोला और उंगली से उस पर लिखा.

'आय टू लव यू!'

'थैंक यू! थैंक यू! वेरी..वेरी...वेरी...वेरी...मच.' राहुल ने उसे फिर अपने ऊपर खींच लिया.

डेढ़ घंटे कितनी जल्दी बीत गये, कुछ पता नहीं चला. प्ले ग्राउंड की सड़क पर अब इक्का-दुक्का लोग निकलने लगे थे. बीच-बीच में साइकिल की घंटी बजती . कोई भैंस लेकर भी निकला. अब डर बकरी वालों का था. वे इन झाड़ियों की ओर आ सकते थे.

अंजली के कपड़ों में खूब सारे तिनके-पत्ते चिपक गये थे. राहुल का भी वही हाल था. दोनों खड़े हो गये थे.

'हमारा साथ-साथ जाना ठीक नहीं. कोई देख लेगा. मैं यहीं से पहले अपने रूम जाऊंगा.' राहुल ने कहा.

तभी अंजली ने उससे कहा: 'राहुल, मैं एक बात बताना चाहती थी.'

'क्या?'

'कल रात वो गुंडा, लच्छू गुरू, हमारे यहां आया था. भइया के साथ ड्रिंक कर रहा था. वह तुम्हारा, कार्तिकेय, ओ.पी., परवेज़ और प्रताप का नाम ले रहा था. पुलिस ने उसका कुछ नहीं किया. पापा ने भोपाल से एस.पी. को फोन किया था. मुझे लगता है बीसी अग्निहोत्री से कहकर वे तुम लोगों को किसी केस में 'इंप्लीकेट' न कर दें. एलर्ट रहना.'

राहुल स्तब्ध रह गया. लच्छू गुरू और उसके साथियों को तीन सौ स्टूडेंट्स की भीड़ ने, वाइस चांसलर की मौजूदगी में, पुलिस के हवाले किया था. दिनमणि ने वी.सी. के सामने शिनाख्त की थी कि यही वह आदमी है जिसने सापाम तोंबा के साथ गुंडागर्दी, लूटपाट और वहशियाना हरकत की थी. क्या पुलिस और वीसी अशोक कुमार अग्निहोत्री उस रात सिर्फ एक नाटक कर रहे थे?

यह किसी फार्मूलाबाज मुंबइया स्टंट फिल्म की घटना लग रही थी. तो क्या यही रियलिटी है? क्या हमारे समय के यथार्थ को सबसे अधिक प्रामाणिक और विश्वसनीय तरीके से बॉलीवुड का कॉमर्शियल सिनेमा व्यक्त करता है, जिसे सब घटिया, फूहड़ और दो कौड़ी का मानते हैं?

राहुल हॉस्टल के बाथरूम में जब नहा रहा था, उसे शॉवर से निकलने वाली पानी की बौछार बिल्कुल नयी लगी. वह किसी पहाड़ी झरने से उतरता हुआ ताज़ा और ठंडा पानी था, जो उसके शरीर पर गिर रहा था.

उसका शरीर भी तो अब दूसरा था. लग रहा था, नसों के भीतर सितंबर की सुबह की ठंडी और ताजी हवा बहने लगी है और पूरी देह के भीतर उमंग की अनोखी सिहरन भर गयी है.

अचानक राहुल को लगा, उसके जीवन में पहली बार उसे वह अनुभव, वह सुख मिला है, जो नितांत उसका अपना है. निजी, पर्सनल और गोपनीय. एक ऐसा खजाना, जिसे सबसे छुपाकर, अपनी स्मृतियों में किसी सुरक्षित कोने में संभालकर रखना है. हमेशा के लिए.

'नाउ द हार्ट सिंग्स विद ऑल इट्स थाउज़ैंड वायसेज...
टु हियर दिस सिटी ऑफ सेल्स, माइ बॉडी, सिंग...!'

हिंदी विभाग का दृश्य आज दूसरा ही था. लगता था जैसे हरिद्वार या इलाहाबाद का कोई मैला-कुचैला, दकियानूस, बीमार पंडा अभी-अभी निरोग होकर किसी मसाज सेंटर से लौटकर आया हो. एकदम ताजा और नया. स्टीमबाथ लेकर, फ़ेशियल कराके, बालों में खिजाब और चेहरे पर ढेर सारा कॉस्मेटिक क्रीम पोतकर, रंगीन, चौखानेदार शर्ट में मुस्कुराता कोई रंगीन बूढ़ा महंत.

कुछ-कुछ उस तरह, जिस तरह तॉल्सतॉय की कहानी का अमीर बूढ़ा काउंट, सज-धज कर, विग के नीचे छुपे स्प्रिंग के द्वारा अपने चेहरे की झुर्रियां मिटाकर, शहर की संभ्रांत नाइट पार्टियों में पहुंचता था और दुर्दम्य महत्वाकांक्षाओं की वासनाओं में सुलगती सुंदर, चालू और घाघ स्त्रियों के साथ चुहलबाजी करता था.

तो, आज हिंदी विभाग सजा हुआ था. जगह-जगह फूलदान और गमले. प्लास्टिक के नकली सजावटी फूलों-पौधों के अलावा उनमें बॉटनी डिपार्टमेंट के बगीचे से लाकर गेंदा, हजारा, गुड़हल, डहेलिया, कनेर और कई तरह के मौसमी, निर्गंध पश्चिमी फूलों को खोंस दिया गया था. लड़कियों को माला बनाने और जल-पान की तश्तरियां ट्रे में सजाकर अतिथियों को सर्व करने का काम सौंपा गया था.

राहुल जब शालिगराम और शैलेंद्र जॉर्ज के साथ वहां पहुंचा तो अंजली विभाग की दूसरी लड़कियों के बीच थी. वह बेले के सफेद फूलों की माला बना रही थी. एक पल के लिए उसने राहुल को देखा. उस देखने में एक मुस्कराहट थी, जो छुप रही थी.

डिपार्टमेंट में कॉमनरूम के फर्नीचर को हटाकर उसे एक ऑडिटोरियम में बदल दिया गया था. चार तख्त रखकर, सफेद चादर बिछाकर, सबके ऊपर चार कुर्सियां रख दी गयी थीं. ये कुर्सियां विभागाध्यक्ष एस.एन. मिश्रा के कमरे से लाई गयी थीं. रेक्ज़ीन और फोम वाली गद्देदार बड़ी कुर्सियां. इनके सामने फिर एक सफेद चादर के नीचे तीन मेजें छिपी हुई थीं, जिनके ऊपर एक बड़ा-सा गुलदस्ता रखा था. पीछे दीवार पर पीले रेशम का चमकीला बैनर टंगा था, जिस पर लाल रंग की सुंदर देवनागरी में लिखा हुआ था:

'आचार्य त्रिभुवन नारायण मिश्र का अभिनंदन'

'अभिनंदन' में 'भ' की जगह 'म' हो गया था, लेकिन आश्चर्य था कि इसे कोई नहीं देख रहा था. हिंदी के अध्यापकों को प्रूफरीडिंग तक नहीं आती, राहुल ने सोचा.

शैलेंद्र जॉर्ज ने बताया कि उन चार कुर्सियों में से एक पर कुलपति अशोक कुमार अग्निहोत्री, तीसरी पर विभागाध्यक्ष एस.एन. मिश्रा, सबसे किनारे वाली, बांयी ओर की चौथी कुर्सी पर पद्मश्री डॉ. राजेंद्र तिवारी और दाहिनी ओर की कुर्सी नंबर दो पर, यानी कुलपति और विभागाध्यक्ष के बीच, आसीन होंगे बी.एच.यू. के भूतपूर्व प्राचार्य त्रिभुवन नारायण मिश्र. रीतिकालीन कविता के उद्भट विद्वान् और बिहारी की 'सतसई' के तथाकथित सर्वश्रेष्ठ पाठ के संकलनकर्ता. देश के समस्त विश्वविद्यालयों और हिंदी के समस्त अख़बारों में नियुक्तियों के महाबली, तिकड़मी चाणक्य. हर इंटरव्यू कमिटी के शाश्वत सदस्य. सैकड़ों हिंदी संस्थानों के सलाहकार.

विभागाध्यक्ष एस. एन मिश्रा और डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी आचार्य त्रिभुवन नारायण मिश्र को लाने, वाइस चांसलर की काली, वातानुकूलित एंबेसेडर कार से स्टेशन गये हुए थे. उनके पीछे-पीछे सीनियर छात्र और कुछ 'पटशिष्य' भी थे.

थोड़ी ही देर में डिपार्टमेंट के सामने मारुतियां, सैंट्रोज़, जेन और मैटिज आ-आकर खड़ी होने लगीं. इनमें से निकलकर आ रहे थे हिंदी के प्रोफेसर, रीडर्स और लेक्चरर्स. ये कारें विश्वविद्यालय के फंड से, बहुत कम ब्याज और आसान किस्तों पर मिले कर्ज के जरिये खरीदी गयीं थीं. पच्चीस-तीस हज़ार का वेतन हर महीने पाने वाले अध्यापक, जिन्हें पूरे साल भर में मुश्किल से तीन-चार महीने पढ़ाना पड़ता था, अब कारों में घूम रहे थे. शेयर मार्केट के सर्टीफिकेट खरीद रहे थे. बच्चों को विदेशों में सेटल कर रहे थे. तिकड़म और जोड़-तोड़ से विदेश यात्राएं कर रहे थे और आये दिन अपनी तनख़्वाह और भत्ते बढ़वाने के लिए हड़तालें कर रहे थे. अलग-अलग विचारधाराओं और राजनीतिक पार्टियों से जुड़े इन सारे अध्यापकों का एक समान लक्ष्य था—रुपया और प्रमोशन. सारे उच्च विचार, सारी अकादमिक प्राथमिकताएं इसी एक बिंदु पर आकर विसर्जित हो जाती थीं.

इनमें कुछ अपवाद भी थे. उनके चेहरे अलग से पहचान में आते थे. वे मृत विचारों और आदर्शों के भूसे के किसी विशाल ढेर में धोखे से बचे रह गये अनाज के कुछ दानों की तरह थे. हर तरह से उपेक्षित. महान् भूसे के इस विराट पहाड़ में किसी लुप्त अकादेमिक प्रजाति के बचे-खुचे दाने. अब भविष्य में पुरातत्ववेत्ता इन, 'कार्बोनाइज्ड' बीजों का अध्ययन करेंगे और उनकी 'डेटिंग' करके पता लगाएंगे कि ये अन्न-कण किस सदी के किन दशकों में पाये जाते थे?

दर्जन से ऊपर अध्यापक-प्राध्यापक हिंदी डिपार्टमेंट के गलियारे और उसके बाहर काली एंबेसेडर के इंतज़ार में खड़े थे. कक्षाएं स्थगित थीं. एम.ए. प्रीवियस के अट्ठारह और फाइनल के सोलह छात्र जमा थे. विभाग के तीनों चपरासी यहां से

वहां दौड़ रहे थे.

सोलह अध्यापक. चौंतीस छात्र, जिनमें दस छात्राएं. और तीन चपरासी. कुल मिलाकर तिरपन का मानव संसाधन. चौंतीस छात्रों में से सिर्फ़ तीन गैर-ब्राह्मण. राहुल, शैलेंद्र जॉर्ज और शालिगराम. तीन चपरासियों में से एक यादव. सोलह अध्यापकों में बारह ब्राह्मण, दो बनिये, एक कायस्थ और एक राजपूत. यह हिंदी विभाग की डेमोग्राफी थी. जनसंख्या की बनावट. जनसांख्यिकी.

आखिरकार ग्यारह बजकर बत्तीस मिनट पर वीसी की काली एंबेसेडर डिपार्टमेंट के गलियारे की सीढ़ी के पास आकर रुकी. पिछली सीट पर विभागाध्यक्ष एस.एन. मिश्रा अतिथि आचार्य त्रिभुवन नारायण मिश्र के साथ थे. डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी अगली सीट पर ड्राइवर गुड्डन दुबे के बगल में ही कृतकृत्य थे. गुड्डन दुबे कुलपति अशोक कुमार अग्निहोत्री का रिश्ते से भांजा लगता था. फर्जी ड्राइविंग लाइसेंस बनवाकर उसको ड्राइवर की परमानेंट नौकरी दी गयी थी.

गुड्डन ने लपककर पिछला दरवाज़ा खोला. लोकनाथ त्रिपाठी उतरकर दांत निकाले हुए थे. गलियारे में खड़े अध्यापकों ने भी अपने-अपने दांत निकाले. हलचल और गहमा-गहमी शुरू हो गयी. विभागाध्यक्ष दूसरी ओर से निकलकर हाथ बांधे खड़े हो गये. मंद-मंद-मुद मुस्कान. राहुल ने नोट किया, डॉ. श्रीवास्तव और डॉ. सिंह बहुत परिश्रम से बहुत कम दांत निकाल पा रहे थे. उनके दांतों में जरूर पसीना छूट रहा होगा.

जिधर आचार्य त्रिभुवन नारायण मिश्र थे, उसी तरफ विभाग की सीढ़ियां थीं. एंबेसेडर का पिछला दरवाज़ा खुला था. उसी से निकलकर बी.एच.यू. के भूतपूर्व प्राचार्य, रीतिकाल के उद्‌भट विद्वान्‌ और फिलहाल 'प्रोफेसर इमरेटस' आचार्य मिश्र को हिंदी विभाग की सीढ़ियां चढ़नी थीं.

और तभी उस दृश्य का निर्माण हुआ.

काली एंबेसेडर के खुले पिछले दरवाज़े से, पहले एक फिर दूसरा इहलौकिक, इंसानी और यथार्थवादी पैर बाहर आया. सफेद खादी की धोती, काले रंग की हलकी चप्पल. छितराई हुई उंगलियां. सांवले रंग की चमकीली टांगें. चिकनी, जैसे उनमें देशी घी मला गया हो. जैसे ही उन पैरों ने धरती को छुआ, डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी के गोल मटोल चेहरे की चंचल अधमुंदी आंखों ने 'सिग्नल' दिया. उनकी भौंहों ने माथे पर एक पल को नृत्य जैसा किया. और बस, वह दृश्य निर्मित होने लगा.

पद्‌मश्री डॉ. राजेंद्र तिवारी ने सबसे पहले चरण छुए. इसके बाद डॉ. शुक्ला, फिर झा साहब, फिर पांडेय जी, फिर डॉ. पंत. डॉ. वाजपेयी ने तो अपना माथा उन सांवले पंजों पर दायें-बायें जोर से गनगनाते हुए रगड़ा. डॉ. अग्रवाल ने उन पैरों पर अपने गाल और नाक घिसे. डॉ. डंगवाल ने अपने जुल्फों की उन पावन पैरों की उंगलियों से कंघी की.

इसके बाद छात्रों की बारी थी, जिन्होंने वहां एक अतियथार्थवादी दृश्य प्रस्तुत किया.

यह इक्कीसवीं सदी की दहलीज़ पर हिंदी साहित्य का अत्यंत प्रामाणिक और मौलिक उत्तर-आधुनिकतावादी दृश्य था.

राहुल, शैलेंद्र जॉर्ज और शालिगराम इस पवित्र अनुष्ठान से दूर, अलग हटकर खड़े थे. अछूत, भंगियों की तरह. यज्ञ स्थल पर पतित, शूद्र और कुत्ते शास्त्र द्वारा निषिद्ध हैं.

जब थुलथुल काया के गोल मटोल, कोसे का हलका पीला कुर्ता पहने और कंधे पर खादी का सफेद, दुनाया हुआ, अरारोट लगा, कड़क अंगौछा डाले आचार्य त्रिभुवन नारायण मिश्र हिंदी विभाग की सीढ़ियां चढ़ रहे थे, तो एम.ए. प्रीवियस का छात्र विजय पचौरी आनंद विह्वल हेकर, मीरा बाई की तरह मगन नाच रहा था.

'यही हमारा देरिदा है, यही हमारा देरिदा.

बौद्रीला...बौद्रीला है, यही हमारा मिसरा!!'

यही हमारा मिसरा!...यही हमारा मिसरा!!

पचौरी ऐसा कोई उन्मत्त बाउल गीत वास्तव में गा रहा था, या नहीं, ठीक-ठीक कह पाना मुश्किल था, लेकिन जब राहुल ने शैलेंद्र जॉर्ज से पूछा, 'तुमने कुछ सुना? तो शैलेंद्र और शालिगराम दोनों ने एक साथ उत्तर दिया—'हां! हमें कुछ सुनाई-सा तो पड़ा. संभवतः पचौरी गा रहा है.'

'पक्का! इसका अपॉयटमेंट ज़ल्द कहीं होगा. लिख के ले लो.' यह किसने कहा?

सबसे पिछली कतार में राहुल था. माल्यार्पण और स्वागत गान हो चुका था. पद्मश्री तिवारी ने आचार्य मिश्र का परिचय दिया था. विभागाध्यक्ष ने जिस भाषा में भाषण दिया था, उसके हिंदी अनुवाद की सख़्त ज़रूरत थी. उसमें प्रकीर्ण, उन्मोचन, किंवा, वीक्षण, धर्षत, मुंचाल, मुदा, क्वचित, गंडस्थल, आबिभ्रद , खद्योत जैसे असंख्य शब्द जगमगा रहे थे. बीच-बीच में वे मंत्र जैसी कोई चीज़ पढ़ते थे. भाषण के अंत में जब उन्होंने कहा कि 'कालात्मा भगवान की कृपा से हिंदी विभाग को आज परम आदरणीय आचार्य त्रिभुवन नारायण मिश्र से सहवास का जो सुयोग मिला है, उसकी अनुभूति मात्र से हमारा रोम-रोम पुलकित-हर्षित है.' तो कुछ लड़कों ने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी रोकी.

आचार्य त्रिभुवन मिश्र ने लंदन में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन, जर्मनी में आयोजित कबीर जन्मशती समारोह और न्यूयार्क में प्रधानमंत्री के स्वागत में आयोजित हिंदी समारोह का संस्मरण सुनाया. फिर उन्होंने कबीर पर लिखे जा रहे अपने नये ग्रंथ का जिक्र किया, जिसके अनुसार कबीर इस्लाम छोड़कर ब्राह्मण बन गये थे.

इसके अत्यंत स्पष्ट प्रमाण हैं कि वे धर्मांतरण और ख़तना के विरोधी थे. अपनी इस स्थापना के पक्ष में उन्होंने एक पद सुनाया और उसकी व्याख्या प्रस्तुत की. इस पद में कहा गया था,

'तातै हिंदू रहिए।'

अंत में धन्यवाद भाषण कुलपति अशोक कुमार अग्निहोत्री ने दिया. वे आचार्य की विद्वत्ता से अभिभूत थे. उन्होंने आचार्य से आग्रह किया कि हिंदी विभाग के पाठयक्रम को पत्रकारिता, इंटरनेट, मीडिया, अनुवाद आदि उपयोगी क्षेत्रों से जोड़ने के लिए केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री तक उनकी मांग पहुंचाएं. आचार्य मिश्र ने बीच में ही खड़े होकर विश्वविद्यालय से तुरत बजट तैयार करने की बात कही और एक महीने के भीतर उसे 'एप्रूव' कराने का, तालियों की गड़गड़ाहट के बीच, आश्वासन दिया.

...ये विषय भी यही पढ़ाएंगे. मध्यकालीन गोरिल्ला, मुफ्तखोर पंडे और पुरोहित. इंटरनेट में जन्मकुंडली, हस्तरेखा विज्ञान, राशिफल और जादू-टोना के वेबसाइट खुलेंगे. हिंदी पत्रकारिता तंत्र-मंत्र, तीज-त्यौहार, यज्ञ-हवन और सत्ताधारियों की चाटुकारिता का मक्कार और चापलूस माध्यम बनेगी. अनुवाद और कुछ नहीं, अंग्रेजी का संस्कृतकरण होगा...

क्या विडंबना है. एक तरफ पश्चिम, दूसरी तरफ पंडे. क्या भाषा की आजादी, किसी भूगोल की आजादी से छोटा राजनीतिक सवाल है? राहुल सोच रहा था.

'पश्चिम और पंडे, एक ही सिक्के के दो पहलू!'

'ऐं! क्या? तुमने कुछ कहा, राहुल?' शैलेंद्र जॉर्ज ने चौंकते हुए पूछा.

'नहीं, समोसे और गुलाबजामुन की तश्तरी इधर कब आएगी, मैं ये पूछ रहा था.' राहुल ने जवाब दिया.

उसकी आंखें लगातार अंजली को खोज रहीं थीं. वह सबसे अगली कतार में कहीं बैठी थी. राहुल ने देखा था कि जब आचार्य मिश्र का भाषण चल रहा था, तब दरवाज़े से आभा, अणिमा, रेणु और सीमा भी अंदर आयीं थीं.

अंजली आखिरकार मिनिस्टर की बेटी है. आगे नहीं बैठेगी, तो क्या पीछे उसकी कतार में आयेगी? राहुल को एक तरह की हीनता और अवसाद ने घेर लिया. तभी चपरासी कैलाश यादव ने नाश्ते की कागजी प्लेट उसके मुंह के आगे की. गर्म समोसे ने राहुल की नाक झुलसा दी. अगली कतारों में जलपान की तश्तरियां शर्मिष्ठा, लता और चंद्रा सर्व कर रही थीं.

जब सब लोग विभाग के बाहर गलियारे में खड़े थे और कुलपति अशोक कुमार अग्निहोत्री के साथ आचार्य मिश्र काली एंबेसेडर में गेस्ट-हाउस जाने को तैयार थे, तभी एक टाटा सफारी वहां आकर रुकी. उसमें से सफेद कुर्ते-पाजामे में एक छह-फुटा मुस्कराता मुच्छड़ उतरा. उसके पीछे तीन पैंट-शर्ट वाले और थे. मुस्कराते

मुच्छड़ के एक हाथ में बुके और दूसरे में सेल्युलर फोन था. उसने आगे बढ़कर आचार्य मिश्र के पांव छुए, फिर बुके उन्हें दिया और फिर कुलपति अशोक अग्निहोत्री से हाथ मिलाया.

'लखन लाल पांडे. लक्खू भइया.' शालिगराम ने राहुल के कान में फुसफुसा कर कहा. 'नगरपालिका के चेयरमैन.'

शैलेंद्र ने राहुल का हाथ दबाया, 'लच्छू गुरू, यानी लक्षपति लाल पांडे का सगा बड़ा भाई.'

राहुल स्तब्ध था.

और तभी उन तीनों को आपस में फुसफुसाकर बात करते विभागाध्यक्ष एस. एन मिश्रा और डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी ने देखा.

बलराम पांडे की चील आंखें भी उन्हीं पर थीं.

वे ऐसी आंखें थीं, जिनकी नाक के नीचे एक डरावनी, काली तितली जैसी कोई चीज़, मूंछ की तरह बैठी दिखाई पड़ रही थी.

राहुल, शैलेंद्र और शालिगराम तीनों सिहर उठे.

उस रात राहुल जब टैगोर हॉस्टल के रूम नंबर 252 में अपने बेड पर लेटा हुआ था, उसने ओ.पी. से कहा, 'ओ.पी., मैंने आज वही आंखें देखीं. मुझे डर लग रहा है. आयम रियली स्केयर्ड यार.'

'क्या बोल रहा है तू? कोई सपना देखा क्या?' ओ.पी. ने कमरे की लाइट बुझा दी. अब अंधेरे में, राहुल के ठीक सिर के ऊपर वे आंखें टंगी थीं.

'वे आंखें बहुत डरावनी हैं, ओ.पी.! ...फ्यूहरर जैसी.' राहुल ने अंधेरे में कहा, 'यह सपना नहीं, सच, है.' उसकी आवाज़ कांप रही थी. 'वे अभी भी यहीं हैं. इसी कमरे में. मेरे सिर के ऊपर.'

'तू डरा हुआ लग रहा है, राहुल!...सो जा चुपचाप! सुबह बात करेंगे.' ओ. पी. ने करवट बदल ली.

लेकिन राहुल उस रात सो नहीं सका.

यह 'इनसोम्निया' नहीं, एक ऐसा भय था, जो बीसवीं सदी के चौथे-पांचवे दशक में संसार भर के यहूदियों के भीतर रहा होगा. तो क्या अब मेरे जैसे लोगों को गैस-चेंबर में भेज दिया जाएगा? क्या इसलिए कि संयोग से मेरे भीतर शैलेंद्र जॉर्ज, मसूद या शालिगराम के लिए घृणा नहीं है? क्या इसलिए कि मैं धार्मिक हूं, आस्थावादी हूं? इसलिए कि अपने देश को, इसकी विविधता और विराटता को, इसके संविधान की मूल प्रतिज्ञाओं को मैं प्यार करता हूं?

एक कोई उद्विग्न करने वाली फिल्म थी, जिसकी रील राहुल के मस्तिष्क के भीतर अटक-अटक कर चल रही थी. वह देख रहा था कि कुलपति अशोक कुमार

अग्निहोत्री, हेड डॉ. एस.एन. मिश्रा, आचार्य त्रिभुवन नारायण मिश्र, डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी, वार्डेन चंद्रमणि उपाध्याय, राधारमण चतुर्वेदी, डॉ. डंगवाल, डॉ. पंत, डॉ. जोशी...सबके चेहरे एक दूसरे में गड्ड-मड्ड हो रहे थे. कुलपति अग्निहोत्री का चेहरा जैसे ही पर्दे पर स्थिर होने लगता, उसके पीछे से पद्मश्री तिवारी का चेहरा निकल आता. वह स्पष्ट हो, इसके पहले आचार्य मिश्र का काला-कलूटा तिलकधारी सिर वहां प्रगट हो जाता. उनकी आकृति पूरी उभरते-उभरते प्रधानमंत्री की चिरपरिचित शक्ल निकल आती. तुरंत एक धुआं-सा फैलता और वह मोटा, तुंदियल, खाऊ, कामुक निखलाणी किसी आइसलैंड के महंगे रिसॉर्ट या किसी समुद्र में तैरती 'सुपर फेरी' के लक्ज़री केबिन में लेटा, तीसरी दुनिया के गरीब देशों की विश्व- सुंदरियों और योरॅप के अमीर देशों की फैशन मॉडल्स से मसाज कराता, महंगे स्कॉच की घूंट के साथ वियाग्रा की गोलियां निगल-निगल कर अखंड संभोग और अंतहीन भक्षण में लीन, अपने सेल-फोन पर बोलताः

'हैलो...हैलो! गेट मी टु द पी.एम.! आयम निखलाणी हियर!... बेचो, सब कुछ बेचो. हम सब खरीदेगा साईं... इंडिया की गवर्नमेंट को प्रायवेटाइज़ करो, पंडित. डिफेंस को प्रायवेटाइज़ करो...! हम पुलिस, फौज, पैरामिलिट्री सबको खरीदेगा ...जो खिलाफ़ में बोले, उसको शूट करो, माच्चो. वो नक्सलाइट है, आई.एस. आई. का एजेंट. मेरे को बी.पी. है... पंडत, बी क्विक! ज़ल्दी...ज़ल्दी करो...!!'

राहुल को लगा जैसे हॉस्टल के नीचे कोई जीप आकर रुकी है... उसे कुछ पैरों की आवाज़-सी सुनाई पड़ी.

अभी दरवाज़े पर दस्तक होगी. लच्छू गुरू कट्टे के साथ वहां होगा. नहीं, ए.के. 47 के साथ. छह फुट तीन इंच का ये प्यारा-सा शुतुर्मुर्ग भी यहां उसके साथ मार दिया जाएगा. जहां सापाम की लाश है और चैतन्य महाप्रभु की फूटी हुई ढोलक और मंजीरे पड़े हैं, वहीं उसकी अपनी भी लाश होगी. गांधी जी के चश्मे के बगल में.

यह एक डरावनी अंधेरी सुरंग थी. इसमें नींद नहीं थी. हवा भी नहीं थी. सिर्फ भय और आशंका थी. उसमें सांसें रुक रही थीं. हे, ईश्वर! कहीं से वह पीली छतरी आये और अपने नीचे मुझे सुरक्षित कर ले.

तुम मेरी शक्ति हो अंजली. आइ लव यू रियली. मुझे बचा लो प्लीज़. किसी तरह.

राहुल को कब नींद आयी, या नहीं आयी, उसे पता नहीं चला. उसकी आंखें जब खुलीं, तो सुबह की सुनहली किरणें उसके जलते हुए माथे पर गिर रहीं थीं. सुबह की धूप और उसका माथा, दोनों किसी आग में जल रहे थे.

'तू रात में पता नहीं, क्या-क्या बड़बड़ा रहा था.' ओ.पी. ने कहा, 'तेरी आंखें लाल क्यों हैं? कहीं बुखार तो नहीं? हुआ क्या है तुझे?'

ओ.पी. ने राहुल के माथे पर अपनी हथेली रखी. राहुल ने आंखें मूंद लीं. वहां अंजली थी. उसकी आंखें चिंतित थीं. परेशान. घबराई हुई.

अपनी पीली छतरी से उसने राहुल को ढांप लिया.

'तू बहुत अच्छा दोस्त है ओ.पी.!' राहुल ने कहा. उसकी आंख की कोर से पानी की एक बूंद निकल कर तकिये पर गिरी.

ओ.पी. क्रोसीन और दवाइयां लाने डिस्पेंसरी चला गया. इन दिनों वायरल और डेंगू खूब फैला हुआ था.

पांच दिन बुखार और हड्डियों के टूटने के थे. उस बुखार में भी राहुल अपने रूम की खिड़की पर खड़ा होकर प्ले-ग्राउंड की ओर देखता. वह रेंगता हुआ पीला धब्बा, या धीरे-धीरे, तलहटी से उड़ती हुई युनिवर्सिटी की ओर आने वाली नन्हीं-सी तितली, इन पांच दिनों में एक बार भी नहीं दिखी.

'ख़तरा डिहाइड्रेशन का है. खूब पानी पियो. नमक-चीनी डाल के.' गोविंद नेमा ने कहा. वह सी.वी. रमण हॉस्टल में रहता था और फार्मेसी में रिसर्च कर रहा था.

प्रताप, अटलूरी, निकेतन, कार्तिकेय, मधुसूदन, परवेज़, प्रवीण, मसूद सभी लड़के राहुल के रूम में आते रहे. वहां ताश हुआ. गाना-बजाना हुआ. बीड़ी और सिगरेट के सुट्टे-खींचे गये. एस.एम.टी.एफ. की मीटिंग भी वहीं हुई.

हिंदी डिपार्टमेंट से शालिगराम और शैलेंद्र जॉर्ज भी आये. राणा, मनमोहन, राजू भी. राहुल के भीतर बहुत तेज़ व्याकुलता पैदा होती कि वह सबसे अंजली के बारे में पूछे. वह कैसी है? क्या कर रही थी? उसने कुछ कहा है क्या? वह उसकी खिड़की में कभी दिखती क्यों नहीं?

तीसरे दिन हेमंत बरुआ मुस्कराता हुआ आया और उसने एक छोटी-सी कागज की पर्ची राहुल को पकड़ाई. 'मैसेज फ्रॉम योर बर्ड. मेरे डिपार्टमेंट में आकर उसने मुझे दिया.'

वह नन्हीं-सी कागज की पर्ची हलके हरे रंग की थी और टेढ़े-मेढ़े किसी बच्चे जैसी हैंडराइटिंग में, नीली स्याही से, उसमें लिखा था—

'गेट वेल सून.'

और नीचे नन्हें-नन्हें नीले अक्षरों में *साइन* था—ए एन जे आइ. 'एंजी'.

हेमंत से पता चला कि अंजली इन दिनों कार से आती है. ड्राइवर के साथ. वह कुछ परेशान सी है. लेकिन हेमंत ने हँसते हुए कहा, 'बट डोंट लूज योर हार्ट, राहुल! मैं अच्छी तरह से जानता हूं...शी रियली लव्स यू....अब मैं तुम दोनों की एक ज्वायंट 'डि-फैक्टो' फाइल बनाऊंगा. जो हर रोज़ 'अपडेट' होगी.'

राहुल के शरीर से इतना पसीना छूट रहा था कि बार-बार तौलिये से पोंछना

पड़ता था.

'देखा! मैं जानता था कि स्साले की क्रोसीन कहां है.' ओ.पी. ने कहा, 'मैं फालतू में डिस्पेंसरी के चक्कर मारता था. इसका बुखार तो अब उतरा, पर्ची पाने के बाद.'

'ओह! तो इसे डेंगू नहीं था!' हेमंत ने कहा. 'वही था, नाना पाटेकर वाला रोग.'

'लवेरिया!' छह फुटा सींकचे शुतुर्मुर्ग ने बांग दी.

'चोप्प!' राहुल ने उसे डांटा. उसे खांसी आ गयी.

लेकिन ये तारीखें इतनी उजली और इतनी खुश नहीं थीं. उनकी पत्तियों पर ओस की बूंदें ही नहीं गिर रहीं थीं, आग और बर्फ में वे झुलस भी रही थीं.

राहुल के तीन ट्यूशंस में से दो बंद हो गये. पता चला कि जिस सेल्स टैक्स ऑफिसर जायसवाल की बेटी को वह पढ़ा रहा था, उनसे किसी ने कहा कि वह ठीक लड़का नहीं है. गुप्ता ट्रांसपोर्ट एंड ट्रेवल एजेंसी के एम.एल. गुप्ता को किसी ने सूचना दी कि इसके पहले राहुल को एक लड़की को ट्यूशन में 'कोकशास्त्र' पढ़ाते पकड़ा गया था और उसकी पिटाई के बाद उसे वहां से भगा दिया गया था. उसका तीसरा ट्यूशन भी बंद हो जाता, लेकिन प्रताप ने अपने मामा से, जो पुलिस में थे, कहकर उसे बचा लिया था.

इसका मतलब 'क्रिटर्स' अब सक्रिय हो गये थे. अफवाह और झूठ का भारतीय इतिहास का सबसे बड़ा कारखाना उनके पास था. जिस व्यक्ति या समुदाय को वे ख़त्म करना चाहते थे, एकजुट होकर, एक साथ, वे उसके बारे में झूठ और अफवाह का अंबार खड़ा कर देते थे. शताब्दियों का आनुवंशिक प्रशिक्षण इसमें खूब काम आता था. ब्राह्मण ग्रंथ और तमाम पुराण इस झूठ के प्रमाण थे. कुछ ही साल पहले अयोध्या में हुए बाबरी मस्ज़िद कांड के समय के तमाम हिंदी के अख़बार इसके प्रमाण थे. पता चला कि वायस चांसलर अशोक कुमार अग्निहोत्री ने युनिवर्सिटी की गवर्निंग बॉडी की मीटिंग में कहा था कि उन्हें यह जानकारी मिली है कि हॉस्टल में कुछ कम्युनिस्ट और नक्सलाइट्स लड़के हैं और वे दूसरे स्टूडेंट्स को भड़का रहे हैं. कार्तिकेय काजले और मधुसूदन, जिनका अकादेमिक रिकॉर्ड बहुत अच्छा था, उनके बारे में कह दिया गया था कि महाराष्ट्र और केरल में उनके पुलिस रिकॉर्ड्स ठीक नहीं हैं.

राहुल के बारे में डॉ. डंगवाल और डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी ने लड़कियों को अलग बुलाकर कहा था—'उससे दूर रहना. उसका कैरेक्टर ठीक नहीं है.'

राहुल का माथा घूम रहा था. ऐसा क्यों हो रहा है उसके साथ? इसलिए कि वह मेहनत के साथ पढ़ रहा है? इसलिए कि वह किसी टीचर की चापलूसी नहीं कर रहा है? क्या इसलिए कि उसने और एस.एम.टी.एफ. के दूसरे साथियों

ने मिलकर दूसरे राज्यों और इलाकों से आये लड़कों के साथ लूटपाट और वहशियाना हरकत करने वाले गुंडों को ऐसा करने से रोक दिया था? क्या इसलिए कि उसका शरीर और चेहरा ऐसा है, जिसे वह बिगाड़ नहीं सकता?

या इसलिए कि वह ब्राह्मण नहीं है, अज्ञात कुलशील है, इसके बावजूद हिंदी साहित्य की इस मध्यकालीन गुफा में एक लड़की के पीछे-पीछे चलता हुआ धोखे से घुस आया है? क्या वह कोई हब्शी है, जो किसी रोमन नगर के बीच पहुंच गया है? या चांडाल जिसके गले में घंटा बंधा है; जिसे उसे खुद बजाते हुए ऐलान करना है...दूर रहिए श्रीमंतो, इधर से गुज़र रहा है एक अधम शूद्र. इसकी परछाईं से स्वयं को अपवित्र होने से बचाने की कृपा करें महोदय!...आइये, आपकी इस महान वैदिक भाषा में कुछ शंबूक फिर तप कर रहे हैं, इनका शिरोच्छेदन करवाइये. किसी क्षत्रिय के द्वारा. फिर उसका सिर भी परशुराम के गंडासे से काट डालिये. उसकी पत्नी को आग में झोंकिये, उसे किडनैप कर लीजिए और अगर इसके बावजूद वह बच जाये तो उसे 'कुलटा' और 'चरित्रहीन' कहकर शहर बदर कर दीजिए.

लेकिन याद रखिये कि उस औरत को इस बार आपकी राजधानी के बाहर, किसी दलित की कुटिया में फिर शरण मिलेगी. और इस बार फिर वही दलित, जिसे आप डाकू कहेंगे, इस समय का एक और कालजयी महाकाव्य लिखेगा.

और हरामजादो, उसका नाम फिर से वही होगा—वाल्मीकि...!

हूप...हूप...हूऽऽप!

रात के ग्यारह बजे हॉस्टल में शोर-शराबा हुआ. ओ.पी. ने लौटकर बताया कि मसूद और निकेतन शहर फिल्म 'सत्या' देखने गये थे. वहां 'गणेश' टाकीज़ में लच्छू गुरू के चमचों ने उन्हें देख लिया और घेरकर खूब मारा. मसूद की दायीं आंख से खून निकल रहा है. दाहिनी कलाई, रिबबोन और बायें हाथ के अंगूठे में फ्रैक्चर है. निकेतन को भी चोटें आयी हैं.

अगली सुबह 'जनवाणी' नामक अख़बार में, जो था तो 'लोकल' लेकिन 'अखिल भारतीय' होने का दावा करता था, तीसरे पेज पर ख़बर थी *'लड़की से छेड़खानी करते छात्रावास के मजनूं की पिटाई.'* इस समाचार के मुताबिक अल्पसंख्यक समुदाय का एक लड़का 'गणेश' टाकीज में एक अन्य समुदाय की लड़की को छेड़ रहा था, इससे उत्तेजित होकर भीड़ ने उसकी और उसके एक दूसरे साथी की पिटाई की. थाना प्रभारी विजय नारायण शर्मा ने 'जनवाणी' को बताया है कि दोनों छात्रों के विरुद्ध मामला दर्ज़ कर लिया गया है.

मैक्स कंप्यूटर सेंटर की 'डि-फैक्टो' फाइल के अनुसार 'जनवाणी' का संपादक वाइस चांसलर अग्निहोत्री का रेगुलर दरबारी है और विश्वविद्यालय की ओर से, वहां की धांधली और भ्रष्टाचार से संबंधित सूचनाओं को छुपाने के लिए उसे 'महीना' दिया जाता है. इस अख़बार में आये दिन कुलपति अग्निहोत्री की प्रशंसा में आलेख

और उनकी गतिविधियों की प्रशंसात्मक रपटें छपती रहती हैं. शहर के एकमात्र बार 'आशियाना' के 'फेमिली केबिन नंबर दो' में इस संपादक को वीसी अग्निहोत्री के साथ किसी भी शाम व्हिस्की पीते और डकार मारते देखा जा सकता है. यह उस प्रजाति का प्राणी है जो राजनीति में 'सोशलिस्ट' और संस्कृति में 'फ़ासिस्ट' हुआ करती है. पक्का ब्राह्मणवादी.

हेमंत बरुआ और कार्तिकेय हँस रहे थे. हेमंत ने कहा, 'मैंने 'ग्लोबलाइजेशन' की स्पेलिंग बदल दी है. 'बी' की जगह मैंने 'सी' कर दिया है.'

'क्या मतलब?' ओ.पी. ने पूछा.

'हमारे यहां 'ग्लोबलाइजेशन' नहीं, 'ग्लोकलाइजेशन' हो रहा है. यानी 'जी-लोकलाइजेशन.' हेमंत ने एक ऐसे लहजे में कहा, जिसमें व्यंग्य था या गुस्सा, अंदाजा मुश्किल था.

'तुम बताओ हिंदी साहित्य के रंगरूट कि इसका हिंदी ट्रांसलेशन क्या हुआ?' कार्तिकेय काजले ने राहुल से पूछा. वह पुणे से आया था और उसकी मातृभाषा मराठी थी.

'जी से हुआ 'घटिया'...और 'लोकलाइजेशन' से हुआ 'स्थानिकीकरण' यानी 'घटिया स्थानिकीकरण'. राहुल ने कहा. उसकी आवाज़ में विरक्ति थी.

'यही असलियत है.' कार्तिकेय ने कहा.

असलियत यह भी थी कि झूठ और अफवाहों का सदियों पुराना कारखाना राहुल और उन लड़कों के खिलाफ धड़धड़ाता हुआ शुरू कर दिया गया था, जिनका अपराध सिर्फ यह था कि वे अनैतिक और भ्रष्ट नहीं थे. और यह भी कि इस सट्टेबाज, लंपट और जालसाज समय में उनकी जेबें खाली थीं, वे गरीब थे और ईमानदार थे.

शालिगराम और शैलेंद्र एक ऐसी सूचना लेकर आये थे, जिस पर न ओ.पी. को विश्वास हो रहा था, न राहुल को. और जब यह यकीन हो गया कि यह सूचना सही है तो छह फुट तीन इंच लंबा कंकाल पहले तो खुश होकर माइकेल जैक्सन की तरह नाचा फिर पी.टी. ऊषा की तरह दौड़ता हुआ, दूसरे दोस्तों को बुलाने भाग गया.

हुआ यह था कि उस दिन स्टूडेंट्स यूनियन के लिए विश्विविद्यालय के हर विभाग की हर कक्षा से काउंसिलर का चुनाव होना था. हिंदी प्रीवियस से कांउसिलर के लिए बलराम पांडे खड़ा हुआ था. यह हर कोई जानता था कि वह डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी का उम्मीदवार है क्योंकि वह उनके घर खाना भी बनाता था. उसके नाम का प्रस्ताव विजय पचौरी ने किया था और अनुमोदन राम नारायण चतुर्वेदी ने. लग रहा था कि वह निर्विरोध चुन लिया जाएगा.

शैलेंद्र जॉर्ज ने हँसते हुए बताया, 'मैंने तो यों ही खड़ा होकर राहुल का नाम प्रस्तावित किया. सोचा था दो ही वोट तो मिलने हैं, लेकिन पांडे को 'अन-अपोज़्ड' नहीं होने देंगे...शालिगराम नाम को 'सेकंड' करने के लिए खड़ा ही हो रहा था... कि...'

'उधर, लड़कियों वाली सीट की तरफ से अंजली जोशी खड़ी हो गयी...'मैं राहुल के नाम को 'सेकंड' करती हूं,' उसने कहा...' शालिगराम उत्साह के साथ बता रहा था...

'हमने हिसाब लगाया था कि अगर सारी लड़कियों ने भी हमें वोट दे दिया, तब भी राहुल को सिर्फ आठ वोट मिलेंगे. बलराम पांडे नौ ब्राह्मणों का वोट पाकर एक वोट से जीत जाएगा.' शैलेंद्र ने कहा.

'हम तो हार के लिए तैयार बैठे थे. लेकिन जब काउंटिंग हुई तो राहुल को नौ वोट मिले. बलराम पांडे को आठ. एक वोट से वो हार गया.' शालिगराम ने ताली बजाई. 'एक कोई फूट गया, उधर से.'

'मुझे पता है, कौन था वो!' शैलेंद्र जार्ज ने जासूस की तरह कहा, 'वो था सुदीप पंत. शर्मिष्ठा ने उसे तोड़ लिया. दोनों की चल रही है न, आजकल.'

ओ.पी. दूसरे दोस्तों के साथ आ गया था. पांच सौ ग्राम भुनी हुई मूंगफली का लिफाफा लेकर. मेस में बलबीर को पटाकर दस 'कट' चाय का आर्डर भी दे दिया गया था.

चाय और भुनी मूंगफली के साथ काउंसिलर के चुनाव में इस अप्रत्याशित जीत को 'सेलिब्रेट' किया गया.

दस दिन गुज़र चुके थे. बुखार के दौरान ही राहुल ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास *अनामदास का पोथा* पढ़ डाला था. उसे बहुत मज़ा आया. शैलेंद्र और शालिगराम से जब उसने काउंसिलर के चुनाव के बारे में सुना, उस रात, ओ.पी. के सो जाने के बाद भी वह देर रात तक जागता रहा आया.

अनामदास का पोथा में जिस तरह जंगल में ऋषि की कुटिया में रहने वाले रैक्व ने जब अपने जीवन में पहली बार एक स्त्री को देखा था, तो उसकी पीठ में एक मीठी, अब तक के जीवन की अज्ञात खुजली होने लगी थी. ठीक वैसी ही, उतनी ही अनोखी, उतनी ही मीठी, वह अज्ञात खुजली राहुल को भी उस रात बार-बार होती रही. उसके शरीर और उसकी चेतना के उन सभी हिस्सों में, जहां-जहां अंजली ने उसे छुआ था.

'तुमने मेरे नाम को सेकंड क्यों किया. क्यों किया एंजी?' उसने उस रात फुसफुसाते हुए अकेले में कहा, उस तरह, जिस तरह किसी पेड़ की डाल में टंगे किसी घोंसले में दुबकी हुई चिड़िया रात में, ठंडी हवा के किसी झोंके में सिहरती हुई अपने आप से, पेड़ की डाल से, या हवा से कहती है.

उस रात राहुल यह भूल गया था कि उसका और उसके जैसे असंख्य लोगों का जीवन उन कमज़ोर पाल वाली नौकाओं की तरह है, जो इस समय के हिंसक और उन्मत्त महासमुद्र में, किसी तूफान में फंसकर, पागल और सर्वभक्षी लहरों से किसी तरह, प्राणपन के साथ, अपने अस्तित्व की निर्णायक और अंतिम लड़ाई में, जूझ रही हैं. उनकी नियति हर बार उनके जीवन के साथ एक जुआ खेलती है, और किसी संयोग, किसी चमत्कार या किसी अप्रत्याशित करिश्मे से उनका जीवन हर बार बच जाता है.

उस रात राहुल को यही लग रहा था जैसे वह उस जहाज के डेक पर निश्चिंत और सुरक्षित सो रहा है, जो किसी 'टाइटेनिक' जैसी दुर्घटना से बाल-बाल बचकर निकल आया है और अब रात भर की निर्विघ्न यात्रा में, किसी शांत और निरुद्विग्न समुद्र के अथाह वत्सल जल में बढ़ता चला जा रहा है. आकाश में शरत की पूर्णिमा का जो चांद है, वह और कुछ नहीं, अंजली की ही उपस्थिति है. और वह अपनी किरणों से उसके माथे पर चुपचाप एक नये जीवन की कथा लिख रही है...

राहुल गहरी नींद में डूब जाने के ठीक तट पर था, जब उसे अपने प्रिय

कवि लोर्का की कविता की पंक्तियां याद आयीं—

'...मेरे माथे पर
चंद्रमा की अमरता है
मैं सोना चाहता हूं एक पल,
एक घंटा, एक रात या एक सप्ताह, एक वर्ष
या शायद एक पूरी शताब्दी...
मैं बहुत थक गया हूं...'

उस सुबह जब राहुल टैगोर हॉस्टल के रूम नंबर 252 की खिड़की के पार नीचे की तलहटी में धीरे-धीरे उड़ती पीली तितली को देखकर जल्दबाजी में अपनी पैंट, टी-शर्ट चढ़ाकर भाग रहा था, तो पीछे से ओ.पी. ने उसकी कॉलर पकड़ ली.

'तू सोचता है, मैं ये सोचता हूं कि तू सुबह-सुबह 'जॉगिंग' के लिए जा रहा है? इतना उल्लू हूं मैं क्या?'

'तो मैं कहां जा रहा हूं?' राहुल ने किसी अच्छे बच्चे की तरह पूछा.

ओ.पी. ने उसकी पीठ पर एक धौल लगाई. 'जा तू अपनी 'क्रोशीन' के पास. बस इतना याद रख कि कभी न कभी काम मैं ही आऊंगा...चल फूट.'

और राहुल तीन-तीन सीढ़ियां एक-एक छलांग में फलांगता हुआ फूट लिया. बुखार की कमजोरी के बावजूद उसके शरीर में पता नहीं कहां से इतनी स्फूर्ति और ऊर्जा भर गयी थी.

यू आर माइ पॉवर एंजी. तुम मेरी शक्ति हो!

लेकिन राहुल ने देखा कि उसे देखकर अंजली घबड़ा गयी. उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई फिर राहुल से कहा, 'इस तरह तुम दौड़ते हुए मत आया करो राहुल! थिंग्स हैव चेंज्ड नाउ... ज़ल्दी उधर चलो.'

दोनों जब घाटी की तलहटी पर बने स्टोर रूम के पिछवाड़े, दो चट्टानों और लेंटिना की झाड़ियों के बीच घिरी निर्जनता के सुरक्षित कोने में पहुंच गये तो अंजली ने अपनी छतरी बंद करके झाड़ी के नीचे छुपा दी. उसके चेहरे में चिंता और बहुत कुछ एक ही सांस में बता डालने की व्यग्रता थी. उसने राहुल की बांह को इस तरह से पकड़ा, जैसे कोई किसी छूटती हुई चीज़ को पकड़ता है. जैसे कोई मल्लाह अचानक हाथ से फिसलकर नदी की तेज धार में बह जाने वाले पतवार को आखिरी कोशिश में पकड़ने की कोशिश करता है.

अंजली ने इतना ज़ोर लगाकर राहुल की बांह को पकड़ा था कि राहुल सिहर उठा!

अंजली की आंखों में आंसू थे.

'फिलहाल सब ठीक हो गया है...लेकिन हमें अलर्ट रहना है.' उसने कहा.

'हुआ क्या? टेल मी.' राहुल ने उसके चेहरे पर आ गये बालों को हटाया.

'भइया से किसी ने हमारी शिकायत की. तुम्हारे बारे में बड़ी उल्टी-सुल्टी बातें बताई गयीं...तुम ड्रग लेते हो, तुम्हारा कैरेक्टर ठीक नहीं है, तुम नक्सलाइट हो...'

राहुल दहल उठा. 'किसने कहा ये सब...?'

'यह भी कि तुम इसके पहले किसी क्रिमिनल केस में रस्टीकेट किये जा चुके हो...'

'बास्टर्ड्स!...' राहुल का खून खौल उठा. '...इसमें से एक-एक चीज़ झूठ है...

'क्या मैं नहीं जानती, राहुल?' अंजली ने राहुल की हथेली अपनी गोद में रख ली.

'जो भी तुम्हें जानता है, वह इस पर यकीन नहीं करेगा.' ...उसने कहा, 'लेकिन, कितने लोग तुम्हें जानते हैं? जो नहीं जानते, वे तो यही मानेंगे. राइट? इसीलिए झूठ हमेशा ज़्यादा ताकतवर होता है...'

'बाप रे!' राहुल सचमुच परेशान था. 'कार्तिकेय ने कहा था कि उन्होंने अपना कारखाना चालू कर दिया है.'

'कारखाना?' अंजली समझ नहीं पा रही थी.

'लीव इट.' राहुल ने कहा... 'तुम बताओ, तुम क्या सोचती हो मेरे बारे में?'

'मैं?' अंजली के भीतर जैसे कोई तेज आंधी पैदा हुई. उसने राहुल को गहरी आंखों से देखा. राहुल जब तक संभले तब तक वह उस पर झपट पड़ी. 'मैं ये सोचती हूं ये...ये...ये...ये...!'

दो चट्टानों के बीच की उस निर्जनता में वह एक पागलपन था, या उन्माद, जो उन दो शरीरों के भीतर एक साथ, एक जैसी तीव्रता से पैदा हो रहा था और वे उसमें इधर-उधर, एक-दूसरे से टकराते हुए उड़े जा रहे थे.

दोनों के चेहरे गीले थे. कपड़ों में सिलवटें पड़ गयी थीं और सूखी हुई घास, तिनकों और पत्तियों में वे लिथड़ गये थे.

'लड़कियों ने बहुत साथ दिया. शर्मिष्ठा, लता, चंद्रा...सबने. तुम्हारे एंथ्रापोलॉजी से अणिमा, आभा और नीरा दीदी भी हमारे घर आयीं.' अंजली ने लंबी सांस लेकर कहा, 'तुम तो मज़े में बुखार में पड़े ऐश करते रहे.'

'मैं खिड़की के बाहर देखता रहा...तुम कार से क्यों आने लगीं थीं?'

'क्या करती? भइया ने जासूस ड्राइवर लगा दिया था.' अंजली मुस्कराई. 'अब सब ठीक है. बस, वी हैव टु बी लिटिल केयरफुल.'

'लेकिन किसने किया ये सब?' राहुल ने पूछा

'सबने! सारे बाम्हणों ने.' अंजली ने कहा. एक पल के लिए वह चुप हुई फिर उसने जैसे गुस्से में कहा, 'लेकिन डोंट फॉरगेट राहुल, कि तुम काउंसिलर का चुनाव ब्राह्मणों की वजह से ही जीते...और तुम्हें इस बार बचाया भी उन्होंने...'

राहुल चौंक गया. यह कैसा 'कनफ्यूज़न' है? उसने सोचा. फिर उसने अंजली को खींच लिया.

और यह भी तो! हे ईश्वर! यह सब क्या है?

किन्नू दा ने कहा था, 'इस देश के इतिहास में कोई भी जाति कभी स्थिर नहीं रही है. एक एरिया में वह ऊपर है, तो दूसरे में नीचे...किसी अन्य क्षेत्र में बीच में. दीज़ कास्ट्स हैव फैशिनेटिंग मोबिलिटी... डाउन वर्ड एंड अपवर्ड. जिसने जहां, जिस क्षेत्र में, सत्ता पर कब्जा जमाया, वहां वह समाज में ऊपर उठ गया...! कमाल की गतिशीलताएं हैं...इन जातियों में. इसीलिए वे उतनी कट्टर नहीं हैं... उतनी शुद्धतावादी नहीं हैं...जितनी गतिशीलता उतनी विविधता...उतनी ही उदारता और उतना ही खुलापन.

लेकिन एक जाति ऐसी है, जिसने अपनी जगह 'स्टेटिक' बनाये रखी है. बिल्कुल स्थिर. सबसे ऊपर. हजारों साल से...वह जाति है ब्राह्मण. शारीरिक श्रम से मुक्त. दूसरों के परिश्रम, बलिदान और संघर्ष को भोगने वाली संस्कृति के दुर्लभ प्रतिनिधि. इस जाति ने अपने लिए श्रम से अवकाश का एक ऐसा 'स्वर्गलोक' बनाया, जिसमें शताब्दियों से रहते हुए इसने भाषा, अंधविश्वासों, षड्यंत्रों, संहिताओं और मिथ्या चेतना के ऐसे मायालोक को जन्म दिया, जिसके ज़रिये वह अन्य जातियों की चेतना, उनके जीवन और इस तरह समूचे समाज पर शासन कर सके.

राहुल, तुमने इस्राइली कवि एमिचाई की कविता पढ़ी होगी, अ वेरी एक्टिव हेड ऑन व वेरी पैसिव ट्रंक... एक निकम्मे, अकर्मण्य धड़ पर रखा हुआ एक बेहद सक्रिय, शातिर, षडयंत्रकारी दिमाग. एक ऐसी खोपड़ी, जिसमें तुम सीधी-सादी कील भी ठोंको तो वह स्क्रू या स्प्रिंग बन जाएगी.

किन्नू दा की आवाज़ गंभीर हो गयी थी, 'दे आर द ग्रेटेस्ट एंड द डेडलीएस्ट पॉवर मैनुपुलेटर्स सिंस सेंचुरीज़! सत्ता को कब्ज़ियाने, उसे अपने शिकंजे में कस लेने वाली ऐसी मक्कार बाजीगर जाति समूचे संसार के इतिहास में और कहीं नहीं. अ वेल आर्गेनाइज़्ड नेक्सस ऑफ पॉवर मैनुपुलेटर्स. संपत्ति और सत्ता के लिए यह जाति कुछ भी कर सकती है...यह इस देश का दुर्भाग्य ही है, कि वे हमेशा कामयाब रहे. आज तक!'

ओह, तो यह बात थी! राहुल के दिमाग में उथल-पुथल हो रही थी. यही कारण था कि हिंदी साहित्य में 'क्वीन विक्टोरिया' के लिए 'समस्या पूर्तियां' हुआ करती थीं. जार्ज पंचम की अगुआनी में विरुद गान लिखे जाते थे.

ब्रिटिश काल में अंग्रेजों की प्रशंसा में लेख और कविताएं कि आपने हमें

म्लेच्छों, विधर्मियों, कसाइयों यानी मुसलमानों से बचाया. और मुगलकाल में बादशाहों की चाटुकारिता, अवधी-ब्रज में दोहे, छप्पय, सवैया, चौपाई, सोरठे. धन्य हैं आप कि आपने हमें उद्दंड, उद्धत, नीच, शूद्रों, गंवारों और पतित जातियों से बचाया...

और अब इक्कीसवीं सदी की दहलीज़ पर हिंदी साहित्य के ये शाश्वत सवर्ण चापलूस लगे हैं भ्रष्ट अफसरों और नेताओं की चाटुकारिता में. राहुल का मन ग्लानि, आत्महीनता और लज्जा से भर गया.

तो जो मैं एम.ए. में पढ़ रहा हूं वह हिंदी साहित्य है, या ब्राह्मण साहित्य? क्या जैसे बुद्ध को अपना नया और क्रांतिकारी संदेश देने के लिए संस्कृत छोड़कर पालि की शरण में जाना पड़ा था, उसी तरह अब किसी भी परिवर्तनकारी विचार के लिए हिंदी को छोड़कर किसी दूसरी भाषा में जाना पड़ेगा?

इसका मतलब, अब हिंदी में न बुद्ध संभव हैं, न गांधी...अब इसमें रहेंगे आचार्य त्रिभुवन नारायण मिश्र और पद्मश्री तिवारी!

ओह! शिट्! शिट्!' राहुल के मुंह से निकला.

अंजली ने चौंककर उसे देखा, 'क्या हुआ?...तुम कुछ परेशान लग रहे हो.'

'नहीं...' राहुल ने उसके माथे को चूम लिया, 'आय लव यू टू मच! मैं तुमसे किसी पागल की तरह प्यार करता हूं...' वह एक पल के लिए रुका फिर उसने अंजली को ऐसी आंखों से देखा, जिसमें एक अव्यक्त किस्म की पीड़ा थी. अंजली ने भी इसे जाना. राहुल का चेहरा मुर्झा रहा था.

'मेरा विश्वास करो प्लीज, मैं सचमुच तुम्हें प्यार करता हूं, मिस जोशी!' राहुल से कमज़ोर-सी आवाज़ में कहा.

'धुत्त...!' अंजली ने राहुल के गाल पर एक थप्पड़ लगाया. लेकिन अंजली ने जिस 'मिस जोशी' के 'मज़ाक' पर प्यार से थप्पड़ मारा था, वह मज़ाक नहीं था. वह थी एक गहरी यंत्रणा.

अलग-अलग दिशाओं से आकर, एक दूसरे को काटती और टकराती हवा का एक तेज़ बवंडर अचानक वहां उठा. अंजली ने अपनी छतरी कसकर पकड़ ली. गनीमत थी कि वह खुली नहीं थी, वरना उसी तरह उड़ने लगती, जैसी तमाम सूखी पत्तियां, तिनके, कागज और पोलिथिन के लिफाफे इस बवंडर में उड़ रहे थे.

'हमारे गांव में इसे 'रकसा' कहते हैं. 'रकसा' यानी हवा का 'राक्षस'. कहते हैं, इसमें जो पहली पत्ती उड़े, अगर तुम उसे किसी तरह पा जाओ और उसे अपने दांत में दबा लो, तो तुम गायब हो जाओगे. बिल्कुल अदृश्य. फिर कोई तुम्हें नहीं देख पाएगा.' राहुल ने कहा.

'अच्छा!' अंजली ने कहा, 'चल के खोजें, वो पहली पत्ती?'

'एक तो इतने सारे उड़ते हुए कचड़े में वह मिलेगी नहीं और मिली भी तो

एक पत्ती से दो-दो लोग कैसे गायब होंगे?' राहुल का मन हलका हो रहा था.

'हो जाएंगे गायब दो लोग...' अंजली ने कहा.

'एक ही पत्ती से?' राहुल असमंजस में था.

'हां!' अंजली मुस्करा रही थी.

'कैसे?' यह राहुल की उलझन थी.

'हो जाएंगे गायब! मैंने कह दिया न. कैसे का क्या मतलब?' अंजली ने ज़ोर देकर कहा.

'लेकिन...!' राहुल की समझ में वह तकनीक अब भी नहीं रही थी. 'कैसे?' उसने फिर दोहराया.

'ऐसे...!...ऐसे.' अंजली ने कहा. वह राहुल से ज़ोरों से लिपट गयी. अपनी पूरी ताकत के साथ. राहुल को लगा, वे सचमुच गायब हो गए हैं. अब उन्हें कोई नहीं देख सकता. लेकिन वे सबको देख सकते हैं. सारी दुनिया को. समूचे शहर और आकाश को.

उस प्ले ग्राउंड के एक छोर पर बने स्पोर्ट्स स्टोर रूम के पिछवाड़े, पहाड़ी की तलहटी पर, दो खूब सलेटी चट्टानों के बीच की निर्जनता और एकांत में, वे अदृश्य हो चुके थे. वहां सिर्फ अंजली की पीली छतरी रखी हुई थी. वह भी बंद थी. लेंटिना की झाड़ी के नीचे छुपी हुई.

लेकिन वह भी छतरी कहां थी?

वह तो तितली थी, जो एक दिन अपना रूप बदलकर अब सारी दुनिया को चकमा दे रही थी.

सबकी आंखों के सामने खुलेआम. दिन-दहाड़े.

'तू ने जिम में जाना छोड़ दिया क्या?' ओ.पी. ने पूछा. 'इन दिनों तू बहुत कमज़ोर लग रहा है.'

राहुल थोड़ी देर चुप रहा, फिर उसने कहा, 'पता नहीं क्यों ओ.पी., मुझे डर सा लगता रहता है...मैंने हिंदी में एडमीशन लेकर ठीक नहीं किया यार.'

'अब आई न बात समझ में.' हेमंत बरुआ ने हँसते हुए कहा. 'अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा. टु हेल विद हिंदी. तू 'जैप' या 'निट' का शॉर्ट-टर्म कोर्स कर ले और निकल आ उस नरक से.'

'उर्दू का भी हाल यही है.' परवेज़ ने कहा, 'हिंदी नरक है, तो उर्दू में भी दोज़ख़ है. शाहिद ने तो प्रीवियस भी पूरा नहीं किया. फ्रिज और टीवी रिपेयर की दुकान खोलकर बैठ गया. कहता है दुबई चला जाऊंगा.'

'मैं कहीं नहीं जाऊंगा. मैं इसी में रहूंगा. इसी में लडूंगा और इसी में मार दिया जाऊंगा.' राहुल हँसा. वह हँसी बहुत सरल नहीं थी.

'हां, स्साले तू क्यों निकलेगा उस गटर से. तेरी क्रोसीन, तेरी छतरी, तेरी तितली, तेरी चिड़िया—सब तो उसी हिंदी में है.' शुतुर्मुर्ग ने फिर बांग दी और फिर भयानक बेसुरे ढंग से गुनगुनाया... 'जीना यहां, मरना यहां, इसके सिवा...'

'चोऽप!' राहुल ने चिल्लाते हुए कहा. सब हँस पड़े.

राहुल जितनी बार अंजली से मिलता था, उसकी प्यास और बढ़ती जाती थी. उसे लगता था कि उसके भीतर एक ऐसा समुद्र है, जो अंजली के निकट होते ही इस तरह बेचैन हो उठता है जैसे वह समूची पृथ्वी को, पहाड़ों, शहरों, आबादियों समेत अपने भीतर डुबा लेगा.

जितनी भी बार वह अंजली से मिलकर लौटता, उसे लगता कि उसके भीतर के समुद्र की पागल, प्यासी और उत्ताल लहरें कहीं किसी तट के चट्टानी पहाड़ से पछाड़ खाकर निराश वापस लौट आयी हैं. पराजित और व्यग्र.

अधूरा उदास और हर बार उतना ही अकेला रह जाता समुद्र.

आज अंज़ली ने नीली डेनिम की पैंट और एक ढीली-सी सफेद टी-शर्ट पहन रखी थी

इस बार यह लाइब्रेरी की तीसरी मंजिल थी. दक्षिणी छोर की दीवार का कोना. वहां वर्षों से बंद पड़ी मटमैली, धुंधली कांच वाली एक खिड़की थी, जिसमें से बाहर की रोशनी बहुत मुश्किल से पार हो पाती थी. किताबों की आलमारियों की कतारें ही कतारें.

उसी कोने में, किताबों के दो रैक्स के बीच की संकरी जगह में, वे दोनों अदृश्य होने के फेर में थे. पुरानी होती किताबों की गंध, मटमैली खिड़की से किसी कदर आती हुई धुंधली-सी रोशनी, दीवारों से निकलती नमी और बहुत महीन धूल...वे दोनों इतनी ताकत और व्याकुलता के साथ एक-दूसरें से लिपट रहे थे कि लगता था उनकी इच्छा को पूरा होने के लिए पूरी पृथ्वी-भर का विस्तार चाहिए. किताबों की दो आलमारियों के बीच की यह जगह बहुत संकरी थी.

यह पहली बार था, जब राहुल ने भींचकर अंजली को ऊपर उठाया और अंजली ने अपनी जंघाएं उसकी कमर पर दोनों ओर लपेट दीं. वे पल जैसे अचानक किसी धुंधले अंधेरे में घिर गये. दोनों की सांसें बीच-बीच में टूटने-सी लगीं. राहुल ने आधी नींद में मुंदती अपनी आंखों को खोलकर किसी तरह अंजली के चेहरे को देखा. अंजली का चेहरा बिल्कुल बदल चुका था. वहां कोई एक फूल था, जो किसी आग में जल रहा था. और कांप रहा था. किसी सम्मोहक विष में कुम्हलाता हुआ.

फिर राहुल को उस धुंधले पल में अंजली की आंखें दिखाई पड़ीं. कैसी थीं वे आंखें! वे किसी दूसरी दुनिया का स्वप्न देख रहीं थीं. उनकी पुतलियां स्थिर थीं, लेकिन जो कुछ वे देख रहीं थीं, वह कहीं बहुत दूर, किसी दूसरे समय और दूसरे लोक का दृश्य था. उनमें एक तरह की मूर्च्छा थी.

क्या वे दोनों नदी की किसी तेज धार में तैरती हुई दो मछलियों की तरह थे, जो एक-दूसरे से मिल तो चुकी थीं लेकिन अब भी उनकी नन्हीं-सी देह में एक-दूसरे के लिए इतनी व्याकुलता भरी थी कि वे फिर भी तैरती हुईं, एक-दूसरे के आर-पार हो जाना चाहती थीं. एक-दूसरे के शरीर के भीतर से निकलने की असंभव-सी, अबोध चेष्टाएं. बार-बार.

राहुल के हाथ अंजली की जींस की जिप की ओर बढ़े.

'नो...नो...! क्या कर रहे हो?' अंजली का वाक्य अंधेरे में बिखर रहा था. अर्द्धमूर्च्छित प्रतिरोध.

'लेट मी...! प्लीज!' राहुल के शब्द हवा की फुसफुसाहट में थरथराए.

'नहीं! यहां नहीं.' अंजली ने उसे और जोरों से भींच लिया.

'तो कहां?' यह वाक्य किसी तरह ऊपर तक तैर कर आया.

एक हल्का-सा खटका हुआ. जैसे किसी ने शेल्फ से कोई किताब निकाली हो... वे दोनों जड़ हो गये. किसी मूर्ति की तरह. उन्होंने अपनी सांसें तक रोक लीं.

पद्मश्री तिवारी और बलराम पांडे हाल के मुख्य दरवाज़े के साथ लगी हुई

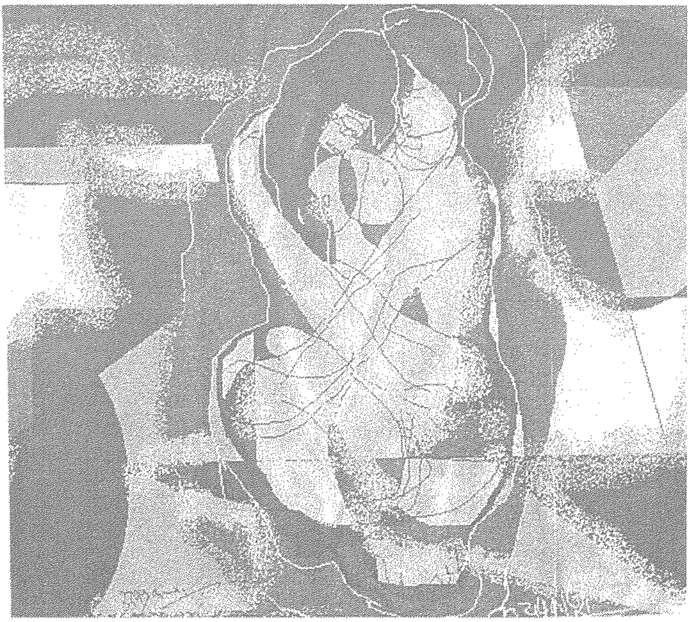

आलमारी में कुछ खोज रहे थे. कोई किताब.

राहुल ने अंजली को धीरे-से नीचे उतारा और दोनों सिर झुकाकर शेल्फ के नीचे छुप गये. उन्होंने अपनी-अपनी बढ़ी हुई सांसें नियंत्रित कीं.

जब पद्मश्री तिवारी और बलराम पांडे बाहर चले गये, तब राहुल ने सांस ली. उसने देखा कि जिस रैक के पीछे वह अंजली के साथ छुपा था, उसके शेल्फ में, किताबों की कतार के बीच झांक रहा था, यान ओत्चेनासेक का उपन्यास *'रोम्यो, जूलियट एंड डार्कनेस.'*

नात्सी फौजों की बूटों और बंदूकों की आवाजों के बीच, एक वर्षों से बंद कमरे में छिपे हुए दो अबोध, निर्दोष और असहाय, वयः संधि के बच्चे. एक लड़का और एक लड़की. हर पल मृत्यु के भय और एक-दूसरे के प्रति प्यार के बीच वयस्क होते दो बच्चे.

इस उपन्यास को राहुल ने पिछले महीने ही पढ़ा था. हिंदी में. निर्मल वर्मा का सुंदर, किसी कविता जैसा अनुवाद.

चारों ओर हर पल पसरते जाते भय और हिंसा के बीच किसी विडंबना की तरह, किसी भी वक़्त ध्वस्त कर दी जाने वाली इमारत की एक कमज़ोर-सी दीवार के एक कोने में धीरे-धीरे उगता पनपता हुआ एक बहुत कोमल पौधा.

पाप के अंधेरे में किसी पुण्य की तरह खिलने के जोखिम भरे प्रयत्न में जूझता

हुआ इस पिशाच समय का कोई सबसे पवित्र आदिम फूल.

राहुल ने अंजली की हथेली को चूम लिया.

'तो बताओ. कब? टेल मी.' उसने पूछा. उसकी आवाज़ में उसी समुद्र की व्याकुलता और अकेलापन था.

'थर्सडे को.' लगा जैसे अंजली ने पहले से ही इस दिन को कहीं से खोज निकाला हो

'थर्सडे को ही क्यों? वो तो अभी सात दिन दूर है. कल क्यों नहीं?' राहुल व्यग्र था.

'पागल. उस दिन बस दो ही क्लासेज़ तो होती हैं.' अंजली ने कहा.

'हां, वो डॉ. लोकनाथ त्रिपाठी का भक्तिकाल और डॉ. राजेंद्र तिवारी का विद्यापति...' राहुल ने कहा. 'यूऽ...ब्रिलियंट.'

अंजली अपने कपड़े ठीक करने के बाद, पर्स से ब्रश निकालकर बाल ठीक कर रही थी.

'लेकिन कहां?' राहुल को फिक्र हुई.

'मुझे नहीं पता.' अंजली ने जवाब दिया और चली गयी.

राहुल उस रैक के बीच की संकरी जगह में देर तक खड़ा हुआ यों ही किताबें निकाल-निकालकर उनके पन्ने पलटता रहा.

विचित्र यह था कि उन किताबों के पन्नों के पुराने पड़ते कागजों से सीलन और गर्द की नहीं, अंजली के शरीर की ताज़ा और ऐंद्रिक गंध आ रही थी. उस गंध ने राहुल को चारों ओर से घेर लिया.

काफी देर के बाद, वहां से निकलने के ठीक पहले, राहुल ने एक खूब लंबी और गहरी सांस खींची और वहां की हवा को अपने फेफड़ों में भर लिया.

....

'मुझे प्यास के पहाड़ों पर लिटा दो
जहां मैं एक झरने की तरह तड़प रहा हूं...
आईनो, रोशनाई की तरह मुझे आकाश में लिखो
और मुझे पढ़ो...
आईनो,
मुस्कराओ और मुझे मार डालो
आईनो,
मैं तुम्हारी ज़िंदगी हूं...

शमशेर की इन पंक्तियों का अर्थ राहुल के भीतर अब धीरे-धीरे खुल रहा था. यह जीवन ही होता है, जो असल में कविता को पढ़ता है और उसकी व्याख्या करता है.

दिन बीत रहे थे. तारीखें बदल रहीं थीं.

इतिहास के अभूतपूर्व विरोधाभासों से भरा हुआ काल.

भू-गर्भ विज्ञान के अंतरराष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् डॉ. वाट्सन विश्वविद्यालय छोड़कर आस्ट्रेलिया चले गये. उन्होंने इस्तीफा दे दिया था. जाने के एक दिन पहले, शाम को, वे इन पहाड़ियों को अंतिम बार देखने के लिए निकले थे. कार्तिकेय काजले उन्हीं के विभाग में था.

कार्तिकेय ने बताया, 'वे बहुत उदास थे. जिस पुराने कुएं में सापाम ने आत्महत्या की थी, उसके पास वे बहुत देर तक चुपचाप खड़े रहे. कुएं के टूटे-फूटे जगत से उन्होंने पत्थर का एक बेडौल-सा टुकड़ा उठाया. वह एक अजीब-सा पत्थर था. थोड़ा-थोड़ा पारभासक.

'वे बहुत देर तक उस पत्थर को देखते रहे. उनकी आंखों में कोई चमक-सी कौंधी. फिर जैसे अचानक पूरी घृणा के साथ उन्होंने उस पत्थर को उस कुएं में फेंक दिया.'

कार्तिकेय ने कहा, 'मैंने नीचे झांककर देखा. वहां उतना अंधेरा नहीं था...वहां सापाम की वह लिबर्टी वाली चप्पल अब भी तैर रही थी.

डॉ. वाट्सन ने कहा था, 'वह फॉसिल था...एक शंख. हजारों साल पुराना. जब यहां समुद्र या कोई मृत सागर रहा होगा, तब का शंख...वही शंख, जिसकी तुम लोग पूजा करते हो... वैष्णवों का एक पूजा प्रतीक.'

कार्तिकेय ने बतलाया कि हमने उनसे पूछा कि आप जा क्यों रहे हैं, यहां से?

डॉ. वाट्सन हँसे थे और उन्होंने कहा था, 'क्योंकि मैं यहां 'सेफ' नहीं महसूस करता. टाइम हैज़ चेंज्ड... मुझे डर लगता है.'

'मुझे भी डर लगता है, कार्तिकेय!' राहुल ने कहा. यह एक निर्बल-सी आवाज़ थी.

'कौन नहीं डरा हुआ है?...कोई 'सेफ' है क्या यहां?' कार्तिकेय गुस्से में था. 'ये पश्चिम से सारी घटिया, ख़तरनाक, पतित और भोगवादी चीजें आयात

करेंगे. जुआ, सट्टा, हथियार, केमिकल ड्रिंक्स, शराब, पोर्नोग्राफी, पिजा, कार... मज़ा, भोग, सुख, उन्माद और हिंसा का सारा माल...ये उसके पीछे पागल हो चुके हैं. पश्चिम का सबसे निकृष्ट, सबसे पतित प्रोडक्ट इन्हें चाहिए...लेकिन वहां का जो सबसे उत्कृष्ट है, ये उसे मिटा डालना चाहते हैं! ये उसके हत्यारे हैं. दुश्मन.

कार्तिकेय की आंखें लाल थीं, 'अमेरिका से ये गन खरीदेंगे और उससे क्राइस्ट को शूट कर देंगे...पश्चिम की सबसे निकृष्ट चीज़ से, पश्चिम के सबसे महान् 'कांस्ट्रक्ट' की हत्या...ये जापान से कार खरीदेंगे और उससे बुद्ध का सिर कुचल देंगे. इराक से ये बायोकेमिकल औजार लेंगे और उससे हज़रत मोहम्मद को मारेंगे. इस्राइल से मिसाइल लांचर लेंगे और उससे याहोवा के जिस्म के टुकड़े उड़ा देंगे. बर्बर शैतान!'

कार्तिकेय का दम फूल गया था.

'हम क्या करें?' किसी का यह वाक्य वहां तड़पता हुआ गिर गया था और अब हर किसी के भीतर छटपटा रहा था. किसी छिपकिली की कटी हुई पूंछ की तरह.

कार्तिकेय के शब्द राहुल की चेतना में गूंज रहे थे. '...वे ऋग्वेद से अग्नि लेंगे, और उसमें सारे वेदों को जला देंगे...पुराणों से वे त्रिशूल निकालकर लाएंगे और शिव और विष्णु को मार देंगे... वे ब्रह्मास्त्र पा जाएंगे और समूची सृष्टि का विनाश कर देंगे...!'

'मानव सभ्यता के इतिहास और स्मृति की अब तक की सारी महानताओं को एक-दूसरे से टकराकर वे चूर-चूर कर देंगे.'

वे किसी दूसरे ग्रह से शैतान द्वारा भेजे गये 'क्रिटर्स' हैं...

ये रावण की वे संततियां हैं, जो समुद्र से लौट आई हैं और अब उनके हाथ में सब कुछ है...सत्ता, पूंजी, भाषा, शब्द, अखबार, कंप्यूटर, टीवी... अंतरिक्ष तक जाते उपग्रह, परमाणु बम और इतना बड़ा बाजार.

यह कैसा रियलाइजेशन है? राहुल ने सोचा.

उसका मन हुआ कि वह अमेरिका के प्रेसिडेंट को ई-मेल भेजे कि 'अगर तुम अपने आपको प्रभु यीशु का अनुयाई मानते हो, तो सत्ता के इन शाश्वत दलालों से दूर हट जाओ. ये ईसा की करुणा के हत्यारे हैं.

चीज़ें तेजी से बदल रही थीं. हॉस्टल्स के बाहर, मैक्स कंप्यूटर सेंटर के बगल में कस्टम से जब्त सामानों की एक दुकान खुल गयी थी. पेप्सी, कोक, मिरिंडा के स्टाल्स थे. फास्ट-फूड की दो दुकानें हो गयीं थीं, जिनमें से एक में वर्दी और नवाबी कलंगीदार साफे में सजे बेयरे थे. आम ढाबों या मोबाइल वैन में जो बर्गर पांच-छह रुपये में मिलता था, वह वहां बीस रुपये का था. जो दोसा बाहर सात रुपये का था, वह वहां बाईस का था. लेकिन ताज्जुब था कि सबसे ज़्यादा वही दुकान चल रही थी. नूडल्स, पिज़ा, फ्राइड चिकेन, आइस्क्रीम्स, बर्गर, मंचूरियन... खाने-पीने की नयी सूची आ चुकी थी. ग्रीटिंग कार्ड्स, केक्स और गिफ्ट आयटम्स की एक बड़ी-सी दुकान युनिवर्सिटी के सुपर मार्केट के बगल में खुल गयी थी. सिगरेट और पान की चार दुकानें कैंपस में ही थीं. एक तो हॉस्टल्स के सामने ही. यहां आयुर्वेदिक औषधि के नाम पर बनने वाली भांग की गोली, 'मधुर मुनक्का' से लेकर गांजा-चरस और ब्राउन शुगर या सफेद पावडर बिकने लगा था. देशी-विदेशी कंडोम, कांट्रासेप्टिव गोलियां बिल्कुल आम हो गयीं थीं. एड्स के पोस्टर्स और नारे, अल्ट्रासाउंड और गर्भपात के विज्ञापन जगह-जगह थे.

पोस्ट ऑफिस के पीछे जो फ्रूट-जूस की दुकान थी, वह बोनी स्कॉट, मैकडॉवेल, डिप्लोमैट, डायरेक्टर्स स्पेशल, ओल्ड मांक से लेकर मृत संजीवनी सुरा और ठर्रे का पाउच तक रात में बेचती थी. पुलिस का 'हफ़्ता' बंधा हुआ था.

सट्टे और लॉटरी का हर जगह बोलबाला था. तीन लोकल केबल चैनल थे, जो देर रात में ब्लू-फिल्में दिखाते थे. दिन में उनमें ज़्यादातर आसाराम बापू, मुरारी बापू आदि-आदि का प्रवचन चलता था. सतसंग, जागरण, प्रवचन जितने बढ़ रहे थे, उतनी ही चोरियां, गर्भपात, बलात्कार, हत्याएं लूट और ठगी बढ़ रही थी. जिस अनुपात में ब्यूटी-कांटेस्ट और फैशन परेड बढ़ रहे थे, उसी अनुपात में औरतों की ख़रीद-फरोख्त और उन पर ज़ुल्म भी बढ़ रहे थे.

जगह-जगह मंदिर बन रहे थे. यह जमीन हथियाने और दो नंबर की काली कमाई को ठिकाने लगाने का जरिया था. कुछ लोगों के बीच बेतहाशा रुपया घूम रहा था. हर सौ रुपये में पैंतालीस रुपया देश में अवैध और काला था. आये रोज़

चिटफंड कंपनियां खुलती थीं और रातों-रात लोगों के रुपये लेकर चंपत हो जाती थीं. फर्जी कंपनियां खुलेआम पब्लिक शेयर जारी करती थीं और सीधे-सादे नागरिकों की ज़िंदगी-भर की कमाई को चूना लगा जाती थीं. किसान, बेरोजगार नौजवान और प्रताड़ित औरतें आत्महत्याएं कर रहे थे. एन.जी.ओ. और पब्लिक स्कूल कुकुरमुत्तों की तरह उग रहे थे और जमकर कमाई कर रहे थे.

पता चला गर्ल्स हॉस्टल की बीस लड़कियां 'आशियाना' और शहर में अभी-अभी बने थ्री-स्टार होटल, 'नवरंग' में रेगुलर जाती हैं. काल गर्ल्स की तरह. उनके चेहरे हर कोई जानता था. लेकिन चुप रहता था. उनके 'संपर्क' बहुत ऊंचे थे. गर्ल्स हॉस्टल के पास बहुत-सी कारें आने लगीं थीं. ये 'एंपावर्ड' औरतें थी. एक ऐसा 'फेमिनिज़्म' या नारीवाद आया था, जिसमें जो औरत मेहनत करती थी, वह जिंदगी भर नर्स, टीचर, स्टेनो, टाइपिस्ट या घरेलू कामकाज करने वाली 'बाई' बनी रह जाती थी. या फिर 'गीता पढ़ कर, सीता' बनने वाली थकी-पिटी, मैली-कुचैली पत्नी. लेकिन अगर वह देह का धंधा करने लगती थी, तो देखते ही देखते उसकी कोठी खड़ी हो जाती थी. वह कार में चलने लगती थी.

यह कैसा विरोधाभास है? स्त्री अगर बाजार में खुद को बेचे तो उसका कोई विरोध नहीं. लेकिन वह अगर किसी से कोई मानवीय और निजी संबंध का निर्माण करना चाहे, तो वह वर्जित है.

अंजली अगर फेमिना मिस इंडिया बन जाए तो पी.डब्ल्यू.डी. मिनिस्टर एल. के. जोशी की प्रसिद्धि बढ़ेगी. लेकिन अगर अंजली मेरे साथ कोई व्यक्तिगत मानवीय और भावनात्मक संबंध बना ले, तो उनकी प्रतिष्ठा चली जाएगी. राहुल सोच रहा था.

बाज़ार इसी तरह से नकदी देता था. कमाई इन्हीं तरीकों से होती थी. अमीरी के सारे रास्ते ऐसे ही थे.

'हिंदुत्ववाद' लगभग आ चुका था. कुछ दंगों, रक्तपात और एक मंदिर भर बनने की और प्रतीक्षा थी.

रा हुल और ओ.पी. मेस मे डिनर कर रहे थे. रात के साढ़े नौ-पौने दस का वक़्त था. बलबीर लगता है आज किसी बात पर खुश था. वह बिल्कुल फूली हुई गर्म रोटियां दे रहा था. आलू-टिंडे की सब्जी थी. चने की दाल. ओ.पी. हरी मिर्चें बहुत खाता था.

अचानक बाहर हल्ला-सा होने लगा.

राहुल और ओ.पी. भी बाहर भागे. लड़कों की भीड़ इकट्ठा थी. एक घेरा-सा बना हुआ था. उसके बीच में प्रताप, कार्तिकेय, परवेज, मसूद, प्रवीण थे.

राहुल को देखते ही प्रताप ने आवाज़ दी—'इधर आ जाओ, यार! अपने 'सुपरस्टार' को भी बुला लो.'

कहने की देर थी. ओ.पी. घेरे के बीचों-बीच पहुंच चुका था.

पता चला आज हॉस्टलर्स ने लच्छू गुरू की फिर से पिटाई कर दी. वह भी शहर के बीचों-बीच. 'गणेश' टाकीज के सामने. यह मसूद और निकेतन के साथ घटी घटना का प्रतिशोध था.

सारी योजना कार्तिकेय और प्रताप की थी. एस.एम.टी.एफ. के दस लड़के इसमें शामिल थे. प्लान के मुताबिक मसूद और निकेतन को 'गणेश' टाकीज भेजा गया था और बाहर खड़े एक टेंपो में कार्तिकेय, प्रताप, परवेज़, प्रवीण, निरंजन, अटलूरी समेत बाकी लड़के थे.

मसूद और निकेतन जैसे ही टिकट विंडो पर पहुंचे और पर्स जेब के बाहर निकाला, दो लोगों ने आकर उन्हें घेर लिया. हाथापाई होने लगी. मसूद कुछ ज़्यादा ही कलाबाजी दिखा रहा था इसलिए उन दोनों पर वह भारी पड़ने लगा.

'गुरू...ऽ...! बैंचो' काबू में नईं आ रए!' उनमें से एक चिल्लाया.

'कटुआ है...स्साला! हलाल की गऊ खा के गब्बर खां बन गया है... गुरू...ऽऽ' दूसरे ने भी आवाज़ लगाई.

पनवाड़ी की दुकान की बेंच पर लच्छू गुरू अपने एक और चमचे के साथ बैठे थे. वे मदद के लिए वहां पहुंचे.

बस, इसी मौके की ताक में टेंपो में बैठे लड़कों ने धावा बोल दिया. 'टारगेट'

फिर से लच्छू गुरू को ही बनाया गया था.

पांच-सात मिनट के भीतर-भीतर वे जमीन पर लोट रहे थे. दूसरा साथी गिड़गिड़ा रहा था. बाकी दो भाग गये थे.

पुलिस के दो कांस्टेबिल वहीं चाय की दुकान में बैठे थे. उन्होंने अपनी मुंडी आसमान की ओर उठा दी थी. उधर, जिधर ऐश्वर्या राय अपनी कंजी आंखों में मस्ताई हुई मुस्करा रही थी और बाहें उठाकर अपनी बगलें दिखा रही थी. यह विश्व सुंदरी जब दिल्ली पहुंचती थी, तो उसकी कार में भारत का राष्ट्रीय ध्वज, तिरंगा, लहराता था. राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री उसके साथ फोटो खिंचाते थे. अशोक स्तंभ के तीनों-चारों शेर उसके तलवे चाटते थे. वही विश्व सुंदरी 'गणेश' टाकीज के उस पोस्टर में अपने स्तन, नाभि और बगलें दिखाती हुई नागरिकों से अपील कर रही थी—'पैसा फेंको...तमाशा देखो.'

'वो दो गुंडे, जो भाग गये थे, वे सीधे लच्छू गुरू के बड़े भाई के पास पहुंचे होंगे. नगरपालिका अध्यक्ष लक्खू भइया यानी लखन लाल पांडे के पास... इसलिए हम सीधे वहां से यहां आ गये.'

'खूब फोड़ा हमने उन्हें... फ्यूचर में किसी भी हॉस्टलर को टच करते हुए दस बार सोचेंगे.' प्रताप जोश में था.

'ये मेसेज वीसी अशोक कुमार अग्निहोत्री और दूसरे ऑफिशियल्स तक भी जाएगा. अगर वे सिर्फ गुंडों और क्रिमिनल्स की ही बात सुनते हैं, तो उन्हें पता चलेगा कि हम भी उन गुंडों से कमज़ोर नहीं हैं.' कार्तिकेय ने कहा.

उस रात कुछ देर तक जश्न का माहौल रहा.

अगले दिन 'लोकल' लेकिन 'अखिल भारतीय' होने का दावा करने वाले अखबार 'जनवाणी' में पहले पेज की दायीं ओर खबर थी. *'विश्वविद्यालय के छात्रों की गुंडागर्दी से शहर के नागरिक परेशान.'* इस रिपोर्ट के अनुसार छात्रावास में अपराधी किस्म के छात्र रह रहे हैं. कई कमरों में खतरनाक हथियार जमा किये गये हैं. विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि इनमें कई पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. और नक्सलवादी गुटों के सदस्य हैं. तस्करी के जरिये चोरी-छिपे आने वाले नशीले पदार्थों की बिक्री आदि में भी ये छात्र शामिल हैं.

इस खबर में रात की घटना का भी ज़िक्र था. स्थानीय सिनेमा हाल 'गणेश' टाकीज में कुछ हथियार बंद छात्रों ने वर्तमान नगर पालिका अध्यक्ष श्री लखन लाल पांडे के परिवार-जनों पर हमला किया. 'नगर व्यापारी संघ' के महामंत्री श्री लक्षपति लाल पांडे स्थानीय चिकित्सालय में भर्ती हैं. उनकी हालत स्थिर लेकिन ख़तरे के बाहर बतायी जाती है.

अंत में कुछ 'प्रतिष्ठित' नागरिकों द्वारा विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अशोक कुमार अग्निहोत्री तथा जिला पुलिस अधीक्षक श्री आर.आर. द्विवेदी से अपील की

गयी थी कि वे त्वरित कार्रवाई करें तथा शहर के शांतिप्रिय नागरिकों को बेहतर कानून और व्यवस्था प्रदान करें. इस रपट के संवाददाता का नाम था—राजीव शुक्ल.

अखबार के चौथे पृष्ठ पर, जिस पर शिक्षा, संस्कृति और मनोरंजन का 'मास्टहेड' लगा रहता था, वाइस चांसलर अग्निहोत्री की प्रशंसा में डॉ. चंद्रमणि उपाध्याय का एक लेख, उनके भाई प्रशांत अग्निहोत्री की कविता, उनके निजी सचिव एम.एल. सोनी का यात्रा संस्मरण तथा उनके एकाउंटेंट डॉ. अग्रवाल की 'भाषा और भूमंडलीकरण' शीर्षक टिप्पणी प्रकाशित थी.

लगता है आज इस अख़बार का चिरकुट संपादक 'आशियाना' के 'फेमिली केबिन नंबर दो' में शिवाज़ रीगल पी-पीकर धुत हो जाएगा और इतना खाएगा कि डकार तक नहीं निकलेगी.

शिट्! यह कैसा समय है? राहुल ने सोचा.

हिंदी-विभाग में शालिगराम, शैलेंद्र जॉर्ज और राहुल की स्थिति एक जैसी थी. तीनों लाइब्रेरी जाते और हिंदी साहित्य के सेक्शन में जाकर किताबों के लेखकों के नाम गिनते. किस जाति के कितने लेखक. पत्रिकाओं और जर्नल्स के हाल में जाकर उन पत्रिकाओं में छपने वाले लेखकों और संपादकों की जाति देखते. जिन लेखकों-कवियों को पुरस्कार दिया जाता, उनकी और निर्णायकों की जाति को वे अंडरलाइन करते. हिंदी से जुड़ी जितनी संस्थाएं, अकादेमियां आदि थीं उनके पदाधिकारियों-कर्मचारियों की सूची बनाते. अखबारों और टीवी न्यूज चैनलों के संवाददाओं, संपादकों, ब्यूरो चीफ और निर्माताओं के नामों पर गौर करते.

सारे संसार में ऐसा कहीं नहीं होगा कि किसी एक जाति समूह ने एक समूची भाषा का ऐसा अधिग्रहण किया हो.

'यह इस देश की भाषा, संस्कृति और साहित्य का टोटल सोलर एक्लिप्स है!...संपूर्ण सूर्य ग्रहण. खग्रास!!'

यह वाक्य किसी ने कहा नहीं था. लेकिन ऐसा ही अर्थ देने वाला कोई भी दूसरा या तीसरा, अलग तरह का, भिन्न शब्दों से बना हुआ वाक्य, उन तीनों शैलेंद्र जॉर्ज, शालिगराम और राहुल की चेतना में गूंजने लगा था.

राहुल की आर्थिक हालत बिगड़ रही थी. ट्यूशन का काम जैसे ही मिलता था, दो-चार दिनों में ही कोई न कोई वहां जाकर उसके बारे में ऐसी सूचना दे आता था, कि उसे मना कर दिया जाता था. मेस का बिल दो महीने से नहीं भरा जा सका था. टूथपेस्ट बहुत कम बचा था. आजकल वह कपड़े धोने के लिए ओ.पी. से साबुन मांग रहा था.

कल थर्सडे था. वही वृहस्पतिवार, जिसकी प्रतीक्षा में इतनी उथल-पुथल के बावजूद राहुल के हृदय की जैविक घड़ी हर पल धड़क रही थी. टिक्...टिक्...टिक...टिक्.

कैसे समय में उसके जीवन में आया है यह प्यार! उसके जीवन का यह पहला अनोखा, जादूभरा अनुभव! वह पीली तितली बार-बार इस समय के अंधेरे और कोहरे में खो जाती थी.

दो दिन पहले हेमंत बरुआ ने कैफेटेरिया में ट्रीट दिया था. वह आई.बी.एम. ज्वायन करने जा रहा था. उसने मैथमेटिक्स से एम.एस-सी. करने का इरादा छोड़ दिया था. 'क्या करूंगा? कौन-सा मुझे स्कॉलर या लेक्चरर बनना है?' वह बहुत खुश था. नौ लाख रुपये का सालाना पैकेज उसे मिलना था, तीन महीने की ट्रेनिंग के बाद.

'कैलिफोनिर्या से मैं ई-मेल भेजूंगा. ...रिप्लाई ज़रूर देना.' हेमंत की हमेशा मुस्कराती आंखों में उदासी थी. 'पता नहीं, अमरीकियों के पास चेस खेलने की

फुर्सत है कि नहीं.'

फिर उसने राहुल से अकेले में कहा था, 'राहुल! मेरी बात को सीरियसली ले. दस दिन बाद मैं चला जाऊंगा... तू इस गटर से निकल ले. मैंने शुरू से ही तुझे वार्न किया था. सारे डेटा दिये थे...इस हिंदी में न तुझे कोई जॉब मिलेगा न तू इसमें कोई ऑथर बनेगा...तू एक निओ-रोमेंटिक आइडियलिस्ट सिंपलटन है... राजकपूर और गुरुदत्त की जेनरेशन का बचा हुआ सेंटीमेंटल जोकर...'

इसके बाद हेमंत ने कुछ देर की चुप्पी के बाद कहा था, '...तुझे बुरा लगेगा. सोचता हूं, कहूं कि नहीं!...बट आयम योर फ्रेंड एंड रियली लव यू! ...सुन, सच्चाई ये है कि जिस लड़की के चक्कर में तू अपनी ज़िंदगी के साथ गैंबलिंग कर रहा है, ...वो लड़की भी तुझे नहीं मिलेगी. ...यू विल रिमेन अ लूज़र...! मुझसे लिख के ले ले. जब चुनने का टाइम आएगा, तो वह तुझे नहीं, अपनी कास्ट को ही चुनेगी. यहां से निकल ले राहुल! तू उनका टारगेट बन चुका है यार!' हेमंत का गला भर आया था. उसकी आंखों में आंसू थे.

उस रात राहुल की आंखों में नींद नहीं थी. ओ.पी. सो चुका था. टैगोर हॉस्टल के कमरा नंबर 252 में जिस खिड़की पर पहले माधुरी दीक्षित रहती थी, गुलेल की बंटी से चोट खाई अपनी कटावदार, मांसल और उत्पीड़ित पीठ के साथ, किसी सनकी, मस्त और मूर्ख हिरणी की आंखों से, गर्दन मोड़कर राहुल की ओर निहारती हुई...

और जिस खिड़की पर पिछले कई महीनों से एक पीले रंग का धब्बा बसने लगा था, जो तलहटी की अर्द्धवृत्ताकार सड़क पर रेंगते हुए पहले एक नन्हीं-सी, धीरे-धीरे उड़ती हुई तितली और फिर कुछ ही देर में एक पीली छतरी में बदल जाता था, उस खिड़की के पार इस समय सिर्फ अंधेरा था. और सन्नाटा. एक डरावना, तनावग्रस्त, निराशा से भरा, पराजित अंधेरा.

बहुत दूर, कहीं इक्का-दुक्के तारे टिमकते हुए उस अंधेरे में से निकलने की कोशिश में दिखते थे. झींगुरों के उदास और खिन्न गिटार की आवाज़ में किसी बेचैन पक्षी के गले से निकला कोई उनींदा-सा स्वर बीच-बीच में करवट लेता था.

राहुल एक गहरे द्वंद्व से भरी यंत्रणा से गुज़र रहा था. मेरी चेतना बदल क्यों नहीं जाती? मेरा दिल क्यों इतनी तकलीफ दे रहा है? किसी कोबरे की तरह बार-बार यह मुझे डंस क्यों रहा है?

इसे बेडौल और ऊबड़-खाबड़ समय के इस पत्थर के भीतर, अतीत में, वर्षों पहले, फॉसिल बन चुकी किसी चीज़ को मैं फिर से ज़िंदा पा जाने की इस असंभव, मूर्ख और लहूलुहान कोशिश में क्यों लगा हूं? मैं स्वयं ही अपनी नियति को इस तरह क्यों बिगाड़ रहा हूं?

वह उठा. उसने टेबिल-लैंप का शेड अपनी ओर घुमाया और पंद्रह वाट की मद्धिम रोशनी में 'राम की शक्ति पूजा' के पन्ने खोले:

'धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका!
वह एक और मन रहा राम का जो न थका...

जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय...!'

राहुल की आंखें भीग गयीं. उसने पन्ने पलटे.

'...रावण, रावण, लंपट, खल, कल्मष-गताचार...'

डबडबाई हुई आंखों ने उसकी दृष्टि को धुंधला कर दिया. जिसने इन पंक्तियों को लिखा होगा, वह क्यों विक्षिप्त हुआ... इसका आभास राहुल को अब हो रहा था.

यह उसका जीवन ही था, जो इन कविताओं को पढ़ रहा था और किसी धीमे विस्फोट के साथ हर शब्द के अर्थ खोल रहा था...!

मैं नहीं जानता, मेरे भीतर तुम्हारे लिए प्यार है या नफ़रत, मिस जोशी! लेकिन मैं सुबह तुम्हारा इंतज़ार करूंगा.

प्लीज़, डू कम.

रा हुल ने ओ.पी. को सब कुछ बता दिया था. ओ.पी. इतना खुश था, जैसे राहुल से मिलने अंजली नहीं, उसकी कल्पनाओं में रहने वाली वह चिर प्रतीक्षित ठिगनी सांवली लड़की उससे मिलने आ रही हो.

'मैं बाहर से ताला लगाकर चला जाऊंगा. साढ़े चार बजे लौटूंगा. फिक्र मत करना, यार!' उस छह फुट तीन इंच लंबे शुतुर्मुर्ग ने अपनी ऊंट जैसी गर्दन को बड़े प्यारे ढंग से लहराते हुए कहा था.

और वह 'पैकेट' भी तो यह ऊंट ही खरीद कर लाया था, अपने पैसे से, जिसे खरीदने के लिए राहुल पिछले छह दिनों से 'केमिस्ट' की दुकान के सामने जेब में हाथ डाले देर-देर तक खड़ा रहता था और शर्म के मारे वापस लौट आता था.

राहुल ओ.पी. की गर्दन से झूल गया और लिपट कर बोला, 'मेरे प्यारे कंकाल, मेरी समझ में नहीं आता कि मैं तुझसे ज़्यादा प्यार करता हूं या उससे!'

'मोगांबो खुश हुआ. हह...हह...हह.' ऊंट भलभलाया.

अंजली को पद्मश्री तिवारी की विद्यापति वाली क्लास के खत्म होते ही डिपार्टमेंट से फूट लेना था. राहुल को आज डिपार्टमेंट जाना ही नहीं था. प्ले ग्राउंड को घेरने वाली सड़क से चलते हुए, स्पोर्ट्स स्टोर रूम के पीछे दोनों चट्टानों के बीच से, झाड़ियों में से निकलते हुए, अंजली को बहुत सतर्कता के साथ, छुप-छुपकर, उस पहाड़ी पर चढ़ना था.

टैगोर हॉस्टल के पीछे के दरवाज़े को, जो हमेशा बंद रहता था, ओ.पी. को खोलना था. पीछे की सीढ़ियों से, दूसरी मंजिल में पहुंचकर, गलियारे की साइड वाल की आड़ लेते हुए, उन्हें रूम नं. 252 तक आना था. उतनी देर, वैसे तो सारे स्टूडेंट्स क्लास चले जाते हैं और उनके कमरों में ताला बंद रहता है लेकिन अगर धोखे से कहीं कोई लड़का दिख जाए, तो अंजली को बिल्कुल बिना घबराये, बोल्डली, पूरे आत्मविश्वास के साथ, बेफिक्री का अभिनय करना था. क्योंकि ओ. पी. को उन्हें देख लेने वालों से उसे अपनी 'सिस्टर' बताना था.

पद्मश्री राजेंद्र तिवारी की क्लास साढ़े ग्यारह बजे खत्म होनी थी. इस लिहाज

से बारह बजे तक अंजली को यहां पहुंच जाना था.

राहुल को एक तेज उत्कंठा ने घेर रखा था. उसके भीतर कोई लट्टू घूम रहा था. या कोई जंपिंग डॉग बार-बार छलांग मार रहा था. क्योंकि उसकी चाभी ही नहीं खत्म होने को आ रही थी.

राहुल का दिल ज़ोरों से धड़क रहा था. ठीक उतनी ही तेजी के साथ, जितनी तब, जब राहुल अपनी खिड़की से तलहटी पर धीरे-धीरे रेंगती उस पीली छतरी को देखा करता था.

उसके अपने ही कान इस समय भी, उसके अपने ही हृदय की धड़कनों को साफ-साफ सुन रहे थे.

धक्....धक्. धक...धक्.

हालांकि उस हृदय में अंजली के लिए क्या था, प्यार या घृणा? वह स्वयं नहीं जानता था.

और ठीक बारह बजकर पांच मिनट पर वह आ गयी. उसका चेहरा धूप और थकान से झुलस कर तांबई हो चुका था. उसकी सांसें बढ़ी हुई थीं. वह हांफ रही थी.

ओ.पी. ने थर्मस में चाय भर दी थी और बिस्किट का पैकेट रख दिया था. बिना देर किये उसने मेज पर रखा ताला उठाया, जाते-जाते एकबार राहुल को देखकर मुस्कराया और दरवाज़ा बाहर से बंद कर दिया.

बाहर से कुंडी बंद करने और ताला लगाने की आवाज़ आयी. इसके बाद ओ.पी. के दूर जाते कदमों की आवाज.

जाते हुए वह प्यारा-सा ऊंट भयानक बेसुरे गले से गा रहा था...

'दिल दीवाना....बिन सजना के माने ना...
ये तो पगला है....समझाने से...'

राहुल ने अंजली को देखा. वह राहुल के कमरे को बड़ी उत्सुकता के साथ देख रही थी.

'तो मिस जोशी, आप आ ही गयीं...लास्टली.' राहुल ने कहा.

अंजली ने अपना बैग मेज पर रखा और ओ.पी. के बेड पर बैठ गयी.

'बाप रे!...कितना मुश्किल रास्ता था...! मैं तो गिरती-पड़ती आयी.' अंजली के चेहरे पर अपनी सफलता की मुस्कान थी. उसने अपनी सैंडिल पैरों से अलग की.

'टूट गयी. देखो.' उसके पैर धूल में सने थे.

फिर उसने अपनी कुहनी घुमाई.

राहुल के भीतर एक पीड़ा-सी कौंध गयी. अंजली की कुहनी छिल गयी थी.

उसमें से खून छल-छला रहा था.

'डिटॉल देना.' अंजली ने इस तरह कहा जैसे यह कमरा उसका अपना ही घर हो और उसे पता हो कि आलमारी के बीच वाले खाने में, दाहिनी ओर डिटॉल की शीशी रखी है.

डिटॉल लेकिन नहीं था. राहुल ने आफ्टर शेव का स्प्रे उठाया, अंजली की बांह पकड़ी और कुहनी पर फुहार छोड़ दी... छू...ऽ.

अंजली ने दांत भींच लिए. ताजा छिले घाव पर आफ्टर-शेव की जलन से उसे तेज दर्द हुआ होगा.

राहुल ने उसका चेहरा देखा. उसके बाल बिखर गये थे. वह थक चुकी थी. पैर के अंगूठे में हल्की-सी खरोंच थी. कुहनी छिल चुकी थी. लेकिन कितनी अबोधता उसके चेहरे में थी. एक ऐसी निश्चिंतता जो किसी दुर्गम, अजनबी और भटकाव भरी यात्रा के बाद अंततः अपना घर पा लेने पर होती है.

'छतरी कहां है?' राहुल ने चौंक कर पूछा.

'मैं उसी झाड़ी में छुपा आयी...'

'किसी ने उसे वहां देख लिया तो?' राहुल को थोड़ी-सी फिक्र हुई.

'कोई नहीं देखेगा.' अंजली निश्चिंत थी.

'क्यों?'

'क्यों का क्या मतलब? मैंने कह दिया न. कोई नहीं देखेगा.' अंजली ने कहा. राहुल के भीतर हँसी की नन्हीं-नन्हीं घंटियां बजीं. बिल्कुल वैसी ही है. उसने अंजली की हथेली को अपने दाहिने हाथ में भर लिया. और बस. चुंबक और बिजली की वह आंधी उठने लगी. उसकी अपनी देह के भीतर. वे दोनों उसमें अभी उड़ने लगेंगे.

राहुल ने अंजली की आंखों को, फिर माथे को चूमा.

वह आंधी अब एक चक्रवात में बदलने लगी थी. वे दोनों एक-दूसरे के चेहरे में अपने-अपने होंठों से कुछ खोज रहे थे.

'यह ओ.पी. का बेड है.' राहुल की सांसें बढ़ गयीं थी.

'धत्त!' अंजली ने कहा. वह उठकर खड़ी हो गयी. राहुल ने उसे अपने बिस्तर पर गिरा लिया.

'यही वो खिड़की है, जहां से तुम...?' अंजली ने पूछा.

'हां! तुम्हारी पीली छतरी इसी में रेंगती है...' राहुल ने उसे ढंक लिया.

आश्चर्य यह था कि बाहर की दुनिया में, खुले आकाश के नीचे, युनिवर्सिटी कैंपस में, उन्होंने कभी ऐसी स्वतंत्रता महसूस नहीं की थी. क्या बाहर की दुनिया इस छोटे से कमरे में ज़्यादा संकरी है, जिसका दरवाज़ा बाहर से बंद है और जिस पर ताला लगा है?

अंजली ने अपनी आंखें राहुल के चेहरे पर गड़ाईं, अपनी हथेलियां उसकी गर्दन में फंसाईं और ऊपर उठकर उसे चूम लिया.

और ठीक इसी पल राहुल की चेतना में हेमंत का वाक्य गूंजने लगा.

तो क्या मैं वास्तव में एक सेंटीमेंटल जोकर हूं...मुझे कुछ नहीं मिलना. आयम आल्वेज अ लूज़र... जब फैसले का वक्त आयेगा, मुझमें और अपनी जाति में से किसी एक को चुनने का सवाल, तो ये लड़की अपनी जाति को चुनेगी. ये 'पॉवर' को चुनेगी. मुझे नहीं!

क्योंकि यह इस भ्रष्ट सरकार के एक ब्राह्मण मंत्री एल.के. जोशी की बेटी है. वही जाति, जिसकी अनैतिक सत्ता मेरे और मेरे जैसे करोड़ों लोगों के लिए किसी अभिशाप की तरह है. वही 'क्रिटर्स' जिन्होंने शताब्दियों से अन्याय, अतिचार, भ्रष्ट आचरण और भोगवाद का अश्लील नरक यहां पैदा कर रखा है. उसी रावण की संततियां, जिसने सीता का अपहरण करके राम का समूचा निर्वासित जीवन तबाह कर डाला था.

राहुल के आगे आचार्य एस.एन. मिश्रा और बलराम पांडे की घूरती हुई वे डरावनी आंखें टंग गयीं, जिनकी नाक के नीचे एक काली तितली बैठी हुई थी. फ्यूहरर की मूंछ. वह भय, जिसने उसे उस रात सोने नहीं दिया था

मेरे जैसे करोड़ों लोगों को मामूली खर पतवारों की तरह चुटकियों में उखाड़ फेंकने वाले षड्यंत्रकारी शाश्वत मक्कार.

राहुल की बाहों में मछलियां फड़कने लगीं. उसकी देह की शिराओं में बहने वाली लाल नदी में अभी-अभी, कुछ पल पहले तक, जो एक संगीत सा कुछ बज रहा था और जहां दो नन्हीं-नन्हीं चमकीली मछलियां तैर रहीं थी, वहां कोई चक्रवात सा पैदा होने लगा.

उसने हाथ बढ़ाकर अंजली के शर्ट के बटन झटके में खोलने शुरू कर दिये.

'वेट...वेट! क्या कर रहे हो, राहुल?' अंजली ने उसकी कलाई पकड़नी चाही. यह एक कमजोर-सा प्रतिरोध था. अंजली की शर्ट के सारे बटन खुल चुके थे. राहुल के पंजे सख्त थे.

'राहुल!' अंजली की टूटती-बिखरती-सी आवाज़ आयी. 'क्या कर रहे हो...! प्लीज! व्हाइ आर यू इन हरी...?'

'क्योंकि मैं राहुल नहीं हूं! मैं एक तेंदुआ हूं. अ पैंथर.' राहुल के हाथ उसकी जींस की जिप को खोल चुके थे.

तेंदुए ने पूरे बनैलेपन के साथ अपने शिकार पर हमला कर दिया था. अंजली ने विरोध छोड़ दिया था. वह किसी चौंकी हुई हिरणी की आंखों से अपने ऊपर लदे जानवर को देख रही थी.

'लड़कियां हिंसा पसंद करती हैं न?...उन्हें शाहरुख खान चाहिए... है न? वो 'डर' वाला शाहरुख खान.' या वो सलमान खान, जो हिरण खाता है. ब्लैक बक?

राहुल के भीतर तेज आंधी और किसी हिंस्र बनैले पशु की उत्तेजना एक साथ जाग उठी थी.

और अब वह पूरी ताकत के साथ, दबी-कुचली जातियों की समूची प्रतिहिंसा के साथ, शताब्दियों से उनके प्रति हुए अन्याय का बदला ले रहा था. थप्प्...थप्प्!

उसका हर आघात एक प्रतिशोध था. उसकी हर हरकत एक बदले की कार्रवाई थी.

अंजली की आंखें अधमुंदी हो गयीं थीं. उसका मुंह खुल गया था. उसका चेहरा अंगारों की तरह दहक रहा था.

आश्चर्य यह था कि जितनी गहरी प्रतिहिंसा की तीव्रता के साथ राहुल पराभूत जातियों की तरफ से प्रत्याघात करता, वह देखता कि अंजली की आंखें किसी तृप्ति के सुख में मुंद-सी गयी हैं और उसके होंठों पर एक हल्की-सी स्मित की रेखा खिंच गई है...! 'आह! आह!'

राहुल की स्मृति में वह फिल्म, नहीं...कोएट्जी के उपन्यास *'एक देश के हृदय में'* का वह अंश कौंध गया, जिसमें एक नीग्रो लड़का अपने गोरे मालिकों की हत्या के बाद उनकी बेटी से बलात्कार करते हुए, शताब्दियों से गुलाम बना डाली गयी, दमित और पराभूत अश्वेत जाति का बदला लेता है. लेकिन उसका प्रतिशोध उस लड़की के लिए मज़े और सुख का साधन बन जाता है.

इसका मतलब, कहीं इसे भी तो...?

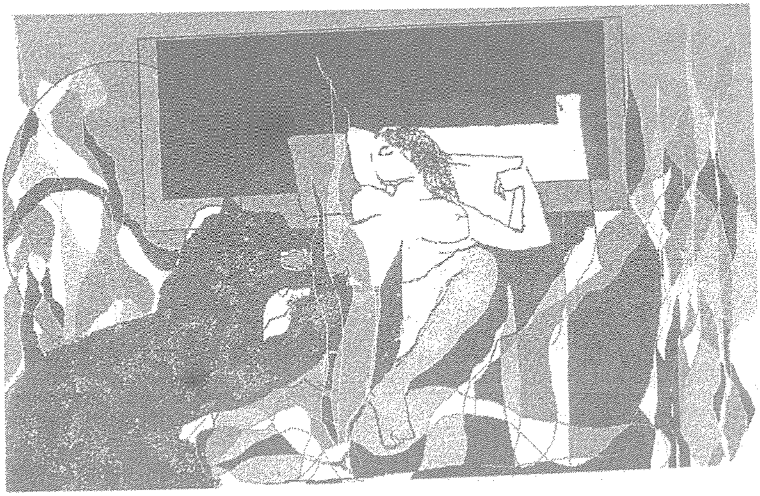

इसके जैविक गुण-सूत्रों में तो वैसे भी महाभोगियों और कामुक आनंदवादियों की आनुवांशिकता है. इसके डी.एन.ए. में 'हेडोनिज़्म' मौजूद है...कहीं यह इतनी दूर, पहाड़ी चढ़कर, पत्थरों पर गिरती-पड़ती, कंटीली झाड़ियों के बीच से निकलकर, इस कमरे तक सिर्फ मज़ा और सुख और 'किक' लेने तो नहीं आयी?

राहुल को एक अजीब-सी हीनता ने घेरा. क्या मैं उसके लिए सिर्फ एक मज़ा देने वाला खिलौना भर हूं? कोई सेक्स टॉय? एक 'डिल्डो'?

राहुल की समझ में कुछ नहीं आ रहा था. तेंदुए ने अपनी समूची ताकत अपने शरीर में इकट्ठी करके एक बार फिर से आक्रमण किया.

'यू आर अ रियल पागल!' अंजली ने बाद में कहा. 'तुमने कहा था कि मैंने 'अरेंज' कर लिया है. अब कहीं कुछ हो गया तो?' वह राहुल को जिस तरह देख रही थी, राहुल के लिए वह एक बिल्कुल नयी अनुभूति थी. इसके पहले कभी भी अंजली की आंख में इतनी निकटता, इतना निश्छल, इतना गहरा ऐंद्रिक अपनापन नहीं था.

तभी राहुल की निगाह बेडशीट पर पड़ी. उसमें अंजली का रक्त था. ढेर सारा. राहुल ने अंजली को देखा और उसकी सारी इंद्रियां स्तब्ध रह गयीं. उसके मस्तिष्क ने सोचना छोड़ दिया. यह एक तेज झटका था.

अंजली एक गहरी वत्सलता, अपनेपन, कृतज्ञता और प्यार के साथ उसे एकटक देख रही थी. उसकी आंखों में किसी अज्ञात नक्षत्र की टिमटिमाहट और सजलता थी.

छिली हुई कुहनी, चोट खाये हुए पैर, टूटी हुई सैंडिल, चादर पर सना हुआ खून, इतनी देर तक चलने वाली हिंसा, बाहों और छाती पर नाखून की खरोचों के निशान... इस सबको चुपचाप उसने सह लिया था और एकटक, एक निश्शब्द गहरी करुणा, ऐंद्रिकता और ममता के साथ वह उसे देख रही थी.

ये आंखें कितनी निर्दोष, कितनी अबोध, किसी नन्हीं-सी बच्ची की पवित्र आंखें थीं. समय की कोई भी धूल, कालिख या कलुष उनमें नहीं था. वे कोंपलों की तरह नवजात और अक्षत थीं.

राहुल ने अंजली की गोद में सिर रख दिया. उसके भीतर ग्लानि और पश्चाताप का एक ऐसा बांध टूटा कि वह अपने आपको संभाल नहीं सका.

अंजली की गोद में राहुल का सिर था और वह किसी बच्चे की तरह फूट-फूटकर रो रहा था. अंजली उसके माथे को बार-बार चूम रही थी. वह उसके सिर को अपनी बांहों में समेटकर उसे चुप कराने की कोशिश कर रही थी.

उसने अभी तक कपड़े नहीं पहने थे. उसकी जंघाएं, पेट और स्तन राहुल के आंसुओं में गीले हो चुके थे.

आंसुओं की बूंदें बेडशीट पर फैले रक्त और वीर्य के धब्बे के साथ घुल

रहीं थी.

'क्या कर रहे हो? चुप...चुप्प! कोई सुन लेगा.' अंजली की समझ में कुछ नहीं आ रहा था. वह बार-बार कह रही थी. 'यू आर अ जोकर! जॉनी जोकर...! मेरे असली पागल...!'

आखिर उसने अपनी समझ से राहुल के रोने का अंदाजा लगाया और उसके माथे को चूमती हुई बोली:

'लिसेन!... मैं सच में तुमसे बहुत प्यार करती हूं! और अब हमें कोई अलग नहीं कर सकता! प्रोमिज़!...अब चुप हो जाओ.'

'चोऽऽप!' अंजली ने जोरों से डांटकर कहा. बिना इसकी परवाह किये कि उसकी आवाज़ एक लड़की की आवाज है, जो आज तक इस हॉस्टल में किसी लड़के के कमरे में कभी सुनी नहीं गयी. और यह आवाज़ यहां से बाहर तक भी जा सकती है.

राहुल डर गया. उसने अंजली को चूमा और हँस पड़ा.

ग्लानि, पछतावे और आंसुओं में लिथड़े लाचार चेहरे की हँसी.

उस वृहस्पतिवार को चार बजे के पहले तक अंजली और राहुल ने दो बार और जो कुछ किया, उसमें किसी बेचैन समुद्र में तैरती दो मछलियों की नन्हीं-नन्हीं देह में एक-दूसरे के आर-पार हो जाने की व्याकुलता और छटपटाहट ही थी.

एक पवित्र, आदिम, शाश्वत, चिरंतन, प्राकृतिक छटपटाहट.

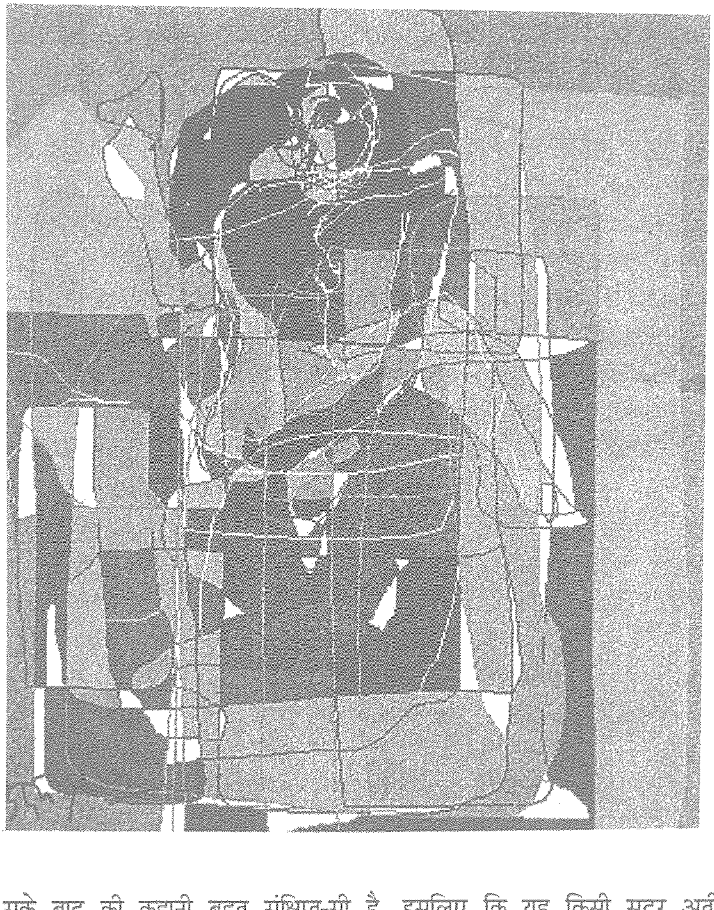

इसके बाद की कहानी बहुत संक्षिप्त-सी है. इसलिए कि यह किसी सुदूर अतीत में घट चुकी घटना का इति-वृत्तांत नहीं है. यह उस आख्यान का मात्र एक अंश है, जिसकी घटनाएं अभी, आज तक घटती चली जा रही हैं. यह एक बनती जाती, निर्मित होती, रची जाती कहानी, या अभी, इस पल तक जिये जाते जीवन का ठीक इस पल के पहले तक का बयान है.

एक असमाप्त आख्यान का एक अनिर्णीत टुकड़ा. इसी समय और उसमें जिये जाते किसी जीवन का एक साधारण-सा ब्यौरा.

आने वाले एक महीने में अंजली तीन बार राहुल के कमरे में और आयी. उसी तरह गिरती-पड़ती. सबसे छुपकर. कंटीली झाड़ियों से भरी पथरीली पहाड़ी को चढ़ती हुई. देह पर खरोंचों, टूटी हुई सैंडिल, फटे कपड़ों, थकान और धूप में झुलसे चेहरे और चढ़ी हुई, हांफती सांसों के साथ.

यह उस अंजली जोशी की हालत थी, जो एक मिनिस्टर, अरबपति बिल्डर और जाति से ब्राह्मण एल.के. जोशी की बेटी थी.

क्या यह मुंबइया फिल्म की घिसी-पिटी पटकथा के भीतर घटती घटना थी? अमीर और गरीब के बीच प्यार की पॉपुलर त्रासदी का छठे दशक का रोमेंटिक फार्मूला?

उसी महीने, एक रात, लगभग बारह बजे पुलिस ने हॉस्टल पर छापा मारा. छह-सात कमरों की तलाशी ली गयी. कार्तिकेय काजले, मसूद, प्रवीण, मधुसूदन, डी. गोपाल राजुलु और अखिलेश रंजन को वह अपने साथ ले गयी. राहुल के कमरे में रेड नहीं हुआ, यह एक संयोग ही था. प्रताप परिहार अपने मामा के पुलिस में होने से शायद बच गया था.

दो दिन के बाद प्रवीण, गोपाल राजुलु और मधुसूदन लौट आये. उन्हें मार पीट कर पुलिस ने छोड़ दिया था. लेकिन कार्तिकेय, मसूद और अखिलेश रंजन को गिरफ्तार कर लिया गया.

लोकल अखबार 'जनवाणी' के पहले पृष्ठ पर मोटी सुर्खियों में समाचार छपा, *'छात्रावास में हथियारों और नशीले पदार्थों का जखीरा बरामद : तीन छात्र गिरफ्तार.'* प्रवीण ने बतलाया कि कार्तिकेय को पहले पुलिस ने और फिर लच्छू गुरू ने थाने के भीतर बहुत बुरी तरह मारा. मसूद के घुटने तोड़ दिये गये. पुलिस ने उनके कमरों से झूठी बरामदगी दिखाई है. कट्टे तो प्रताप के कमरे में रखे थे, जिसकी पुलिस ने तलाशी ही नहीं ली थी.

मधुसूदन ने बताया कि कार्तिकेय रो रहा था. वह सिविल की तैयारी कर रहा था. उसका पूरा कैरियर खत्म हो गया. इस सबके पीछे म्युनिसपैलिटी के अध्यक्ष लक्खू भइया और मिनिस्टर जोशी का हाथ है. वीसी की इजाजत के बाद ही पुलिस हॉस्टल में घुसी थी. उनको रिमांड में ले लिया गया है और नारकोटिक्स के व्यापार, अवैध हथियार रखने के अलावा आतंकवाद निरोधक दफाओं के तहत उन पर जुर्म कायम होगा.

उस दिन एक अंग्रेजी के अखबार के मुखपृष्ठ पर दिल्ली के सुप्रीम कोर्ट के सामने पुलिस द्वारा तंग किये जा रहे एक नौजवान सिख का फोटोग्राफ छपा था. उसने अपने ऊपर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा ली थी. उस फोटोग्राफ में, लपटों

में घिरा हुआ वह, दोनों हाथ उठाए जल रहा था. आसपास दर्शकों की छोटी-सी भीड़ थी. पृष्ठभूमि में देश के सर्वोच्च न्यायालय की इमारत थी.

उसी दिन हिंदी डिपार्टमेंट में एक सेमिनार आयोजित था. पहले सत्र का विषय था, 'समकालीन कविता में रीतिकाल की प्रासंगिकता' और दूसरे सत्र का विषय था, 'साहित्य की स्वायत्तता का प्रश्न.' सेमिनार में भाग लेने दिल्ली से डॉ. हरिहर द्विवेदी, डॉ. सोहन लाल चतुर्वेदी, डॉ. मरुधर पांडे, प्रो. अजायब अग्रवाल और श्री के.एल. वाजपेयी आ रहे थे. इसके अलावा दिल्ली, भोपाल, पटना और लखनऊ जैसी राजधानियों से लगभग एक दर्जन कवि आये थे, जिनमें एकाध को छोड़कर सभी के नामों के अंत में शुक्ल, तिवारी, द्विवेदी, पांडे, जोशी, आल-वाल, शर्मा वगैरह जाति सूचक सरनेम थे.

ए.सी. का किराया. टी.ए./डी.ए. और पांच-सात हजार ऊपर से 'पत्रम-पुष्पम.' सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग ने यह आयोजन किया था, जिसमें लगभग पांच लाख रुपये खर्च हुए थे.

सेमिनार के निमंत्रण पत्र, ब्रोश्योर और सोवेनीर 'जनवाणी' प्रिंटिंग प्रेस में ही छपे थे.

ज ब चौथी बार अंजली टैगोर हास्टल के रूम नंबर 252 में आयी और ओ.पी. चार बजे तक के लिए बाहर से ताला लगाकर अपनी खास ऊंटों वाली स्टाइल में गाता हुआ चला गया और जब राहुल ने उसकी हथेली को अपनी हथेली में भरकर उंगलियां फसाईं और जब बिजली और चुंबक की एक तेज आंधी दोनों के शरीर के भीतर पैदा हुई और जब वह किसी बवंडर, चक्रवात या किसी बेचैन समुद्र की उत्ताल, पछाड़ मारती लहरों में तब्दील हो गयी, जिसमें वे दोनों अपने-अपने कपड़े उतारकर एक-दूसरे के भीतर आर-पार होने की कोशिश में एक-दूसरे से टकराती दो नन्हीं-नन्हीं मछलियों की तरह तैरने लगे...

तभी एक खट् की आवाज हुई. राहुल और अंजली दोनों ने चौंककर ऊपर देखा.

कमरे के वेंटिलेशन में दो चेहरे लटके हुए थे.

उनमें से एक चेहरा हॉस्टल के वार्डेन चंद्रमणि उपाध्याय के नौकर का था और दूसरा था गोपाल द्विवेदी का सिर.

वही गोपाल द्विवेदी, जिसने राहुल का एडमीशन आचार्य एस.एन. मिश्रा से कहकर हिंदी विभाग में करवाया था. 'भ्राता समान'. राहुल सिहर गया. ये वही आंखें थीं. उनकी नाक के नीचे बीसवीं सदी के चौथे-पांचवे दशक की एक प्रसिद्ध काली तितली बैठी हुई थी. डरावनी. किसी अपशगुन की तरह.

दोनों ने बेडशीट को ओढ़ लिया.

दोनों चेहरे वेंटिलेशन से गायब हो चुके थे.

समस्या यह थी कि कुछ किया नहीं जा सकता था. दरवाज़ा बाहर से बंद था. ओ.पी. ताला लगाकर चार बजे तक के लिए जा चुका था.

लगभग ढाई बजे के आसपास बाहर कई लोगों के चलने की आहट आने लगी. तेज़ चलते हुए जूतों की करीब आती आवाजें. दरवाज़े पर आकर वे रुक गयीं. चाभी घुमाने, ताला खुलने और कुंडी सरकाने की आवाज़ आयी.

और दरवाज़ा खुला.

छह फुट तीन इंच लंबा कंकाल बाहर खड़ा था. उसका चेहरा ज़र्द था.

उसकी बगुले जैसी लंबी गर्दन, किसी डर में जड़ होकर तन गयी थी. उसके होंठ कांप रहे थे. उसके साथ चार-पांच लोग और थे. वार्डेन डॉ. चंद्रमणि उपाध्याय, अंजली के भाई डी.के. जोशी और तीन अजनबी, भारी भरकम, सपाट चेहरे के लोग.

'चलो...' किसी ठंडे लोहे की तरह यह सपाट वाक्य अंजली के लिए उसके भाई ने बोला था.

अंजली मेज पर रखा अपना बैग उठाकर चुपचाप निकल गयी. राहुल कमरे के बीचों-बीच खड़ा था.

अंजली को लेकर बाकी लोग चले गये. दरवाज़े पर ओ.पी. के साथ रह गया सिर्फ उसका भाई डी.के. जोशी. उसने राहुल को ठंडी लेकिन भीतर तक भेदती हुई आंखों से देखा और कहाः

'मैं कोई 'सीन' यहां नहीं 'क्रिएट' करना चाहता...हमारी इज्जत का सवाल है...लेकिन तुम समझदारी से काम लो...मुंह बंद रखो. अगर कुछ भी एंड-बेंड किया तो स्साले तेरी लाश आयेगी, सिटी हॉस्पिटल में...उसी जगह पोस्टमार्टम के लिए, जहां उस बैंचो 'मंकी' की बॉडी पड़ी हुई थी.'

इतना कहकर वह मुड़ा और जाने लगा.

पांच-सात कदम चलने के बाद वह रुका और घूमकर बोला, 'दिमाग में घुस गयी न मेरी बात? अकल से काम लेना.' और चला गया.

ओ.पी. बहुत गंभीर और डरी हुई आंखों से राहुल को देख रहा था.

अब तो इस असमाप्त कथा का वही अंश बाकी है, जिसका विवरण किसी तरह दिया जा सकता है.

यह एक ट्रेन है. राजधानी एक्सप्रेस. ट्रेन संख्या 2002.

कंपार्टमेंट नं. एस-8 के बर्थ नंबर 41-42 पर अंजली जोशी और राहुल हैं. यह रात है और घड़ी में ग्यारह बजकर तेईस मिनट हुए हैं. शताब्दी एक्सप्रेस बहुत तेज़ रफ़्तार से भाग रही है.

अंजली और राहुल की आंखों में नींद नहीं है. वे जागे हुए हैं और एक-दूसरे को देख रहे हैं. लगता है कि वे इसीलिए जाग रहे हैं क्योंकि उन्हें एक-दूसरे को देखते रहना है.

आज अंजली का जन्म दिन है. वह मकर राशि की है. केप्रिकोर्नियन.

आभा, अणिमा, शर्मिष्ठा, नीरा दीदी, परवेज़, प्रताप, शैलेंद्र जॉर्ज, शालिगराम, सीमा फिलिप, चंद्रा...सभी इस षड्यंत्र में शामिल थे, जिसके चलते अपने घर में महीने भर से नज़र-बंद अंजली को जन्मदिन पर फिल्म देखने के बहाने निकलने का मौका मिला और इंटरवेल के बाद आठ बजकर तीस मिनट पर, शॉल के भीतर अपना चेहरा छुपाए वह स्टेशन पहुंची. न वह अकेली थी, न पहले से वहां मौजूद राहुल अकेला था. षड्यंत्रकारी दोस्तों की पूरी टीम वहां उनके आस-पास मौजूद थी, जिसमें वह छह फुटा शुतुर्मुर्ग भी था.

किसी के भी चेहरे पर कोई डर नहीं था. उसमें खुशी, होशियारी, संकल्प मजबूती और एक तरह की झिलमिल सहानुभूति थी.

ट्रेन ने जब प्लेटफार्म छोड़ा तो वे सभी हाथ हिला-हिलाकर विदा में हँस रहे थे और उछल रहे थे.

राहुल और अंजली दूर तक उन्हें देखते हुए दरवाज़े पर खड़े रहे.

राहुल उस बगुले जैसी सबसे ऊंची गर्दन पर रखे हिलते हुए मुस्कराते सिर को तब तक देखता रहा जब तक कृतज्ञता और विह्वलता के आंसुओं ने उसकी आंखों के सामने पानी की दीवार नहीं खड़ी कर दी.

यह एक अनिश्चित लेकिन उम्मीदों और उमंगों से भरी यात्रा थी.

राहुल और अंजली की आंखें एक-दूसरे को अपलक, नक्षत्रों की टकटकी की तरह देखे जा रही थीं लगातार.

घड़ी में दो बजने को तीन मिनट बाकी थे, जब ट्रेन में ब्रेक लगने की चीखती हुई आवाज़ हुई. कुछ दूर तक घिसटने के बाद ट्रेन रुक गई.

यह कोई अनजान-सी जगह थी. अंधकार में डूबी हुई. शायद किसी ने जंजीर खींची होगी या किसी वजह से 'स्टॉप' का लाल सिग्नल ड्राइवर को मिला होगा.

अचानक एक शोर-सा हुआ. दरवाज़ा पीटने, फिर खुलने की आवाज़ हुई. दस-बारह लोग कंपार्टमेंट नंबर एस-8 में दाखिल हो गये. हथियार बंद. उनके चेहरे सपाट थे. उनमें से दो ने आकर अंजली को पकड़ लिया. एक ने झटके से उसके ऊपर काला-सा कंबल डाला और उसे गठरी की तरह उठाकर देखते-देखते ले गये.

राहुल पर कई एक साथ टूट पड़े.

किसी ने मेन स्विच का तार खींच दिया था. पूरा डिब्बा अंधेरे में डूब गया था.

राहुल को तीन-चार लोगों ने दबोच रखा था. वह छटपटा रहा था. इसका मतलब कहीं से यह खबर लीक हो गयी थी.

अब सब कुछ ख़त्म था?

राहुल ने देखा कि उस अंधेरे में उनमें से एक आदमी टिन की एक बड़ी-सी तगाड़ी लेकर आया और उसे फर्श पर रख दिया. फिर उसमें लकड़ियां डाली गयीं. उसमें घी जैसी कोई चीज़ उड़ेली गयी और फिर माचिस से उसे जला दिया गया. आग की लपटें उठने लगीं.

एक काला, माथे पर तिलक लगाए, काली तितली की मूंछ वाला वनमानुस उस लपट की रोशनी में कौंधाः

'ओम् भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम्!

ओम् भूः स्वाहा, इदं वायवे न मम्.

ओ भूः स्वाहा, इदं ब्राह्मणे न मम्!'

वह डरावना गोरिल्ला मंत्र पढ़ रहा था और आग में कुछ झोंक रहा था, जिससे लपटें और भी बढ़ने लगती थीं.

वे सब लोग उस जलती हुई अग्नि के चारों ओर एक घेरे में बैठ गये थे. उन्होंने बंदूकें, छुरे, तलवार और लाठियां नीचे रख दी थीं और पता नहीं कहां से सबके हाथों में एक-एक किताब आ गयी थी.

'ओम् भूः स्वाहा...इदं...न मम्!

राहुल ने देखा कि उनमें से एक के हाथ में ऋग्वेद था, जिसका पन्ना फाड़कर उसने उस आग में डाला...स्वाहा!

दूसरे ने जिस किताब के पन्ने आग में झोंके वह मार्क्स का 'दास कैपिटल' था. ओम् भूः स्वाहा...इदं...न मम्! ...एक के हाथ में गांधी वांग्मय था. ओम् भूः...स्वाहा...

फिर लोहिया, नरेंद्र देव, बौद्ध ग्रंथ, बाइबिल, कुरान शरीफ...सभी किताबों के पन्ने उस आग में झोंके जाने लगे.

...ओम् भूः

ओम् भूः स्वाहा!

स्वाहा! स्वाहा!

आग की लपटें कंपार्टमेंट की छत को छूने लगीं थीं. ऊपर के बर्थ में सोये हुए लोग उतर-उतरकर भाग रहे थे.

पीछे ए.के.-47 लिए हुए कमांडोज़ खड़े थे.

और तभी राहुल ने देखा कि वह मोटा-सा, तुंदियल, डरावना, कामुक, गुंडा, दलाल और अमीर लगता आदमी उठकर खड़ा हुआ...उसने अपने सेल्युलर फोन पर कोई नंबर पुश किया और बोलाः

'हेलो...हेलो! आयम निखलाणी हियर...! स्पीकिंग ऑन बिहाफ ऑफ दि आइ एम एफ! गेट मी टु दि प्राइम मिनिस्टर...ओ.के...! आस्क हिम टु कॉल मी बैक ऑन मोबाइल!'

उसने अपना सेल-फोन ऑफ किया फिर उसने नीचे पड़ा बड़ा-सा गंडासा उठाया और धीरे-धीरे राहुल की तरफ बढ़ा!

ओम! भूः स्वाहा...इदं न...मम्! स्वाहा!

राहुल को उसके बर्थ नंबर 42 पर चार गुंडों ने दबोच रखा था. उस मोटे आदमी ने गंडासा ऊपर उठाया...

राहुल स्तब्ध रह गया.

वह परशुराम था. बर्बरता और हिंसा से भरा...उसका गंडासा खून से सना था. इसी से उसने अपनी मां का सिर धड़ से अलग किया था. लेकिन उसके दस सिर थे. नहीं, वह रावण था...

लेकिन उसकी नाक के नीचे काली तितली बैठी हुई थी...माथे पर तिलक था...

मौत उस गंडासे के साथ बस एक पल के भीतर-भीतर राहुल के गले पर गिरने वाली थी.

वह पल करीब आता जा रहा था.

टिक...टिक्...टिक...टिक्...

उसके हृदय की जैविक घड़ी अभी भी चल रही थी, उसकी नसों के भीतर की लाल नदी में दो नन्हीं-नन्हीं सुनहली मछलियां तैर रही थीं...

नक्षत्रों की अपलक टक-टकी की तरह दो सजल आंखें...

और गंडासा उसके गले पर गिरा...

राहुल तड़प कर पूरी ताकत से चिल्लाया.

'हे राऽऽम!'

उसकी आंखें खुल गयीं. अंजली उसके सिर को हँसती हुई चूम रही थी.

'इस तरह सोया करते हो तुम!...मैंने पकड़ा न होता तो बर्थ के नीचे गिर जाते.' अंजली ने कहा, 'यू आर अ रियल पागल! है न?'

खिड़की से सुबह की धूप अंदर आ रही थी. सर्दियों की गुनगुनी होती धूप.

वाणी से प्रकाशित
उदयप्रकाश की कृतियाँ

तिरिछ
(कहानी संग्रह)

सुनो कारीगर
(कविता संग्रह)

ईश्वर की आँख
(विचार लेख)

रात में हारमोनियम
(कविता संग्रह)